वर्ष 39, अंक 144
(जुलाई-सितंबर 2015)

राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय,
भारत सरकार,
नई दिल्ली

जन–जन की भाषा है हिंदी

राजभाषा विभाग, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'हिंदी दिवस समारोह 2015' समारोह में माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी (बीच में) साथ है माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह, माननीय गृह राज्य मंत्री (आर) श्री किरेन रीजीजू, माननीय गृह राज्य मंत्री (एच) श्री हरिभाई पारथीभाई चौधरी तथा श्री गिरीश शंकर सचिव राजभाषा विभाग

'हिंदी दिवस समारोह 2015' में माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी अपने आशीर्वचन देते हुए।

भारत जय विजय करे, कनक-शस्य-कमल धरे

-निराला

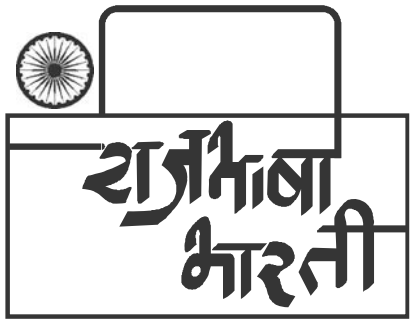

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 39

अंक : 144

जुलाई-सितंबर, 2015

⇨ **संरक्षक**
गिरीश शंकर भा॰प्र॰से॰
सचिव, राजभाषा विभाग

⇨ **परामर्शदाता**
पूनम जुनेजा
संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग

⇨ **संपादक**
डॉ॰ श्रीप्रकाश शुक्ल
संयुक्त निदेशक (नीति/पत्रिका)
दूरभाष-011-23438250

⇨ **उप संवादक**
डॉ॰ धनेश द्विवेदी
दूरभाष-011-2348137

⇨ **सहायक संपादक**
शांती कुमार स्याल

❑ **नि:शुल्क वितरण के लिए:** पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

❑ **अपना लेख एवं सुझाव भेजें:** संपादक, राजभाषा भारती, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, एन डी सी सी-II भवन, बी विंग, चौथा तल, नई दिल्ली-110001
ईमेल-patrik—ol@.nic.in

विषय-सूची

			पृष्ठ
⇨ **संपादकीय**			**(iii)**
⇨ **चिंतन**			
1. आखिर हिंदी ही क्यों	-	डॉ॰ विनोद बब्बर	1
2. पूर्वोत्तर में हिंदी	-	डॉ॰ राम चंद्र राय	3
3. हिंदी में आगत शब्द	-	डॉ॰ नरेश कुमार	5
4. तीव्र वैश्वीकरण में अनुवाद की भूमिका	-	राघवेन्द्र पाण्डेय	7
5. कार्यालयी हिंदी : एक परिचय	-	मनोज कुमार सिंह	10
⇨ **शोध लेख**			
6. हिंदी: विश्व में प्रथम एवं लोकप्रिय भाषा	-	डॉ॰ जयन्ती प्रसाद नौटियाल	12
⇨ **पुरानी यादें नए परिप्रेक्ष्य**			
7. शस्त्र और शास्त्र के धनी रहीम	-	डॉ॰ ओ॰ पी॰ मिश्र	22
⇨ **तकनीकी**			
8. तकनीकी समुन्नयन और हिंदी	-	केवल कृष्ण	26
9. आधुनिक बैंकिग एवं सूचना प्रौद्योगिकी	-	देवेन्द्र सिंह रावत	28
⇨ **कृषि**			
10. तेल ताड़ की खेती	-	डॉ॰ एस॰आर॰ यादव	32
⇨ **स्वास्थ्य**			
11. डेंगू बुखार - एक जानकारी	-	डॉ॰ संजीव गोयल	35
⇨ **विविध**			
12. डी एन ए फिंगर प्रिंटिंग	-	कैलाश नाथ गुप्ता	38

विषय–सूची

पृष्ठ

⇨ **राजभाषा संबंधी गतिविधियां**

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें 46

आकाशवाणी, राजकोट; मुख्य आयकर आयुक्त; शिलांग; केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची; केंद्रीय उत्पाद शुल्क प्रधान आयुक्त कार्यालय, मुबंई-II; भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, वाराणसी; दूरदर्शन केंन्द्र, दिल्ली; आकाशवाणी, बीकानेर; आकाशवाणी, जयपुर; आकाशवाणी, ईटानगर; आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केंन्द्र, गुवाहटी।

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें 49

सूरत; बैंगलूर (बैंक); रांची (बैंक); झज्जर; गाजियाबाद; रोहतक; सोनीपत; शिमला; चण्डीगढ़; अंबाला छावनी; बडोदरा; देवास; गुवाहाटी (उपक्रम)।

(ग) कार्यशाला 53

आकाशवाणी, दिल्ली; पश्चिम रेलवे, मुबंई; एन एम डी सी लि॰ हैदराबाद; एम सी एफ, हासन; केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची; महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओडिशा; मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, शिलांग; प्रमाणु ऊर्जा विभाग, मुबंई; भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण, जयपुर; आकाशवाणी, नागपुर; यूको बैंक, हावड़ा; मंडल रेल प्रबंधक, पुणे; राष्ट्रीय जन एहयोग एवं बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली; कार्पोरेशन बैंक मंगलूर; आकाशवाणी, चेन्नै; आकाशवाणी, पणजी; आकाशवाणी, बीकानेर; नराकास, मंगलूर; भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण, उदयपुर; आकाशवाणी, जलगांव।

(घ) हिंदी दिवस 59

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली; दूरदर्शन केन्द्र, नागपुर; राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य अहमदाबाद; केनरा बैंक आंचलिक कार्यालय, दिल्ली; केनरा बैंक, बेंगलूर; राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली; संसदीय कार्य मंत्रालय, नई दिल्ली; केंद्रीय न्यायालयिक विज्ञान प्रयोगशाला, चण्डीगढ़; कर्मचारी राज्य बीमा अस्पताल, नोएडा; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, देहरादून; केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, गुड़गांव; केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, मेरठ; मध्य रेल मुख्यालय, मुंबई; आकाशवाणी, सांगली; केनरा बैंक प्रधान कार्यालय, बेंगलूर; दूरदर्शन केंद्र, हैदराबाद; मुख्य महाप्रबंधक दूरसंचार, हुबली, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नागपुर; केनरा बैंक, नागपुर; पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल; केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, रांची; भारतीय खान ब्यूरो, रांची; क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र नगड़ी, रांची; केनरा बैंक प्रधान कार्यालय बेंगलूर; खादी और ग्रामोद्योग आयुक्त कार्यालय, हैदराबाद; बैंक ऑफ इंडिया, फिल्म प्रभाग; यूको बैंक, भारत संचार निगम लि॰ सेलम।

- **प्रतिनिधि बैठकें** 70

  केनरा बैंक, अंचल कार्यालय मेरठ; केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर

- **संगोष्ठी/सम्मेलन** 71

  केनरा बैंक अंचल कार्यालय, मेरठ; केनरा बैंक, दिल्ली; केनरा बैंक अंचल कार्यालय, बेंगलूर; केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर

- **प्रतियोगिताएं/पुरस्कार** 73

  नराकास (बैंक) बेंगलूर

- **प्रशिक्षण** 74

  केनरा बैंक बेंगलूर

- **पाठकों के पत्र** 75

संपादकीय

भारत वर्ष एक प्रजातांत्रिक देश है। प्रजातंत्र के लिए यह आवश्यक है कि देश का प्रशासनिक, व्यावसायिक, वैज्ञानिक और तकनीकी आदि कार्य देश की जनता की भाषा में हों। पिछले अनेक वर्षों से राजभाषा भारती इसी दिशा में प्रयासरत है। 'जन-जन की भाषा है हिंदी' यह बात तभी सार्थक होती है, जब हम ज्यादातर कार्य हिंदी में करने का संकल्प लेकर आगे बढ़े और अपने विभाग में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए न सिर्फ प्रेरित करें, बल्कि समय-समय पर उनका उत्साहवर्धन भी करें।

प्रस्तुत अंक में विभिन्न पहलुओं पर उपयोगी सामग्री देने का प्रयास किया गया है। 'आखिर हिंदी ही क्यों' सरीखे लेख राजभाषा की महत्ता को बढ़ाते हैं। वर्तमान समय में देश के पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी भाषा की क्या स्थिति है, डॉ॰ राम चन्द्र राय के लेख से स्पष्ट होता है। जहां 'हिंदी में आगत शब्द' तथा 'कार्यालयी हिंदी: एक परिचय' जैसे लेख राजभाषा हिंदी का ज्ञान बढ़ाने में सहायक होंगे, वहीं 'तीव्र वैश्वीकरण में अनुवाद की भूमिका' जैसे लेख विश्व मंच को समझने में सहयोगी होंगे। आधुनिक तकनीकी पर आधारित लेख 'तकनीकी समुन्नयन और हिंदी' पाठकों को तकनीकी जानकारी देता है। स्वास्थ्य संबंधी

लेख 'डेंगू बुखार–एक जानकारी', कृषि क्षेत्र में 'तेल ताड़ की खेती' आदि लेख ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी साबित होंगे। राजभाषा संबंधित गतिविधियां, कार्यशालाएं, बैठकें, संगोष्ठी/सम्मेलन और हिंदी दिवस आयोजन को भी पत्रिका में विस्तार से स्थान दिया गया है। गतांकों की भांति इस अंक में भी पाठकों की प्रतिक्रिया का स्वागत किया गया है।

राजभाषा विभाग केंद्रीय कार्यालयों में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु प्रतिबद्ध है, राजभाषा भारती का अंक 144 (जुलाई–सितंबर, 2015) आपके हाथों में है। प्रबुद्ध पाठकों की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

धन्यवाद,

संपादक

चिंतन

आखिर हिंदी ही क्यों?

— विनोद बब्बर*

आज का सबसे बड़ा प्रश्न है कि आखिर हम हिंदी को ही राजभाषा क्यों घाषित करें? क्या जरूरत है हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की? ऐसे तमाम प्रश्नों का उत्तर देने से पहले हमें एक नजर अपने इतिहास पर दौड़ानी होगी। हमारे यहां एक कहावत बहुत प्रचलित है-दो कोस पर बदले पानी और चार कोस पर बानी। क्या आप जानते हैं कि केरल में जन्में आदि शंकराचार्य, जी जब कश्मीर गए, देशभर का भ्रमण किया, चारों दिशाओं में मठों की स्थापना की तो उन्होंने किस भाषा में संवाद किया होगा? बंगाल में चैतन्य महाप्रभु जब ब्रज की धरती पर कृष्णा-कृष्णा गाते हुए झूमते थे तो क्या उनकी भाषा बंगला थी? अयोध्या के श्रीराम जब 14 वर्षों के वनवास पर रहे और रामेश्वरम् तक पहुंचे तो आखिर उनका इतने प्रदेशों के लोगों से किस भाषा में संवाद हुआ होगा? ब्रज में जन्में श्रीकृष्ण द्वारका में पहुंचे तो उन्होंने अपने उद्गार किस भाषा में व्यक्त किए होंगे? कल की बात छोड़ भी दे तो आज भी उत्तराखंड के देवधामों में पूजा के लिए दक्षिण ब्राहमण ही क्यों पसंद किए जाते हैं? उत्तर में वैष्णोदेवी, अमरनाथ, पश्चिम में अंबाजी, पूर्व में कामाख्या, दक्षिण में तिरूपति जैसे अनेकानेक तीर्थों में देश के विभिन्न भागों के लोग जाते हैं तो वे किस भाषा में संवाद करते हैं? निश्चित रूप से यह भाषा अंग्रेजी तो नहीं ही रही होगी।

हिंदी का व्याकरण सर्वाधिक वैज्ञनिक है और हिंदी की शब्द संख्या भी अंग्रेजी के मुकाबले कहीं ज्यादा है। फ्रेंच में 1 लाख, स्पैनिश में 2.25 लाख और रूसी में 1.25 लाख, अंग्रेजी में केवल 10 हजार शब्द है जबकि हिंदी की शब्द सम्पदा 2.5 लाख से भी अधिक है। हिंदी व्यापार, विज्ञापन, संगीत, सिनेमा, बाजार की भाषा है।

गुजरात में जन्में आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानंद ने देश में जनजागरण के अपने संकल्प को साकार करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश लिखा तो देव भाषा नहीं, देश भाषा में लिखा। आजादी की लड़ाई में हिंदी की भूमिका जबर्दस्त रही है। गांधी, सुभाष, टैगोर, तिलक, भगतसिंह, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, लाला लाजपत राय हिंदी भाषी नहीं थे लेकिन बात मातृभाषा की नहीं, मातृभूमि की थी। सभी ने एक स्वर में, हिंदी के माध्यम से सोए हुए देशवासियों को जगाया इसलिए तो इस राष्ट्र ने हिंदी को राजभाषा का सम्मान दिया।

भारत आज एक अजीब संक्रमण काल के दौर से गुजर रहा है। एक ओर हम विकास के नए आंकड़ों को तो छू रहे हैं लेकिन नैतिकता के स्तर पर पिछड़ते जा रहे हैं। हिंदी जो आज विश्व के 132 देशों में फैली हुई है और 3 करोड़ अप्रवासी जिसे बोलते हैं, फिजी, मॉरीशस, ग्याना, सूरीनाम, इंग्लैण्ड, नेपाल, थाईलैण्ड जैसे देशों में हिंदी का व्यापक प्रचार-प्रसार हो रहा है।

सारी दुनिया जानती है कि हिंदी का व्याकरण सर्वाधिक वैज्ञानिक है और हिंदी की शब्द संख्या भी अंग्रेजी के मुकाबले कहीं ज्यादा है। फ्रेंच में 1 लाख, स्पैनिश में 2.25 लाख और रूसी में 1.25 लाख, अंग्रेजी में केवल 10 हजार शब्द है जबकि हिंदी की शब्द सम्पदा 2.5 लाख से भी अधिक है। हिंदी व्यापार, विज्ञापन, संगीत, सिनेमा, बाजार की भाषा है। संपर्क, संबंध, संचार, व्यापार ही नहीं, प्यार की भाषा है। फिल्में और गाने विदेशों में भी लोकप्रिय हैं। लोकजीवन में हिंदी को प्रविष्ट कराने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने विज्ञापनों के लिए खुलकर हिंदी का प्रयोग कर रही हैं। अनेक विदेशी चैनलों ने विज्ञापन के लिए चुना है। टी॰ वी॰ चैनलों ने भी व्यावसायिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाया।

जहां तक कंप्यूटर की बात है। कुछ अंग्रेजी दा लोगों का मत था कि कंप्यूटर की भाषा हिंदी हो ही नहीं सकती। हमारे तकनीकी विशेषज्ञों ने अपनी मेहनत से हिंदी को कंप्यूटर की भाषा साबित कर दिखाया क्योंकि कंप्यूटर की भाषा 0 व 1 है डिजिटल है। फिर 0 तो हमने ही सारी दुनिया को दिया है। आज वेब, इन्टरनेट,

* निवास-ए-2/9ए, हस्तसाल रोड, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059, मो॰ 9868211911

ब्लॉग्स, सोशल नेटर्वकिंग पर हिंदी का बोलबाला है जबकि कंप्यूटर तो क्या बिजली भी सारे देश में अभी पहुंची ही नहीं है। अनेक कंप्यूटर प्रोग्राम एवं कंप्यूटर सॉफ्टवेयर पूर्णत: सक्षम हैं। कई लिपियां देवनागरी से बहुत अधिक मिलती-जुलती हैं, जैसे-बांग्ला, गुजराती, गुरुमुखी आदि। कंप्यूटर से भारतीय लिपियों का परस्पर परिवर्तन बहुत आसान हो गया है। हां, यह अंग्रेजी दा लोगों का षड़्यंत्र ही कहा जाएगा कि मंहगा सॉफ्टवेयर है जबकि अंग्रेजी का सामान सस्ता है। निश्चित रूप से यह स्थिति भी बदलेगी क्योंकि तकनीकी उपभोक्ता के लिए है, उपभोक्ता तकनीक के लिए नहीं।

हिंदी देश की एकता का मंत्र है। इसकी देवनागरी लिपि तो दुनिया की सर्वश्रेष्ठ लिपि मानी जाती है। विनोबा भावे, सर विलियय जोन्स, जान क्राइस्ट सहित दुनिया भर के विद्वान इसका समर्थन करते हैं। कंप्यूटर के पिता कहे जाने वाले बिल गेट्स का कथन है-जब बोलकर लिखने की तकनीक उन्नत हो जाएगी, हिंदी अपनी लिपि की श्रेष्ठता के कारण सर्वाधिक सफल होगी। तमिल भाषी राष्ट्रकवि सुब्रहमण्यम भारती ने 1906 पत्रिका 'इंडिया' के द्वारा हिंदी सीखने की अपील की। उन्होंने अपनी पत्रिका में कुछ पृष्ठ हिंदी के लिए आरक्षित किए। छत्रपति शिवाजी के दरबार में कवि भूषण थे जिन्होंने शिवाबावनी जैसे ग्रंथ की रचना की। हिंदी का प्रथम फॉन्ट महाराष्ट्र के गैर हिंदी भाषी पंचानन कर्मकार की मदद से चार्ल्स विलकन्स ने बनाया था।

भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने विज्ञापनों के लिए खुलकर हिंदी का प्रयोग कर रही हैं। अनेक विदेशी चैनलों ने विज्ञापन के लिए चुना है। टी॰ वी॰ चैनलों ने भी व्यावसायिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाया।

अंग्रेजों ने भारत में किसी अन्य भाषा को नहीं हिंदी को चुना। हिंदी की शक्ति का समझ और अनुभव कर चुके थे। वे अच्छी तरह समझ गए थे कि संबंध बनाने का माध्यम हिंदी ही हो सकती है। भारत पर गहरी राजनैतिक पकड़ और धर्म प्रचार के लिए ही सही उन्होंने हिंदी का सहारा लिया। जहां तक विदेशी धर्म का प्रश्न है आज भी इन धर्मों के अधिकांश लोग नहीं जानते कि उनकी प्रार्थना का सही अर्थ क्या है।

सत्य तो यह है कि आज हिंदी खूब फल-फूल रही है। खूब साहित्य सृजन, प्रकाशन हो रहा है। अंग्रेजी दा लोग आज तक हिंदी के किसी साहित्यकार को नोबेल पुरस्कार क्यों नहीं मिलने पर सवाल उठाते हैं तो उन्हें समझना चाहिए कि हिंदी को नोबल मिलने या न मिलने से उसकी स्थिति में परिवर्तन नहीं आता क्योंकि हमारा साहित्य स्वयं में नोबल है। पुरस्कार मिलने, न मिलने के पीछे वह मानसिकता जिम्मेवार है जिसने दो-दो बार नामांकन होने के बावजूद गांधी को भी नोबल नहीं लेने दिया। हां, यह बात अलग है कि बाद में उन्होंने गलती स्वीकार करते हुए खेद व्यक्त किया था। यह भी संभव है कि वे हिंदी साहित्य की उपेक्षा पर भी अपनी गलती स्वीकार करने के लिए बाध्य हो जाए।

पिछले दिनों हिंदी के एक जाने माने विद्वान ने ही देवनागरी की बजाय रोमन लिपि अपनाने की सलाह दी तो राष्ट्रपति जी के भाषा सलाहकार रहे, नागरी लिपि परिषद के सचिव डॉ॰ परमानंद पांचाल जी ने उन्हें करारा जवाब देते हुए कहा था कि जिस लिपि के पास हर ध्वनि का अलग चिन्ह नहीं, स्वयं बर्नाड शाँ ने जिसे अराजक लिपि घोषित करते हुए परिवर्तन की सलाह दी थी, उसकी भक्ति गलत है। सत्य तो यह है कि हिंदी मजबूरी की भाषा नहीं, मजबूती की भाषा है। क्षेत्रीय भाषाओं को हिंदी से लड़ाने का षड़यंत्र किया जा रहा है जबकि उन्हें खतरा हिंदी से नहीं अंग्रेजी से है। सभी क्षेत्रीय भाषाएं व हिंदी तो संस्कृत की पुत्रियां होने के नाते से सहोदर हैं।

इस संबंध में एक उदाहरण काफी होगा। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान फ्रान्स का कुछ भाग जर्मनी के अधीन था। एक बार जर्मन की महारानी उस क्षेत्र के एक स्कूल का दौरा करने गई। उन्होंने बच्चों से जर्मनी का राष्ट्रगान सुनाने को कहा। केवल एक बच्ची ऐसा कर सकी तो महारानी ने प्रसन्न होकर उससे कुछ मांगने को कहा तो उस बच्ची ने कहा-हमारी शिक्षा का माध्यम हमारी भाषा फ्रेंच बना दीजिए। यह सुनते ही महारानी का चेहरा तमतमा उठा। उसने कहा-तुमने हमें जबरदस्त शिकस्त दी जबकि नेपोलियन भी हमें चोट नहीं पहुंचा सका। क्या हमारा भाषा गौरव, राष्ट्र गौरव नहीं है? कब मुक्त होगे हम हीनता ग्रन्थि से? क्या हमें झकझोरने के लिए आज फिर किसी अन्ना, गांधी, विनोबा की जरूरत है? वंदमातरम्! जय मातृभाषा! जय देशभाषा! जय देवभाषा! ❑

\\192.168.3.1\E\3703HA-1

पूर्वोत्तर में हिंदी

— डॉ॰ रामचन्द्र राय*

हिंदी के प्रचार-प्रसार में साधु-संतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जिस प्रकार शंकरदेव ने विभिन्न प्रकार के धर्मावलम्बियों को अपने वैष्णव धर्म के माध्यम से एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया उसी प्रकार असम में हिंदी के प्रचार-प्रसार में शंकरदेव एवं उनके अनुयायियों का नाम सर्वप्रथम आता हैं। शंकरदेव ने द्वारका से लेकर बद्रीनाथ तथा रामेश्वरम तक की पदयात्रा की थी। इस पदयात्रा में उन्होंने उन अंचलों के साहित्य, संस्कृति, सभ्यता और जन-जीवन से अपना सम्पर्क किया था-जिसके फलस्वरूप भारत की भावनात्मक एकता को सुदृढ़ बनाने के हेतु एक नई भाषा को जन्म भी दिया था-जिसे उस समय के संतों की माध्यम भाषा भर कहा जा सकता है। यह भाषा केवल उन लोगों के लिए सुबोध या अपनी ही नहीं बन गई थी अपितु समग्र उत्तर भारत के लोग भी इसे आसानी से समझ पाते थे। शंकरदेव और माधवदेव के नाटकों और गीतों में ही साधारणतया प्रयुक्त ब्रजावलि नामक इस भाषा को आगे इतनी लोकप्रियता मिली कि उस काल के खुले रंगमंच की यही एकमात्र नाट्य भाषा बनी। मैथिली-ब्रज-भोजपुरी असमिया मिश्रित ब्रजालि नामक इस कृत्रिम भाषा के नाटक रचने की यह परम्परा अंग्रेजों के यहां आगमन के बाद तक यानी सन् 1826 ई॰ तक बनी रही। यही नहीं इसका मंचन भी असम के पूर्वांचल में उसी निष्ठा के साथ आज भी हो रहा है। श्री शंकरदेव के इस अवदान को असमिया लेखक श्री देवकांत बरूआ ने कहा है-शंकरदेव ने असम को भारत में विलीन कराया और भारत को असम के समीप पहुंचाया। इस प्रकार श्री शंकरदेव के समय से ही असमिया और हिंदी के विनिमय का एक और अवसर नाथ-पंथियों की साहित्य साधना के माध्यम से आया था। यह सर्वमान्य है कि नाथ या गोरखपंथी संतों का संबंध असम-कामरूप से ही रहा है। डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा भी है कि गोरखनाथ के पदों को तो असमिया भाषा में रचित पद ही कहा जाना चाहिए। डॉ दशरथ ओझा ने अपने हिंदी नाट्य साहित्य का उद्भव और विकास में ब्रजावली भाषा में असम के संतों द्वारा रचित नाटकों को हिंदी का आदिनाटक माना है।

भारत की पूर्वी सीमांचल राज्य में आज से लगभग छह सौ वर्ष पहले ही साधारण लोगों को महापुरूष श्री शंकरदेव ने हिंदी शब्द या भाषा के साथ परिचय कराया था। उनके बरगीत तथा अंकीया नाटक इसके प्रमाण हैं।

सन् 1918 ई॰ में हिंदी साहित्य सम्मेलन का इंदौर में अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन के लिए महात्मा गांधी को अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया गया था। सम्मेलन में पारित प्रस्ताव के आधार पर भारत में स्वदेशी भावना और भावनात्मक एकता को पुन: संबंधित करने के लिए हिंदी भाषी प्रदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य आरम्भ हुआ। महात्मा गांधी के नेतृत्व में दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार के महान उद्देश्य को लेकर एक बड़े आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। पश्चिम और दक्षिण भारत की यह हिंदी-गंगा सिंचित करने के बाद पूरब की ओर उन्मुख हुई। असम में शिवसागर जिले के एक नि:स्वार्थ देशप्रेमी ने सन् 1918 ई॰ में पॉलिटेकनीक इन्स्टीयुशन नामक एक विद्यालय की स्थापना की इस विद्यालय में देश-प्रेम मूलक शिक्षण दिया जाने लगा। इस विद्यालय के संस्थापक भूवनचन्द्र गर्ग थे। उन्होंने इस विद्यालय में हिंदी को भी एक विषय के रूप में रख दिया।

* सचिव, शान्ति निकेतन, हिंदी प्रचार सभा, रूपान्तर परिसर ए रतनपल्ला नार्थ, शान्ति निकेतन -731235, मो॰ 9434233533

\\192.168.3.1\E\3703HA-1

इस प्रकार असम में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन का कार्य सन् 1926 ई॰ से आरम्भ हुआ। आरम्भ में हिंदी शिक्षक के अभाव में हिंदी के पठन-पाठन में प्रगति नहीं हुई। फलस्वरूप सन् 1928 ई॰ में बनारस से एक योग्य हिंदी शिक्षक नियुक्त किया गया। साथ-साथ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा संचालित परीक्षाएं भी आयोजित की जाने लगी। उच्च स्तर के छात्रों के लिए एक हिंदी पुस्तकालय भी खोला गया जिनमें हिंदी के अच्छे ग्रंथ मंगाकर संरक्षित किए गए थे।

भारत के पूर्वांचल में महात्मा गांधी के हिंदी प्रचार योजना को अग्रसित करने के लिए उत्तर प्रदेश के जनप्रिय देशसेवक कर्मठ पुरूष बाबा राघवदासजी को दायित्व दिया गया। उन्होंने सन् 1934 से लेकर 1937 तक विभिन्न व्यक्तियों के सहयोग से हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य किया। वैसे भारत की पूर्वी सीमांचल राज्य में आज से लगभग छह सौ वर्ष पहले ही साधारण लोगों को महापुरूष श्री शंकरदेव ने हिंदी शब्द या भाषा के साथ परिचय कराया था। उनके बरगीत तथा अंकीया नाटक इसके प्रमाण हैं। प्राचीन असम में शैव धर्म का ही प्रधान्य रहा है। कामरूपाधिपति भगदत्त भी शैवधर्म के मानने वाले थे। वाणभट्ट के हर्षचरित से पता चलता है कि सातवीं शती के महाराज भास्कर वर्मा शैव थे। तथापि बौद्ध धर्म के प्रति भी यथोचित सम्मान दिखाते थे। भास्कर वर्मा के बाद, बारहवीं शती के ब्रह्मपाल तक यहां शैव पूजा का प्रचलन था। इसका प्रमाण यह है कि नवग्रह (गुवाहाटी) आदि स्थानों से असंख्य शिव-लिंग प्राप्त हुए हैं। वैसे विष्णु-पूजा के प्रचलन का प्रमाण भी मिलता है। आम धारणा लोगों में यह थी कि बौद्ध-धर्म का प्रचलन नहीं हुआ था। किंतु हाल के अन्वेषण से यह ज्ञात होता है कि गुवाहाटी के प्रसिद्ध कामाख्या तथा हयग्रीव माधव-मंदिर मूल रूप से बौद्ध मंदिर ही था। इन मंदिरों में बौद्ध-धर्म की चर्चा होती थी। ऐसा भी विश्वास असम, भूटान तथा तिब्बत के लोगों में है कि बुद्धदेव का महापरिनिर्वाण भी असम के हातों नामक स्थान में अवस्थित हयग्रीव माधव-मंदिर के आसपास ही हुआ था। कुशीनगर कुशावै नाम से आज भी प्रसिद्ध है। आज भी शीतकाल में हजारों लोग भूटान और तिब्बत से महामुणि की पूजा-अर्चना हेतु हाजौ हयग्रीव-मंदिर में आते हैं। इस राज्य में दसवीं शती के बाद शाक्त धर्म का प्रवेश हुआ और बहुत कम समय के भीतर समग्र पूर्वी भारत को इसने ग्रसित कर लिया। पूर्वी असम आज के अरूणाचल के ताग्रेश्वरी मंदिर तथा पश्चिमी असम के कामाख्या मंदिर में नरबलि तक का प्रचलन होने लगा था।

शंकरदेव एक क्रांतिकारी पुरूष थे इन्होंने अपने नव वैष्णव धर्म के द्वारा शोषित और पीड़ित लोगों में नई प्रेरणा भर दी। इन्होंने असमिया समाज को न केवल धार्मिक दृष्टि से विकसित किया बल्कि भाषा साहित्य-संस्कृति आदि दृष्टियों से भी विकसित किया।

यह भी विश्वास किया जाता है कि इसके साथ-साथ तंत्र-मंत्र तथा वामाचारी धर्म मत का प्रचलन भी बढ़ता गया। देश में अनेक प्रकार के भ्रष्टाचार भी बढ़ते गए। यहां तक कि दिग्विजयी शंकराचार्य को भी इस वामाचारी तंत्र का शिकार बनना पड़ा था और उन्हें एक महीने तक मंत्र के द्वारा अचेत रखा गया था। धर्म के नाम पर किए अत्याचारों के विरोध में देश में आवाज उठी। इसका स्वर पहले पहल हरिहर विप्र, हेम सरस्वती तथा माधव कंदली की रचनाओं में सबसे पहले सुनाई पड़ी। महापुरूष शंकरदेव के आविर्भाव से वैष्णव मत को बल मिला। शंकरदेव एक क्रांतिकारी पुरूष थे इन्होंने अपने नव वैष्णव धर्म के द्वारा शोषित और पीड़ित लोगों में नई प्रेरणा भर दी। इन्होंने असमिया समाज को न केवल धार्मिक दृष्टि से विकसित किया बल्कि भाषा साहित्य-संस्कृति आदि दृष्टियों से भी विकसित किया। इस किरातीय प्रदेश को विभिन्न जड़ोपासक लोगों को वैष्णव धर्म के माध्यम से एक सूत्र में बांधना उनकी बड़ी देन है।

इस प्रकार हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य असम में सन् 1926 ई॰ से ही आरम्भ हो गया था। इसके बाद सन् 1938 ई॰ में असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना हुई। हिंदी-असमिया के आदान-प्रदान के क्षेत्र में असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का अवदान भी सराहनीय है।

❑

\\192.168.3.1\E\3703HA-1

हिंदी में आगत शब्द

— डॉ॰ नरेश कुमार*

हिंदी शब्द–समूह के स्वरूप का यदि हम अध्ययन करें तो उसमें अनेक भाषाओं के शब्दों का समावेश पाएँगे। किसी काल-विशेष में उसमें जहाँ तत्सम शब्दों का प्रयोग बढ़ा तो दूसरे काल में राजनीतिक कारणों के फलस्वरूप अंग्रेजी, अरबी, फ़ारसी, पुर्तगाली, तुर्की आदि के शब्दों का समावेश हुआ। हिंदी में जहाँ संस्कृत से अर्चना, अन्न, उपासना, कपि, कपोत, कृमि, कर्म, कला, कुल, कृशानु, कल्याण, क्षत्रिय, क्षुधा, क्षेम, ग्रीष्म, नक्षत्र, जल, नवनीत, नीर, मृग, मयूर, हठात्, भवदीय, भाव, पूर्णतया, अपेक्षा, यदा–कदा, पुनः नि:श्वास आदि शब्द सीधे ग्रहण किए हैं–पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के माध्यम से नहीं। संस्कृत के कुछ वाक्यांश येन-केन-प्रकारेण, मनसा वाचा कर्मणा आदि ज्यों के त्यों हिंदी में प्रयोग होने लगे हैं। दूसरी ओर संस्कृत के अनेक शब्द पालि, प्राकृत और अपभ्रंश की सीढ़ियाँ पार करते हुए अपना रूप बदलकर हिंदी में आत्मसात हो गए। उदाहरणार्थ, 'आँसू' शब्द के विकास-क्रम को जानने हेतु सं॰ अश्रु पालि अस्सु प्राकृत, अप्रभ्रंश अंसु आदि पूर्ववर्ती शब्दों का अध्ययन करना होगा। प्रादेशिक भाषाओं, यथा-गुजराती आंसु, नेपाली आँसु, पंजाबी अंझू, मराठी अँसू आदि में इस शब्द की परम्परा साम्य की परिचायक है। इस परम्परा के अतिरिक्त पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषा के भी अनेक शब्द घिसकर हिंदी में समाविष्ट हुए। यह उल्लेखनीय है कि संस्कृत और पालि का समानान्तर विकास गौतमबुद्ध के काल में चलता रहा।

सांस्कृतिक परिवर्तनों का अभाव शब्दावली के आगमन के साथ जुड़ा रहता है। हिंदी भाषा में भी सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारणों के फलस्वरूप शब्दावली का विकास हुआ है।

संस्कृत भाषा और द्राविड़ भाषाओं के बीच शब्दों का आदान-प्रदान होता रहा। खण्ड, आडम्बर, तन्दुल, फल, कटि, अटवी, अरविन्द, कवच, तट, मृणाल आदि शब्द द्राविड भाषाओं में आ मिले हैं।

सन् 1200 ई॰ के पश्चात् लगभग 600 वर्ष तक तुर्क, अफगान और मुगलों का अधिपत्य हिंदी भाषी जनता पर बना रहा। फ़ारसी के राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने और अरबी धार्मिक ग्रन्थों की भाषा होने के कारण फ़ारसी के उस्तरा, अफलातुन (फा॰ अ॰ फखातून), लगाम, फरिश्ता (फा॰ फिरिश्त:), ज़बान, कलम आदि शब्द हिंदी में घुल-मिल गए हिंदी ने फारसी के उपसर्गों, यथा-बेलाग, बेसमझ; प्रत्ययों, यथा-चायदान, समझदार, पतंगबाज, दौलतखाना आदि को भी अपनाया। 'बरफ' शब्द तो फारसी वरफ से व्युत्पन्न है। अरबी के इज्ज़त, इश्क, ईमान, एहसान, कमीज, (अरबी कमीस), कागज़, कानूनन, कातिल, दलाल, तबीअत, मुहब्बत, तलाक, रब्ब, मुलाकात, मरीज, मालिक, शैतान, नमाज, वक्त (अरबी वक्त), सुबह, हुक्म आदि ने हिंदी-शब्दावली को समृद्ध किया। अरबी 'करीस' का अवधी खिरसा (दूध का छेना) से संबंध व्युत्पत्तिमूलक दृष्टि से जोड़ा जा सकता है। पहली भाषा की शब्दावली, यथा-बियाबान, पुल, सिपाही, फटकार, पसन्द आदि से भी हिंदी प्रभावित हुई।

16वीं, 17वीं शताब्दी में पुर्तगाली व्यापारियों के भारत आगमन के फलस्वरूप अलमारी (पुर्त॰ अलमारियो), कमरा,

* जे-235, पटेलनगर प्रथम, गाजियाबाद

\\192.168.3.1\E\3703HA-1

तंबाकू या तमाकू (पुतः), परात (पुर्त॰प्राट), पादरी (पुर्त॰ पैड्रे), कार्तूस (पुर्त॰ कारटूस), संतरा (पुर्त॰ संगतरा) हिंदी में प्रचलित हुए। यद्यपि बल्गारियन भाषा में 'माएस्तोर' शब्द मिस्त्री के लिए प्रयुक्त है, किन्तु पुर्तगाली उमेजतम ही हिंदी में गृहीत है।

पश्तो भाषा के झागल, अट्टी अटेरन, उजबक, टकटकी, धींग, ढूढी (तिरक रीढ़ और कूल्हे के बीच का जोड़), दचका, ढांढा (छोटा कुआँ), गवांडी, डील आदि शब्दों का भी हिंदी में प्रयोग होने लगा। तुर्की के शब्द फारसी के माध्यम से हिंदी में आए। काबू, कैंची, जाजिम (तु॰ जाजम), तमगा (तु॰ तम॰ गह्), तलाश, तोप आदि तुर्की शब्द मुसलमान बादशाहों के शासनकाल में हिंदी में प्रयुक्त हुए। अफीम (यूनानी ओपियम, अरबी अफ्यून, फारसी अफयून) शब्द का इतिहास भी इसी प्रकार का है। इन विदेशी शब्दों को अपनाने पर हिंदी समृद्ध हुई है।

आज तो हिंदी का पारिभाषिक शब्दावली में तत्सम शब्दों का समावेश हुआ है और छायावादी प्रवृत्तियों के फलस्वरूप तत्सम शब्दावली का प्रयोग हिंदी में बढ़ा है, किन्तु हिंदी में सरल शब्दावली का प्रयोग भी आज के युग की माँग रही है।

ब्रिटिश शासनकाल में अंग्रेजी भाषा का व्यापक प्रचार एवं प्रसार हुआ। फलस्वरूप इंचार्ज, एलबम, कप्तान (अंग्रेजी कैप्टेन), कनस्तर (अं॰), कमेटी, साइकल, स्टेशन, बैंच, रेल, पिस्तौल (अं॰ पिस्टल), पेपर, पेन, रिपोर्ट, प्रोग्राम, इंजिन मोटर आदि शब्दों का लिप्यान्तरण हिंदी में हुआ। इसके अतिरिक्त इटेलियन, लेटिन आदि भाषाओं के शब्द अंग्रेजी के माध्यम से हिंदी में आए। फ्रेंच भाषा के कतिपय शब्द फ्रांसीसियों के सम्पर्क से और कुछ अंग्रेजी के माध्यम से हिंदी में प्रयुक्त हुए। सिकंदर के भारत में आगमन के फलस्वरूप संस्कृत भाषा में ग्रीक भाषा के शब्दों का समावेश हुआ और बाद में ब्रिटिश शासन-काल में ग्रीक भाषा के शब्द अंग्रेजी के माध्यम से हिंदी में प्रयुक्त हुए।

तन्त्रयोतर काल में सोवियत संघ से हमारे मैत्री संबंधों में प्रगाढ़ता आई है। परिणामस्वरूप 'स्पूतनिक', 'मिग' जैसे शब्दों का हिंदी में आगमन हुआ। हिंदी भाषा निरन्तर बहते हुए जल के समान है। विश्व के अनेक देशों से हमारे राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंधों में वृद्धि हो रही है। फलतः भविष्य में अनेक भाषाओं के शब्दों का आगमन सम्भव है। रूसी भाषा के आगोन (अग्नि), पीत् (पीना), दात् (देना), सूखा (हिंदी सूखा), द्वा (सं॰द्वि), प्याच (हिंदी पाँच), त्रि (सं॰त्रि॰), पापा (पिता), मामा, मात्व् (माता), ब्रात (भाई), ज्याज्या, (चाचा), च्योच्या (चाची) साक्खर (शक्कर), मास्लो (मक्खन) आदि शब्दों के साथ हिंदी का गठजोड़ बना हुआ है। परस्पर साम्य की दृष्टि से रूसी के उपर्युक्त शब्द द्रष्टव्य हैं। बल्गारियन भाषा के शब्दों और संस्कृत के तत्सम शब्दों में परस्पर साम्य की दृष्टि से मैद (मधु), व्यातर (वायु), नैबे (नभ), स्नखा (स्नुषाधू), नोश्त (निशि), पत (पथ), संदि (सन्धि) उल्लेखनीय हैं, किंतु ये शब्द बल्गारियन भाषा से हिंदी में आए हों, यह बात ठीक नहीं है। निश्चय ही बल्गारियन भाषा के कक्कट (सं॰ कुक्कुट), चक्रक (चक्र चरखा), स्तो (सं॰ शत् त्र सौ), आदि शब्दों का संबंध तत्सम शब्दों से जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार चैक भाषा के मात्का (माँ), ब्रात्र (भाई), त्री (तीन), ने (नहीं), देसेत (दस) से हिंदी के साथ साम्य बना हुआ है, किंतु ये शब्द चैक भाषा से हिदी में आए हों, ऐसा नहीं कहा जा सकता। वस्तुतः सांस्कृतिक परिवर्तनों का अभाव शब्दावली के आगमन के साथ जुड़ा रहता है। हिंदी भाषा में भी सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारणों के फलस्वरूप शब्दावली का विकास हुआ है। आज तो हिंदी का पारिभाषिक शब्दावली में तत्सम शब्दों का समावेश हुआ है और छायावादी प्रवृत्तियों के फलस्वरूप तत्सम शब्दावली का प्रयोग हिंदी में बढ़ा है, किंतु हिंदी में सरल शब्दावली का प्रयोग भी आज के युग की माँग रही है। वस्तुतः हिंदी में सरल, प्रचलित और व्यवहारिक शब्दावली का प्रयोग वर्तमान युग की मांग है। ❑

\\192.168.3.1\E\3703HA-1

तीव्र वैश्वीकरण में अनुवाद की भूमिका

— राघवेन्द्र पाण्डेय*

सिद्धांतत: वर्तमान युग अत्यंत तीव्र गति से एकमेक होता जा रहा है। धरती के किसी भी कोने में खड़ा मनुष्य आज इसके दोनों ध्रुवों तक एक साथ अपनी पहुँच बनाने में सक्षम तथा ब्रह्मांड के गूढ़तम रहस्यों को उजागर करने हेतु प्रयत्नशील है। इस महत् प्रयास के फलस्वरूप प्राणिजगत के विभिन्न क्रियाकलाप दस्तावेज़ों में दर्ज हो रहे हैं और विश्व की अनेक ज्ञात-अज्ञात सभ्यताएँ परस्पर समामेलित हो रही हैं। सौ साल पहले तक सौ कोस की देरी तय करने में सौ दिन से भी अधिक समय व्यतीत करने वाला मनुष्य आज सेकेंड के किसी हिस्से में उससे भी अधिक दूर तक पहुँचने में समर्थ हो चुका है। तकनीक के इस अति विकसित समय में जबकि हम सशरीर तो कहीं भी आने जाने में समर्थ हैं; विभिन्न भाषायी एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों की बेहतर समझ एवं उनमें आपसी तालमेल वर्तमान विश्व की सर्वाधिक महत्वपूर्ण चुनौती जिसे अनुवाद के माध्यम से ही प्रतिपूरित किया जा सकता है।

उद्योग, प्रबंधन, राजनीति व अर्थशास्त्र आदि ऐसे महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिससे विश्व समुदाय सर्वाधिक प्रभावित हुआ है। दुनिया के सभी देश एक दूसरे के विषय में जानने-समझने और परस्पर सहयोग के प्रति प्रथमत: उत्सुक व तत्पर ही इन्हीं कारणों से हुए और कहना गलत न होगा कि इन सभी क्षेत्रों के कार्य संपादन में अनुवाद ने उल्लेखनीय भूमिका निभायी है।

वैश्वीकरण को सहज एवं सार्थक स्वरूप देने में अनुवाद की विशिष्ट भूमिका है। कदाचित् यह कहा जाए कि अनुवाद को अछूत रखकर वैश्वीकरण हो ही नहीं सकता तो भी अतिश्योक्ति नहीं होगा। समझना कठिन नहीं है कि 'ग्लोबल विलेज़' अर्थात् 'संपूर्ण विश्व एक गाँव' की अवधारणा विभिन्न भाषा-भाषी समाज में एक दूसरे की सभ्यता-संस्कृति एवं उसमें अंतर्निहित मूल्यों की परिपक्व समझ व समादर का भाव रखे बिना कतई सफल नहीं हो सकती, और अभिव्यक्ति के संप्रेषण द्वारा सम्मति के संयोग में अनुवाद का महत्व हमारी मान्यता से कहीं अधिक बढ़कर है। आधुनिक समय में ज्ञान के प्रसार के साथ सामूहिक चेतना और सामुदायिक सहभागिता की भावना प्रबल हुई है तथा एक समग्र विश्व दृष्टि का निर्माण हुआ है। उद्योग, प्रबंधन, राजनीति व अर्थशास्त्र आदि ऐसे महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिससे विश्व समुदाय सर्वाधिक प्रभावित हुआ है। दुनिया के सभी देश एक दूसरे के विषय में जानने-समझने और परस्पर सहयोग के प्रति प्रथमत: उत्सुक व तत्पर ही इन्हीं कारणों से हुए और कहना गलत न होगा कि इन सभी क्षेत्रों के कार्य संपादन में अनुवाद ने उल्लेखनीय भूमिका निभायी है।

उत्कृष्ट शैक्षिक गुणवर्ता

शिक्षा मानव के समग्र विकास का आधार है। इसने मनुष्य को सीमाओं के बंधन से मुक्त करके उसे कालातीत बनाने में महती भूमिका अदा की है। अनुवाद शिक्षा और गवेषणा के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी रहा है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दुनिया के सभी देशों के शिक्षण संस्थान अनुवाद के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान के

*केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, 8वाँ तल, पर्यावरण भवन, सी॰जी॰ओ॰ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003, ई मेल **praghwendra@gmail.com.**, मो॰ **9868465476**

\\192.168.3.1\E\3703HA-1

नवीनतम अनुसंधानों से परिचित व प्रेरित होते हैं। मानव कल्याण हेतु विश्व भर में होने वाले शोध व अनुसंधान के निष्कर्ष अनुदित होकर ही संपूर्ण सजग समाज तक संप्रेषित होते हैं।

ज्ञानानुशीलन

मनुष्य अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण अपने आस-पास के वातावरण को प्रत्यक्षत: प्रभावित करता है। ज्ञान की खोज में आगे बढ़ते उसके कदम न कभी थकते हैं, न रुकते हैं और नवोन्मेषी ज्ञान-विज्ञान की खोज हेतु वह अपनी संपूर्ण मेधा का उपयोग करता है। विश्व में कहीं भी प्रस्फुटित होती ज्ञान-विज्ञान की नई धारणाएँ वहाँ की स्थानीय भाषा में ही आकार लेती हैं और इनके प्रसार का पूरा श्रेय अनुवाद को जाता है। स्थलीय सीमाओं को कम करना और ज्ञान एवं सूचनाओं का धूम्र प्रसार वैश्वीकरण की आधारभूत विशेषताएँ हैं। एक दूसरे के ज्ञान के परिचित होने की इस प्रक्रिया में भाषायी भिन्नता जो चुनौती उत्पन्न करती है उसे अनुवाद के द्वारा ही सफलतापूर्वक नियंत्रित किया जा सका है।

अनुवाद ही वह श्रेष्ठ अनुसृजन कार्य है जो हमें विश्व की अक्षय साहित्यिक-सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान कराता है और प्रतिपल परिवर्तनमयी प्रकृति की नवीन अभिव्यंजनाओं को प्रकट करता है।

विपुल विश्व साहित्य

मानव सभ्यता के विकास की राह में विश्व भर में जीवन के विविध पक्षों के संदर्भ में रचित प्रचुर साहित्य हमारे वर्तमान एवं भविष्य को सजाने-सवाँरने हेतु अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है, किंतु भाषायी भिन्नता के कारण कई बार हम इस विशद साहित्य का समुचित लाभ उठा पाने से वंचित रह जाते हैं इस कठिनाई को अनुवाद ने दूर किया है। अनुवाद के माध्यम से ही हम दुनिया की कई प्राचीन चिकित्सा पद्धतियों यथा यूनानी, होमियो, आयुर्वेद इत्यादि से लाभान्वित हो पा रहे हैं। अनुवाद ही वह श्रेष्ठ अनुसृजन कार्य है जो हमें विश्व की अक्षय साहित्यिक-सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान कराता है और प्रतिपल परिवर्तनमयी प्रकृति की नवीन अभिव्यंजनाओं को प्रकट करता है। सृजनात्मक साहित्य ने मनुष्य को सदैव सुपथ पर चलने की प्रेरणा दी है। जीवन में व्याप्त अंधेरे व नैराश्य की भटकन में साहित्य हमेशा ही प्रकाशपुंज बनकर उभरता है। विश्व में भी निरंतर लिखे जा रहे साहित्य में संबंधित समाज की संवेदनाओं और विशेषताओं का चित्र अंतर्राष्ट्रीय पटल पर प्रस्तुत होता है। हम जानते हैं कि हर देश व समाज की अपनी भाषागत सीमाएँ होती हैं और इसलिए अनुवाद ही वह माध्यम है जिससे हम किसी अबूझ भाषा में सृजित साहित्य से परिचित हो पाते हैं, अर्थात् अनुवाद भाषा के स्तर पर अज्ञात साहित्य संपदा से जुड़ने में सेतु का कार्य करता है और यह वैश्वीकरण की प्रक्रिया को संपुष्ट करने की नितांत आवश्यक शर्त है।

सूचना क्रांति

प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे नवीन अनुसंधान एवं आविष्कारों के साथ नई सहस्राब्दी के आरंभ में विश्व की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक दशाओं में तीव्रतर परिवर्तन हुए हैं। संचार क्रांति के इस युग में आज दुनियाँ के सभी देश एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में हैं। तकनीकी रूप से उन्नत होते समाज में जीवन की विसंगतियों को सीमित करने हेतु एक-दूसरे की कला संपदा को आत्मसात् करने और साथ ही साथ कुछ नया प्रयोग करने की युक्ति अपनाई जा रही है। अनुवाद इन सबके लिए न सिर्फ नई ज़मीन तैयार करता है अपितु उसे सिंचित-समादृत भी करता है। भाषाई विभेद को दूर करने का एकमात्र साधन अनुवाद ही है। यह बहुभाषी समाज में सभी की ओर से सबके लिए भावों और विचारों का सम्यक् संप्रेषण सुनिश्चित करता है। अनुवाद, इस प्रकार संचार क्रांति का केंद्र है।

अनुवाद के क्षेत्र में तकनीकी का प्रयोग अनुवाद कार्य एवं उसके प्रसार दोनों ही उद्देश्यों के लिए अत्यंत फलदायी सिद्ध हुआ है। आज अनेक अनुवादक संचार माध्यमों का प्रभावी उपयोग करते हुए विश्व के कोने-कोने में गुणवत्तापूर्ण अनुवाद शीघ्रतापूर्वक प्रेषित कर पा रहे हैं और इससे सहज व सकारात्मक वैश्वीकरण की योजना बलवती हो रही है। दूरसंचार

\\192.168.3.1\E\3703HA-1

प्रणाली और इंटरनेट, ई-मेल जैसी अत्याधुनिक तकनीकों ने विश्व को बाज़ारवाद के रास्ते एक दूसरे के साथ संबंध स्थापित करने की राह पर अग्रसर किया है। आज किसी भी कार्यक्रम का पूरी दुनिया में एक साथ सीधा प्रसारण करने में तकनीक ने जो मिसाल कायम की है, उसकी भाषिक संप्रेषणीयता को सहज बनाने में अनुवाद ने सार्थक साथ निभाया है। मसलन आज शेक्सपीयर के किसी नाटक अथवा रामायण-महाभारत के मंचन की मूल भाषा में रिकॉर्डिंग को अन्य भाषा-भाषी देशों में भी उस देश की भाषा में डबिंग या स्क्रीन पर अनूदित संवाद के साथ सफलतापूर्वक प्रसारित किया जाता है।

हर देश व समाज की अपनी भाषागत सीमाएँ होती हैं और इसलिए अनुवाद ही वह माध्यम है जिससे हम किसी अबूझ भाषा में सृजित साहित्य से परिचित हो पाते हैं, अर्थात् अनुवाद भाषा के स्तर पर अज्ञात साहित्य संपदा से जुड़ने में सेतु का कार्य करता है और यह वैश्वीकरण की प्रक्रिया को संपुष्ट करने की नितांत आवश्यक शर्त है।

अंतर्राष्ट्रीयता की भावना

औद्योगिक क्रांति और संचार के साधनों का विकास होने से जब अलग अलग विचार, भाव और भाषा वाले समाज के मध्य संवाद शुरू हुआ, तब दुनिया के कोने-कोने में बसे लोगों ने यह अनुभव किया कि मानव मात्र के सुख-दुख, हर्ष-विषाद आदि का संवेदी अनुभव एक समान होता है। इस अनुभव का ज्ञान होने के पश्चात् मनुष्य ने परस्पर सामाजिक-आर्थिक संबंध स्थापित करना शुरू कर दिया और इस प्रकार विभिन्न ज्ञानानुशासनों के मध्य संप्रेषण को सुचारु बनाने में अनुवाद की सहायता ली जाने लगी। ''व्यावसायिक और पेशेवर संबंधों और इसके परे नितांत मानवीय रिश्ते दोनों को विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के बीच संप्रेषित करने का अनुवाद ने भगीरथ कार्य किया। अनुवाद विश्व के विभिन्न देशों के बीच संवाद-विवाद की स्थितियों का माध्यम भी बना। अनुवाद के सेतु पर ही चलकर मूल भाषा अपनी साहित्यिक तथा तकनीकी उपलब्धियों को लक्ष्य भाषा तक पहुँचाती है''। पर इसके साथ आदमी की समस्याएँ भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ही इनका समाधान ढूँढ़े जाने के क्रम में अनुवाद की आवश्यकता अत्यधिक बढ़ी है।

अनुवाद का दायित्वबोध

अनुवादक वैश्वीकरण की प्रक्रिया में विभिन्न संस्कृतियों के शुभ समागम का मुख संवाहक है। वह अपनी कार्य कुशलता के द्वारा किसी विचार विशेष में अंतर्निहित भाव को उसके सटीक अर्थ के साथ उजागर करते हुए उसे अगम समाज के सम्मुख प्रस्तुत करता है। यह कार्य जितना अधिक दुर है, कदाचित् उससे भी अधिक दायित्वपूर्ण है। अत: एक अनुवादक को स्रोत सामग्री की मूल आत्मा के साथ तादात्म्य स्थापित करने तथा लक्ष्य भाषा के साथ सहजात प्रवृत्ति विकसित करने की कला में माहिर होना चाहिए। चूँकि अनुवाद का सैद्धांतिक आधार परिवर्तनगामी नहीं है, अत: उसे अपनी रचनाशीलता एवं भाषा-शैली में नियमित परिष्कार हेतु तत्पर होना चाहिए। वर्तमान विश्व एवं उसका भावी समाज 'वसुधैव कुटुंबकम्' की मूल भावना को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। आने वाली शताब्दी में विभिन्न संस्कृतियों के साहचर्य एवं संप्रेषण के नये-नये माध्यमों का विकास होने से वैश्वीकरण के नये विधान प्रतिफलित होंगे और इस विहंगम व्यवस्था में भाषिक प्रतिमानों को अनुवाद के माध्यम से ही आत्मसात् किया जाना संभव हो पाएगा।

संदर्भ सूची

- अनुवाद की सामाजिक भूमिका: डॉ रीतारानी पालीवाल
- हिंदी: आकांक्षा और यथार्थ: डॉ श्रीनारायण समीर
- अनुवाद विज्ञान: संपादक डॉ बालेंदु शेखर तिवारी
- अनुवाद और उत्तर - आधुनिक अवधारणाएं: डॉ श्रीनारायण समीर
- प्रयोजनमूलक हिंदी: डॉ विनोद गोदरे ❑

\\192.168.3.1\E\3703HA-1

कार्यालयी हिंदी: एक परिचय

— मनोज कुमार सिंह*

प्रस्तावना: हिंदी हमारी राजभाषा है। अत: आधिकारिक तौर पर सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग किया जाना चाहिए। हिंदी के मुख्यत: चार रूप होते हैं- व्यवहारिक हिंदी, साहित्यिक हिंदी, योजनमूलक हिंदी और कार्यालयीन हिंदी। व्यवहारिक (बोलचाल) हिंदी और कार्यालयीन हिंदी के बीच बहुत बड़ा अंतर है। इस कारण हिंदी के कार्यालयीन प्रयोग में गैर-हिंदी और कार्यालयीन हिंदी के बीच बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

कार्यालयी हिंदी: कार्यालयी हिंदी भाषा के चार गुण माने गए हैं-निवैक्तकता, तथ्यों में संपूर्णता व स्पष्टता, यथासंभव असंदिधता और वर्णात्मकता। इसमें सीमित वाक्य हैं जिसका मूल कारण है कर्मवाच्यता। कर्तावाच्यता का प्रयोग इसमें नहीं किया जाता है। उदाहरण के लिए-मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है, वार्षिक विवरण भेजने की अंतिम तारीख 31 मार्च है, इस पत्र को शीघ्र जारी करें आदि। कार्यालयी हिंदी की भाषा मुख्यत: तकनीकी या अर्धतकनीकी होती है। यह हिंदी वास्तव में अंग्रेजी वाक्य-विन्यास से अधिक प्रभावित है क्योंकि हिंदी में ये वाक्य अंग्रेजी वाक्यों के अनुवाद से आए हैं। इस कारण कार्यालयी हिंदी ने कहीं-कहीं अपने प्रकृत स्वभाव को छोड़ कृत्रिम रूप ग्रहण कर लिया है। इस कारण कार्यालयी हिंदी बहुत जटिल हो जाती है।

कार्यालयी हिंदी की भाषा मुख्यत: तकनीकी या अर्धतकनीकी होती है। यह हिंदी वास्तव में अंग्रेजी वाक्य-विन्यास से अधिक प्रभावित है क्योंकि हिंदी में ये वाक्य अंग्रेजी वाक्यों के अनुवाद से आए हैं। इस कारण कार्यालयी हिंदी ने कहीं-कहीं अपने प्रकृत स्वभाव को छोड़ कृत्रिम रूप ग्रहण कर लिया है। इस कारण कार्यालयी हिंदी बहुत जटिल हो जाती है।

कार्यालयी हिंदी की शैली: कार्यालयी हिंदी अधिकतर सूचना प्रधान साहित्य के अंतर्गत आती है। कार्यालयी हिंदी भाषा और शैली काफी कुछ सुनिश्चित होती है- चाहे वह शब्दों का प्रयोग हो अथवा वाक्य रचना का हो। इसका अर्थ यह है कि कार्यालयी हिंदी में कहीं भी विचलन की गुंजाइश नहीं है। बोलचाल की हिंदी में साहित्य का प्रभाव दिखता है, लेकिन कार्यालयी हिंदी में अलंकार आदि का प्रयोग नहीं किया जाता है। कथन को स्पष्ट, दो-टूक और बिना घुमाव-फिराव के कहने की विशेषता जितनी अधिक हो, कार्यालयी हिंदी उतनी ही अच्छी मानी जाती है। कार्यालयी हिंदी के पारिभाषित शब्द काफी कुछ अलग होते हैं, जिनका प्रयोग अन्य प्रयुक्तियों में प्राय: नहीं होता है। उदाहरण के लिए कार्यालयी हिंदी में, निविदा शपथ-पत्र आदि सैकड़ों शब्द इसी श्रेणी के हैं। सरकारी कार्यालयों में जो कार्य हिंदी भाषा में किए जाते हैं उनको निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है:

- **सरकारी पत्राचार:** सरकारी पत्राचार में पत्र, स्मरण-पत्र, अर्ध सरकारी पत्र, पृष्ठांकन, आदेश एवं कार्यालय आदेश, कार्यालय ज्ञापन, अधिसूचना, संकल्प, अंतर्विभागीय टिप्पणी, प्रेस-विज्ञप्ति, तार-फैक्स-टेलेक्स संदेश, आदि मुख्य रूप से प्रयुक्त होते हैं।
- **मसौदा लेखन:** सरकारी अथवा गैर-सरकारी कार्यालयों में कामकाज को निपटाने के लिए किए जाने वाले पत्र-व्यवहार का विधिपूर्वक प्रारंभिक रूप तैयार करना मसौदा लेखन है। इसे प्रारूपण या आलेखन भी कहा जाता है। मसौदा लेखन तीन प्रकार के होते है-प्रारंभिक, उच्चतर और मानक मसौदा लेखन। प्रारंभिक मसौदा लेखन में आवेदन पत्र, स्मरण-पत्र, अंतरिम उत्तर, पृष्ठांकन, अर्धसरकारी पत्र, कार्यालय आदेश आदि आते हैं। उच्चतर मसौदा लेखन में कार्यालय-ज्ञापन, अधिसूचना, संकल्प, प्रेस विज्ञप्ति आदि आते हैं। मानक मसौदा लेखन का प्रारूप पूर्व निर्धारित होता है और यह समस्त कार्यालयों में एक जैसा होता है। इसके प्रारूप और भाषा मानकीकृत होती है जिसमें दौरा-कार्यक्रम, अग्रिम संबंधी आवेदन-पत्र, भुगतान संबंधी पत्र आदि आते हैं।

* वरिष्ठ प्रबंधक (आई॰ ई॰), एन॰सी॰एल॰ सिंगरौली (म॰ प्र॰)

\\192.168.3.1\E\3703HA-1

- **टिप्पणी लेखन:** किसी भी विचाराधीन पत्र को सुविधाजनक रूप से निपटाने के लिए जो राय या सुझाव दिया जाता है वह टिप्पणी कहलाती है । इसे टिप्पण भी कहा जाता है । इसका उद्देश्य मामलों को शीघ्र निपटाना होता है । टिप्पणी कभी भी मूल पत्र या आवती पर नहीं लिखी जाती है । टिप्पणी मूलत: अंग्रेजी शब्द नोटिंग का हिंदी प्रर्याय है । यह प्रारूप लेखन का प्रमुख अंग है। टिप्पणी में टिप्पणीकर्ता अपनी पत्रावली पर विचाराधीन पत्र का सार देते हुए उसके निस्तारण के लिए सरकारी विधि नियम, उपनियम तथा परिनियम आदि का तर्कसंगत उल्लेख करते हुए उनके अंतर्गत अपना सुझाव प्रस्तुत करता है।

  टिप्पणी का उद्देश्य उन बातों का निर्णय करना होता है जो तर्कसंगत रूप से विषय को स्पष्ट करती है तथा जिनके आधार पर निर्णय की संभावनाओं का संकेत करता है। इसका दूसरा उद्देश्य कार्यालयों में होने वाले कार्य को निपटाना है। टिप्पणी सदैव एक क्रमविशेष में ही विचाराधीन पत्र पर टिप्पणी करता है। जो इस प्रकार है – विचाराधीन विषय, विचाराधीन विषय की पृष्ठभूमि, विभिन्न दृष्टिकोण, तार्किक विश्लेषण, सुनिश्चित सुझाव एवं निष्कर्ष । टिप्पणी में प्रयुक्त होने वाले कुछ सामान्य वाक्यांश इस प्रकार है – सादर अवलोकनार्थ प्रस्तुत, सादर आदेशार्थ प्रस्तुत, सादर हस्ताक्षरार्थ प्रस्तुत आदि।

- **कार्यालयीन अनुवाद:** सरकारी पत्राचार में पर्यायवाची शब्द प्रयोग में नहीं लाए जाते है । प्रत्येक शब्द में सूक्ष्म अर्थाभिव्यक्ति होती है, जो विशेष प्रयोजन के लिए प्रयुक्त होती है। उदाहरण के लिए, और ये तीनों शब्द विशेष प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होते है । अत: इन शब्दों का अनुवाद क्रमश: आदेश, निर्देश और अनुदेश किया जाता है। इसी प्रकार और शब्द अलग- अलग प्रयोजन के रूप में प्रयुक्त होते हुए स्वीकृति या मँजूरी, अनुमोदन और अनुमति के अर्थ में प्रयुक्त होते है। और दोनों का अर्थ नौकरी से हटाना है किंतु की सजा अधिक सख्त है और इसमें निकालें गए कर्मचारी को पुन: सरकारी नौकरी नहीं मिल सकती। इसलिए के लिए बर्खास्तगी शब्द है और के लिए निष्कासन। कार्रवाई में भी अतंर मिलता है । कार्रवाई किसी मामले के सबंध में कार्य करने से संबंधित है जबकि कार्यवाही किसी बैठक में हुई चर्चा सें संबंधित है । इसलिए कार्रवाई के लिए शब्द प्रयोग होता है।

बोलचाल की हिंदी में साहित्य का प्रभाव दिखता है, लेकिन कार्यालयी हिंदी में अलंकार आदि का प्रयोग नहीं किया जाता है। कथन को स्पष्ट, दो-टूक और बिना घुमाव-फिराव के कहने की विशेषता जितनी अधिक हो, कार्यालयी हिंदी उतनी ही अच्छी मानी जाती है।

हिंदी के प्रयोग में बाधाएं: कई सरकारी कार्यालयों को हिंदी के प्रयोग में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इन कठिनाइयों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि मुख्य रूप से इसके चार कारण हैं – त्रुटि का भय, हीनता की भावना, दृढ़ संकल्प शक्ति का अभाव और सामाजिक वातावरण । इसके अलावा, कुछ कार्यस्तर सबंधी समस्याएं भी आती है जिनके कारण कर्मचारीगण हिंदी में कार्य करने के प्रति उत्साहित नहीं हो पाते हैं। ऐसा देखने में पाया गया है कि छोटे सरकारी कार्यालयों में प्रशासनिक शब्दावलियाँ उपलब्ध ही नहीं होती है। कार्यालयों में हिंदी लिखने के लिए अलग-अलग सॉफ्टवेयर और फॉट उपयोग में लाए जाते हैं। हिंदी फॉटों के साथ समस्या यह है कि इनको अंग्रेजी फॉटों की तरह सरलता से एक दूसरे में बदला नहीं जा सकता। इसलिए एक कंप्यूटर पर हिंदी में टाइप किया गया पत्रादि दूसरे कंप्यूटर पर उपयोगहीन दिखाई देता हैं अगर बड़े-बड़े कार्यालयों को छोड़ दें तो अनेक कार्यालयों में हिंदी में कार्यालयीन कार्य करने के संबंध में प्रशिक्षण की कमी पाई गई है। लगभग सभी सरकारी कार्यालय में वहां के कार्यों के अनुरूप हिंदी अधिकारियों और हिंदी अनुवादकों की कमी बनी रहती है।

हिंदी का प्रयोग बढ़ाने हेतु सुझाव: कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग में आने वाली समस्याओं से निपटने के लिए नए प्रयास करने की आवश्यकता है। सर्वप्रथम, कार्यालय में हिंदी कार्य हेतु वातावरण बनाया जाए। सरल, सहज और बोधगम्य हिंदी शब्दों और वाक्यों का प्रयोग किया जाए। इसके अलावा, प्रशासनिक शब्दावलियों का सरलीकरण भी किया जाए। हिंदी टंकण के लिए युनिकोड आधारित फोंट का प्रयोग किया जाए। इसके अतिरिक्त, कार्यालयों के सभी कंप्यूटरों में हिंदी सॉफ्टवेयर एवं फोंट की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। इतना ही नहीं, हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले सरकारी कर्मचारियों को पुरस्कृत कर भी उत्साह बटाया जा सकता है। ❑

\\192.168.3.1\E\3703HA-1

हिंदी: विश्व में प्रथम एवं सबसे लोकप्रिय भाषा

(शोध रिपोर्ट 2015)

— डॉ जयन्ती प्रसाद नौटियाल*

प्रस्तावना: विश्व स्तर पर हिंदी की स्थिति के बारे में मेरा यह शोध 1981 में शुरू हुआ था और सन् 1997 में इसकी शोध रिपोर्ट भारत सरकार राजभाषा विभाग की पत्रिका ''राजभाषा भारती'' में ''**हिंदी एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा है**'' नामक शीर्षक से प्रकाशित हुई। इस प्रकाशन के उपरान्त सन् 2005 में इसकी विस्तृत रिपोर्ट विश्व भर में अनेक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई, जिसका संपूर्ण विश्व में स्वागत हुआ एवं इस शोध को मान्यता प्राप्त हुई। विश्व के अधिकांश विद्वानों व भाषाविदों ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया कि **विश्व में हिंदी जानने वाले सर्वाधिक हैं** तथा मंदारिन दूसरे स्थान पर है। यह शोधकार्य भारत सरकार के प्रतिलिप्याधिकार **पंजीयक** Registrar of copy right Govt. of India के पास पंजीयन क्रमांक 26910 2006 पर मेरे नाम से पंजीकृत है।

मेरे शोध के संबंध में कुछ प्रतिक्रियाएँ:

विश्व में इन्टरनेट आदि जैसे माध्यमों से इस शोध के प्रकाशित होने पर विश्व समुदाय के अनेक विद्वानों ने इसे सराहा तथा इसकी प्रामाणिकता एवं सत्यता को स्वीकारा, लेकिन चीन के एक पोर्टल पर इस शोध पर विश्व समुदाय से अभिमत माँगे गए। इस पोर्टल पर मैंने निरंतर निगरानी रखी ताकि कोई प्रतिकूल टिप्पणी या कोई स्पष्टीकरण माँगा जाए तो मैं उसका समुचित उत्तर दे सकूँ, लेकिन इस पोर्टल पर किसी भी विद्वान ने इस तथ्य को नकारा नहीं बल्कि आश्चर्य व्यक्त किया कि हिंदी इतनी व्यापक व लोक प्रिय है, यह उन्हें पहली बार इस शोध से मालूम हुआ।

भारत और लंदन के कुछ विद्वानों ने हिंदी और उर्दू को समान भाषा मानने पर आपत्ति जताई लेकिन मैंने उन्हें बताया कि शब्दावली एवं वाक्य रचना तथा व्याकरण इन दोनों ही भाषाओं का समान है, यह अलग भाषा नहीं बल्कि हिंदी का हिंदुस्तानी स्वरूप है। अत: इसे एक हिंदी भाषा के अंतर्गत माना जाएगा। भाषा वैज्ञानिक नियमों के अनुसार भी विश्व भर में यही भाषाओं के वर्गीकरण का सिद्धांत है।

अब तक प्रस्तुत शोध रिपोर्टों का सार:

हिंदी विश्व में सबसे अधिक बोली व समझी जाती है तथा यह विश्व की सबसे लोक प्रिय भाषा है, यह मैंने अपनी शोध में सिद्ध किया है। इस शोध को समय-समय पर अद्यतन किया जाता रहा है ताकि हर दो तीन साल के कालखंड में भाषा गत परिदृश्य में आए परिवर्तनों को रेखांकित किया जा सके। अब तक प्रकाशित हुई शोध रिपोर्टों का सार निम्नवत है:

(आँकड़े मिलियन में)

शोध रिपोर्ट का वर्ष	विश्व में हिंदी जानने वाले	विश्व में चीनी जानने वाले	अंतर
शोध रिपोर्ट 1997	800	730	70
शोध रिपोर्ट 2005	1022	900	122
शोध रिपोर्ट 2007	1023	920	103
शोध रिपोर्ट 2009	1100	967	133
शोध रिपोर्ट 2012	1200	1050	150
शोध रिपोर्ट 2015	1300	1100	200

स्रोत: डॉ॰ जयन्ती प्रसाद नौटियाल द्वारा किया गया शोध अध्ययन सन् 2015 (अनुमानित आँकड़े)

***उप महा प्रबंधक, कार्पोरेशन बैंक, कार्पोरट कार्यालय, मंगलूर-575 001 (कर्नाटक राज्य), वेबसाईट: www.drjpnautiyal.com, ई-मेल: dr.nautiyaljp@gmail,com, jpn@corpbank.co.in**

\\192.168.3.1\E\3703HA-1

यह शोध रिपोर्टें इस बात का अकाट्य प्रमाण हैं कि हिंदी जानने वालों की संख्या विश्व में सबसे अधिक हैं तथा यह निरंतर बढ़ती जा रही है। इससे यह सिद्ध होता है कि हिंदी विश्व की सबसे लोक प्रिय भाषा है।

हिंदी: विश्व की सबसे लोकप्रिय भाषा:

'हिंदी विश्व में सबसे लोकप्रिय भाषा है'—यह तथ्य भी निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुका है। इस तथ्य को अब अधिकांश विद्वान स्वीकार करने लगे हैं। इसका एक प्रमाण यह भी है कि भारत के प्रधान मंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ सहित विश्व के अनेक देशों में अपना व्याख्यान हिंदी में ही दिया, यह व्याख्यान संपूर्ण विश्व में लोगों ने बड़े चाव से सुना व समझा। आदरणीय मोदी जी के सम्मान में इन कार्यक्रमों को भी हिंदी में ही प्रसारित किया गया था। हिंदी भाषा की लोकप्रियता और उसका प्रभा मंडल केवल भारत या भारत के पड़ोसी देशों तक ही सीमित नहीं है बल्कि सुदूर कैरेबियाई राष्ट्रों तक फैला है। मारीशस, फीजी, गुयाना, सूरीनम, ट्रिनिडाड और टोबेगो जैसे देशों में यह राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। इतना ही नहीं बल्कि इंडोनेशिया, अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका और खाड़ी के देशों में हिंदी बहुत लोकप्रिय है। विश्व की 18% जनता हिंदी जानती है। इसलिए अनेक देश अपने प्रिंट मीडिया और इलैक्ट्रानिक मीडिया में हिंदी को स्थान दे रहे हैं। इतना ही नहीं भारतीय फिल्में और टी.वी. चैनलों के कार्यक्रम भी विश्व के कई देशों में चाव से देखे जा रहे हैं।

सार्वभौमीकरण और हिंदी:

नब्बे के दशक के उपरांत जब उदारीकरण व सार्वभौमीकरण अर्थात लिबरलाइंजेशन एवं ग्लोबलाइजेशन का दौर भारत में चला तब ज्यादातर विचारकों का मत था कि ग्लोबलाइजेशन से भारत के आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिश्दृश्य में परिवर्तन हो जाएगा। आर्थिक दृष्टि से विदेशी पूंजीवाद फिर से शुरू हो जाएगा तथा हमारा सांस्कृतिक ताना-बाना ध्वस्त हो कर पूरी तरह विदेश संस्कृति हम पर हावी हो जाएगी। हिंदी व भारतीय भाषाओं का स्थान अंग्रेजी ले लेगी। परन्तु यह हर्ष का विषय है कि ऐसा कुछ नहीं हुआ जैसा कि पूर्वानुमान लगाया जा रहा था यह सत्य सिद्ध नहीं हुआ.............!

ऐसा ही चिंतन उस दौरे में भी आया था जब भारत में कंप्यूटर का आगमन हुआ था अर्थात 1980 के दशक से यह चिंतन चलने लगा था और लोगों को यही भय सता रहा था, परन्तु भारत में भाषा प्रौद्योगिकी ने काफी विकास किया है तथा आज हम सब काम हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं में करने में सक्षम हैं। सोशियल मीडिया में भी हिंदी काफी तेज़ी से आगे बढ़ रही है।

अंग्रेजी परस्त मानसिकता व यथार्थ:

यह जानकर दुख होता है कि आधुनिकता के इस दौर में भारतीय जन मानस को कुछ नफासत पसंद और अंग्रेजी मानसिकता के लोग यह कह कर भ्रमित कर रहे हैं कि अब बिना अंग्रेजी जाने भारतीयों को कोई भविष्य नहीं है। यह नितांत हास्यास्पद है तथा यथार्थ इसके विपरीत है। इस दौर में हिंदी भाषा का इतना विकास हुआ कि स्टाक चैनल के रूर्पट मार्डोक को अपने स्टार कार्यक्रमों की टी आर पी बढ़ाने के लिए हिंदी में लाना पड़ा। हिंदी का वर्चस्व निरंतर बढ़ता ही जा रहा है तथा आज वह उस मुकाम पर पहुंच गई है जहां उसकी लोक प्रियता और ग्राह्यता को कोई अन्य भाषा चुनौती नहीं दे सकती है। हिंदी आज विश्व में मनोरंजन की दुनिया में सबसे आगे है। यही कारण है कि सोनी, जी टी वी, डिस्कवरी चैनल, विदेशी 'कार्टून कार्यक्रम' भी भारत व पड़ोसी देशों में हिंदी में प्रसारित होने लगे हैं।

भारत की सांस्कृतिक विरासत और हिंदी:

भारत की सांस्कृतिक विरासत इतनी व्यापक है कि विश्व में इसकी तुलना किसी अन्य सभ्यता और संस्कृति से नहीं की जा सकती है। भारतीय वेद अर्थात ऋग्वेद को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति एवं विश्व थाती (धरोहर) का दर्जा तो पहले ही मिल चुका था अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 175 देशों के समर्थन से संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता दी है। 10 जनवरी संसार के कई देशों में विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत और हिंदी दोनों का वर्चस्व विश्व स्तर पर दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। यह हमारे लिए गर्व का विषय है।

हिंदी की लोकप्रियता: आर्थिक एवं राजनैतिक प्रभाव:

हिंदी संख्या बल की दृष्टि से विश्व में सबसे अधिक है परन्तु संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषाओं में इसको स्थान

\\192.168.3.1\E\3703HA-1

नहीं मिल पाया है। इसका प्रमुख कारण यह है कि आर्थिक शक्ति और राजनैतिक शक्ति हिंदी से प्रत्यक्षत: नहीं जुड़ी थी, जब कि भारत में परोक्ष रूप में हिंदी राजनैतिक शक्ति व आर्थिक शक्ति का आधार पहले से ही रही है। आज स्थितियाँ बेहतर हो गई हैं। हिंदी के पास प्रत्यक्षत: राजनैतिक शक्ति भी है और आर्थिक शक्ति भी.....!!

अत: इस परिदृश्य में हिंदी की लोकप्रियता में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

विश्व में हिंदी शिक्षण एवं प्रशिक्षण का प्रभाव:

विश्व में हिंदी की लोकप्रियता को देखते हुए विश्व के 150 से अधिक देशों में हिंदी शिक्षण एवं प्रशिक्षण के अनेक शिक्षण माध्यम शुरु हो गए हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि विश्व में हिंदी के प्रति अधिक झुकाव है? हिंदी अध्यापन; अनेक हिंदी संघों, हिंदी संस्थानों द्वारा चलाया जा रहा है। केंद्र सरकार द्वारा भी हिंदी अध्ययन हेतु हिंदी शिक्षण योजना आदि चलाई जा रही है। विश्व के अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्व विद्यालयों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन तेज़ी से चल रहा है। भारत में केंद्र सरकार के प्रयासों व स्वयं सेवी संस्थाओं के प्रयासों से हिंदी सीखने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। इसे निम्न लिखित तालिका से समझा जा सकता है:

क्षेत्र	कुल जन संख्या	हिंदी जानने वाले	प्रतिशत
क-क्षेत्र (हिंदी भाषी राज्य)	61,72,26,843	61,72,26,843	100
ख-क्षेत्र (हिंदी और प्रांतीय भाषा का समान स्तर)	20,82,78,328	18,74,50,495	90.00
ग-क्षेत्र (हिंदीतर भाषी राज्य)	44,86,85,821	20,74,54,.95	46.24
कुल-संपूर्ण भारत	1,27,41,90,991	1,01,21,31,433	79.43
भारत को छोड़कर अन्य देश	5,94,64,09,008	28,64,86,582	4.81
विश्व की कुल जन संख्या	7,22,06,00,000	1,29,86,17,995	17.98
(पूर्णांकित)	**7,22,06,00,000**	**1,30,00,00,000**	**18.00**

स्रोत: डॉ॰ जयन्ती प्रसाद नौटियाल द्वारा किया गया शोध अध्ययन सन् 2015 (अनुमानित आँकड़े)

विस्तृत जानकारी के लिए अनुबंध-1 एवं 2 देखें।

मंदारिन बनाम हिंदी:

संपूर्ण विश्व में यह प्रचारित किया जाता है कि मंदारिन सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है जब कि सत्य यह है कि संपूर्ण विश्व में मंदारिन जानने वाले 2015 के आंकड़ों के अनुसार सिर्फ 1100 मिलियन हैं। चीन की सरकारी भाषा मंदारिन है तथा चीन में कुल जन संख्या का 70% भाग ही मंदारिन जानता है। चीन की वर्तमान जन संख्या 1360 मिलियन है। इसका अर्थ यह है कि चीन में मंदारिन जानने वाले केवल 950 मिलियन हैं व 150 मिलियन अन्य देशों में हैं। यह ध्यातव्य कि यह संख्या सन् 2012 में 1050 मिलियन थी। अत: इसमें 50 मिलियन की वृद्धि हुई है। हिंदी की लोकप्रियता व इसके अग्रणी होने की स्थिति इससे भी आंकी जा सकती है कि वर्ष 2012 में इसे जानने वालों की संख्या 1200 मिलियन थी। यह 2015 में प्रचुर बढ़ोतरी से यह 1300 मिलियन हो गई है अर्थात् मंदारिन से 200 मिलियन ज्यादा। अंग्रेजी को तो सभी स्रोतों, सभी बोलियों और प्रवीणता के विभिन्न स्तरों को जोड़ने पर भी यह आंकड़ा अधिकतम 1000 मिलियन तक बड़ी मुश्किल से पहुंचता है।

हिंदी के संबंध में एक साधारण सी गणना नीचे दी जा रही है:

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

1.	भारत में हिंदी जानने वाले	1012 मिलियन
2.	पाकिस्तान में हिंदी जानने वाले	165 मिलियन
3.	बंगलादेश में हिंदी जानने वाले	70 मिलियन
4.	नेपाल में हिंदी जानने वाले	25 मिलियन
	4 राष्ट्रों में हिंदी जानने वालों का योग	1272 मिलियम
5.	विश्व के अन्य राष्ट्रों में हिंदी जानने वाले	28 मिलियन
	संपूर्ण विश्व में हिंदी जानने वाले	**1300 मिलियन**

स्रोत: डॉ॰ जयन्ती प्रसाद नौटियाल द्वारा किया गया शोध अध्ययन सन् 2015 (अनुमानित आंकड़े)

युवा भारत की आत्मा और पहचान है हिंदी:

आनेवाले समय में हमारा युवा भारत, विश्व की महाशक्ति बनने जा रहा है। इसलिए हिंदी के प्रति विश्व स्तर पर लोकप्रियता में निरंतर बढ़ोत्तरी हो रही है। इस प्रवृत्ति में हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषा के रूप में भी महत्व मिलेगा तथा यह 'विश्व भाषा' के पद पर भी आसीन होगी। भारत में तो हर भारतीयों के दिल और आत्मा में इसको स्वीकार्यता मिल चुकी है। 'हिंदी विरोध' बीते कल की बात हो चुकी है। समस्त दक्षिण भारत में हिंदी धीरे-धीरे सम्पर्क भाषा का ध्वज धारण किए आगे बढ़ती जा रही है। यह आनेवाले समय का संकेत है। धार्मिक स्थलों, पर्यटन स्थलों पर तो हिंदी पहले से ही लोक प्रिय थी। अब हिंदी, उद्योग, व्यापार, शिक्षा एवं मनोरंजन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान ले चुकी है। भारत की युवा पीढ़ी की पसंदीदा भाषा हिंदी ही है। आज भारत की युवा पीढ़ी भाषा के मामले में व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाती है। अत: यह दृष्टिकोण हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाने में और भी अधिक सहायक होगा।

संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषाएं:

संयुक्त राष्ट्र संघ के गठन के समय चीनी, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी एवं स्पेनिश ही अधिकृत भाषाएं थी। 18 दिसम्बर 1973 से इसमें अरबी भाषा भी जोड़ दी गई इस प्रकार संयुक्त राष्ट्र संघ में 6 अधिकृत भाषाएं हो गई।

यह सबसे बड़े दुख की बात है कि विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र की भाषा हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थान नहीं दिया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषाओं पर एक नज़र डालें:

(संख्या मिलियन में)

क्रम सं॰	भाषा	मातृ भाषा	अर्जित भाषा	कुल भाषा भाषी
1.	अरबी	235	225	460
2.	चीनी	950	150	1100
3.	अंग्रेजी	350	650	1000
4.	फ्रेंच	70	60	130
5.	रूसी	148	112	260
6.	स्पेनिश	332	63	395
	कुल	2035	1260	3345

हिन्दी की स्थिति

	हिंदी	**619**	**1300**

स्रोत: डॉ॰ जयन्ती प्रसाद नौटियाल द्वारा किया गया शोध अध्ययन सन् 2015 (अनुमानित आंकड़े)

संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषाओं का औचित्य:

इन भाषाओं को अधिकृत किए जाने के पीछे तर्क यह है कि इनको प्रथम भाषा (मातृ भाषा) द्वितीय भाषा के रूप में बोलने वालों की संख्या 3.34 बिलियन है। यह संपूर्ण विश्व की जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा है तथा संसार की आधे से अधिक राष्ट्रों में ये भाषाएं प्रचलित हैं। यदि इन भाषाओं में हिंदी भी जोड़ दी जाए तो यह संख्या 4.64 बिलियन हो जाएगी तथा यह विश्व की सम्पूर्ण आबादी के 64.26 भाग का प्रतिनिधित्व करेगी। विश्व की प्रमुख भाषाओं और भाषा-भाषियों की संख्या निम्नवत् है:

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

विश्व की प्रमुख भाषाएं

(संख्या मिलियन में)

रैंक Rank	भाषा	Language	भाषा-भाषी Speakers	विश्व जनसंख्या का % % of world population	रैंक Rank	भाषा	Language	भाषा-भाषी Speakers	विश्व जनसंख्या का % % of world population	रैंक Rank	भाषा	Language	भाषा-भाषी Speakers	विश्व जनसंख्या का % % of world population
1.	हिंदी	Hindi	1300	18.00	21.	थाई	Thai	66	0.91	41.	फिलिपिनो	Philipino	29	0.40
2.	चीनी	Mandarin	1100	15.23	22.	कैंटोनी	Cantonese	60	0.83	42.	रोमेनियन	Romanian	28	0.38
3.	अंग्रेजी	English	1000	13.85	23.	तुर्की	Turkish	55	0.76	43.	राजस्थानी	Rajasthani	28	0.38
4.	अरबी	Arabic	460	6.37	24.	गुजराती	Gujarati	52	0.72	44.	गन	Gan (Hakka)	26	0.36
5.	स्पेनी	Spanish	395	5.47	25.	कन्नड़	Kannada	50	0.69	45.	सिंधी	Sindhi	25	0.34
6.	रूसी	Russian	260	3.60	26.	हौसा	Hausa (Afro-Asiatic)	50	0.69	46.	लाओ	स्वं	25	0.34
7.	बंगाली	Bangla	256	3.54	27.	मिननान	Min Nan	48	0.66	47.	उजबेक	Uzbek	24	0.33
8.	पुर्तगाली	Portuguese	200	2.77	28.	पोलिश	Polish	45	0.62	48.	योरूबा	Yoruba	24	0.33
9.	मलय	Malay	190	2.63	29.	फारसी	Persian	44	0.60	49.	बर्बेर	Berber	23	0.31
10.	फ्रैंच	French	130	1.80	30.	भोजपुरी	Bhojpuri	44	0.60	50.	छत्तीसगढ़ी	Chhatisgarhi	22	0.30
11.	जापानी	Japanese	126	1.74	31.	बर्मी	Burmese	43	0.59	51.	असमी	Assamese	22	0.30
12.	जर्मन	German	120	1.66	32.	अवधी	Awadhi	42	0.58	52.	अम्हारी	Amharic	22	0.30
13.	पंजाबी	Punjabi	112	1.55	33.	हौसा	Hausa (Afro)	42	0.58	53.	सिंहली	Sinhalese	20	0.27
14.	मराठी	Marathi	110	1.55	34.	यूक्रेनी	Ukrainian	40	0.55	54.	ओरमो	Oromo	20	0.27
15.	तेलुगु	Telugu	85	1.77	35.	जियांग	Xiang	39	0.54	55.	सर्ब-क्रो	Serbo-Croation	19	0.26
16.	तमिल	Tamil	83	1.14	36.	मलयालम	Malayalam	38	0.52	56.	कुर्द	Kurdish	19	0.26
17.	वू-शंघाई	Wu Shangai	80	1.10	37.	उड़िया	Oriya	36	0.49	57.	मलागासी	Malagasi	19	0.26
18.	वियतनामी	Vietnamese	73	1.01	38.	मैथिली	Maithili	36	0.49	58.	सेबुआनो	Cabuano	18	0.24
19.	कोरियाई	Korean	70	0.96	39.	अजरबेजानी	Azerbaisane	32	0.44	59.	रंगपुरी	Rangpuri	18	0.24
20.	इटैलियन	Italian	68	0.94	40.	डच	क्नजबी	30	0.41	60.	खमेर	Khmer	17	0.23

स्रोत: डॉ॰ जयन्ती प्रसाद नौटियाल द्‌वारा किया गया शोध अध्ययन सन् 2015 (अनुमानित आंकड़े)।

Source: Research study by Dr. Jayanti Prasad Nautiyal 2015 (Estimated Figures).

निष्कर्ष: अब बारी हिंदी की है। विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र की भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषा का दर्जा मिलना ही चाहिए।

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

भारत में हिंदी जानने वालों की संख्या

संशोधित राजभाषा नियम के अनुसार 'क' क्षेत्र

क्रसं०	राज्य/संघ शासित क्षेत्र	कुल जनसंख्या	हिंदी जानने वाले	हिंदी जानने वालों का %
1.	अंडमान एवं निकोबार	3,82,783	3,82,783	100
2.	बिहार	10,97,42,591	10,97,42,591	100
3.	छत्तीसगढ़	2,65,08,463	2,65,08,463	100
4.	दिल्ली	2,67,50,767	2,67,50,767	100
5.	हरियाणा	2,64,44,965	2,64,44,965	100
6.	हिमाचल प्रदेश	70,35,401	70,35,401	100
7.	झारखंड	3,33,13,459	3,33,13,459	100
8.	मध्य प्रदेश	7,60,70,728	7,60,70,728	100
9.	राजस्थान	7,20,55,927	7,20,55,927	100
10.	उत्तराखंड	1,00,53,951	1,00,53,951	100
11.	उत्तर प्रदेश	22,88,68,248	22,88,68,248	100
	कुलः 'क' क्षेत्र	**61,72,26,843**	**61,72,26,843**	**100**

संशोधित राजभाषा नियम के अनुसार 'ख' क्षेत्र

12.	चंडीगढ़	10,95,994	9,86,394	90
13.	दादर एवं नगर हवेली	3,77,138	3,39,424	90
14.	दमण एवं दीव	2,69,631	2,42,668	90
15.	गुजरात	6,30,89,998	5,67,80,998	90
16.	महाराष्ट्र	11,66,33,162	10,49,69,846	90
17.	पंजाब	2,68,12,405	2,41,31,165	90
	कुलः 'ख' क्षेत्र	**20,82,78,328**	**18,74,50,495**	**90**

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

क्रसं॰	राज्य/संघ शासित क्षेत्र	कुल जनसंख्या	हिंदी जानने वाले	हिंदी जानने वालों का %
	संशोधित राजभाषा नियम के अनुसार 'ग' क्षेत्र			
18.	आन्ध्र प्रदेश	8,80,98,809	4,40,49,405	50
19.	अरुणाचल प्रदेश	14,44,741	5,05,659	35
20.	असम	2,98,27,735	1,19,31,094	40
21.	गोवा	15,20,609	11,40,457	75
22.	जम्मू एवं कश्मीर	1,30,76,372	1,11,14,916	85
23.	कर्नाटक	6,08,37,239	3,04,18,620	50
24.	केरल	3,48,57,060	1,56,85,677	45
25.	लक्षद्वीप	66,006	19,802	30
26.	मणिपुर	28,30,843	12,73,879	45
27.	मेघालय	30,82,207	9,24,662	30
28.	मिजोरम	11,40,564	3,42,169	30
29.	नाागालैंड	20,01,214	4,00,243	20
30.	उड़ीसा	3,99,34,980	2,19,64,239	55
31.	पांडिचेरी	12,44,242	2,48,848	20
32.	सिक्किम	6,33,072	3,79,843	60
33.	तमिलनाडु	6,98,45,516	1,39,69,103	20
34.	त्रिपुरा	0,37,96,228	11,38,868	30
35.	पश्चिम बंगाल	9,44,48,384	5,19,46,611	55
	कुल: 'ग' क्षेत्र	**44,86,85,821**	**20,74,54,095**	**46.24**
	कुल: क + ख + ग	**1,27,41,90,992**	**1,01,21,31,433**	**79.43**

स्रोत: डॉ॰ जयन्ती प्रसाद नोटियाल द्वारा किया गया शोध अध्ययन सन् 2015 (अनुमानित आंकड़े)

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

विश्व में हिंदी जानने वालों की संख्या

क्र°सं°	देश	हिंदी जानने वाले
1.	भारत	1012131433
2.	पाकिस्तान	165112311
3.	बांग्लादेश	70933178
4.	नेपाल	25234117
5.	म्यांमार	3221134
6.	मलेशिया	2711212
7.	यूनाईटेड किंगडम	2532113
8.	अमेरिका	2212415
9.	दक्षिण अफ्रीका	1512111
10.	सऊदी अरब	1503216
11.	संयुक्त अरब अमीरात	1431212
12.	कनाडा	1254123
13.	मॉरीशस	887534
14.	भूटान	864317
15.	फीजी	532126
16.	त्रिनिडाड और टोबैगो	484311
17.	कुवैत	475166
18.	ओमान	465336
19.	गुयाना	425125
20.	सिंगापुर	313779
21.	कतार	308083
22.	सूरीनाम	267244

क्र°सं°	देश	हिंदी जानने वाले
23.	नीदरलैंड	265343
24.	बहरीन	264312
25.	थाइलैंड	174313
26.	केनिया	159134
27.	ऑस्ट्रेलिया	121677
28.	यमन	118116
29.	फ़िलीपीन	109307
30.	जर्मनी	102010
31.	इटली	101301
32.	इंडोनेशिया	101122
33.	रीयूनियन (फ्रांस)	101110
34.	नाइजीरिया	98411
35.	श्रीलंका	96333
36.	न्यूजीलैंड	92234
37.	मैक्सिको	90012
38.	तंज़ानिया	90137
39.	जमैका	83100
40.	इस्राइल	75016
41.	फ्रांस	70180
42.	पुर्तगाल	62077
43.	हांगकांग	48069
44.	अफगानिस्तान	47170

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

क्रम्सं॰	देश	हिंदी जानने वाले
45.	स्पेन	43103
46.	मोज़ाबिक	42210
47.	रूस	37310
48.	लीबिया	31213
49.	मैडागास्कर	29121
50.	युगांडा	28226
51.	बोट्सवाना	26670
52.	चीन	25555
53.	पोलैंड	24666
54.	अर्जेंटीना	23522
55.	ज़ाम्बिया	22370
56.	जापान	19064
57.	स्विट्ज़रलैंड	19064
58.	स्वीडेन	18620
59.	नॉर्वे	17030
60.	कोरिया	16300
61.	ऑस्ट्रिया	14404
62.	सेशेल्स	12711
63.	लेबनान	12572
64.	बेल्जियम	12639
65.	ब्रुनेई	11505
66.	मालदीव	10600
67.	ग्रीस	10313
68.	यूक्रेन	9108
69.	फिनलैंड	8562

क्रम्सं॰	देश	हिंदी जानने वाले
70.	इक्वाडोर	7571
71.	अंगोला	7299
72.	घाना	6567
73.	निकारागुआ	6052
74.	विएतनाम	6660
75.	वैनेज़ुएला	5976
76.	सूडान	5832
77.	सेंट लूसिया	5759
78.	प्युरटो रिको	5788
79.	जॉर्डन	5582
80.	पनामा	5472
81.	इजिप्ट	5399
82.	साइप्रस	5087
83.	दक्षिण कोरिया	3320
84.	डेन्मार्क	3046
86.	ब्राज़ील	2579
87.	ताइवान	2525
88.	सीरिया	2430
89.	आयरलैंड	2306
90.	जिम्बाब्वे	2223
91.	चेक गणतंत्र	2471
92.	कज़ाकिस्तान	1728
93.	सीरा लियोन	1510
94.	इथिओपिया	1460
95.	वर्जिनिया	1482

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

क्र॰सं॰	देश	हिंदी जानने वाले
96.	उज़बेकिस्तान	1444
97.	ईरान	1362
98.	चिली	1330
99.	कोंगो	1256
100.	बंगलादेशी शरणार्थी	373214
101.	तिब्बती शरणार्थी	121690
102.	म्यांमार व अफगान शरणार्थी	101000
103.	शेष 135 देशों में	100000
	कुल हिंदी जानने वाले	1298617995
	(पूर्णांकित)	130000000
	विश्व की जनसंख्या	7220600000
	हिंदी जानने वालों का %	**18.00**

स्रोत: डॉ॰ जयन्ती प्रसाद नोटियाल द्वारा किया गया शोध अध्ययन सन् 2015 (अनुमानित आंकड़े) ❑

अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा। किसी बात के होते हुए भी इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की कालावधि के लिए संघ के उन सब राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा प्रयोग की जाती रहेगी, जिनके लिए ऐसे प्रारंभ के ठीक पहले यह प्रयोग की जाती थी: परंतु राष्ट्रपति उक्त कालावधि में आदेश द्वारा, संघ के राजकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ हिन्दी भाषा का तथा भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के साथ-साथ देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

—राजभाषा नीति

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

शस्त्र और शास्त्र के धनी रहीम

(वर्ष 1556-1626)

— डॉ॰ ओ॰ पी॰ मिश्र*

हिंदी साहित्य के इतिहास में अब्दुर्रहीम खानखाना उपाख्य रहीम ऐसे व्यक्ति हैं, जिनकी शस्त्र और शास्त्र में समान गति थी। यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि वे दो परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों के संगम थे। दिसम्बर 1556 में जन्मे रहीम के पिता बैरम खाँ और माता मेवात के जमाल खाँ (इनके पूर्वज राजपूत थे) की पुत्री थी। पिता से इस्लाम धर्म और माता की ओर से हिंदू धर्म के संस्कार रहीम को बाल्यावस्था में ही मिले। यही कारण रहा कि रहीम धार्मिक सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति थे। पिता की हत्या (वर्ष 1560) के फलस्वरूप रहीम 5 वर्ष की अवस्था में ही अनाथ हो गए। वर्ष 1561 में अकबर (1556-1605) ने रहीम को अपने यहां आश्रय प्रदान किया और उनकी शिक्षा-दीक्षा का भी प्रबंध कर दिया। कुशाग्र बुद्धि रहीम ने अरबी, फारसी और तुर्की का ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ हिंदी और संस्कृत में भी परंगता प्राप्त कर ली थी। अपनी विद्वता और वीरता के कारण रहीम अकबर के नौ रत्नों में शामिल हो गए थे।

रहीम को राजनीति और सैन्य संचालन का भी यथेष्ठ ज्ञान था। वर्ष 1573 में सबसे पहले रहीम को गुजरात पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया। युद्ध में मुगल सेना की विजय हुई। उस समय रहीम की अवस्था केवल 17 वर्ष की थी।

रहीम को राजनीति और सैन्य संचालन का भी यथेष्ठ ज्ञान था। वर्ष 1573 में सबसे पहले रहीम को गुजरात पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया। युद्ध में मुगल सेना की विजय हुई। उस समय रहीम की अवस्था केवल 17 वर्ष की थी। विजय के पुरस्कार स्वरूप उन्हें वर्ष 1576 में गुजरात का प्रशासक बना दिया गया। वर्ष 1591 में रहीम को सिंध विजय के लिए भेजा गया। उनके सेनापतित्व में मुगल सेना ने सिन्ध के शासक जानीबेग को पराजित कर सिंध पर कब्जा कर लिया। एक साहसी सेनानी एवं सेनापति के रूप में रहीम की ख्याति काफी फैल चुकी थी। वर्ष 1593 में अकबर ने अहमदनगर पर आक्रमण करने के लिए रहीम और मुराद को दक्षिण भेजा। युद्ध के बाद दोनों पक्षों के बीच समझौता हुआ किंतु कुछ वर्षों बाद समझौता भंग हो गया। वर्ष 1599 में रहीम को वहां पुन: भेजा गया। मुगल सेना ने वर्ष 1599 में दौलताबाद एवं वर्ष 1600 में अहमदनगर पर अधिकार कर लिया। अकबर का साम्राज्य, जो कंधार एवं काबुल से लेकर बंगाल तक और कश्मीर से लेकर बरार तक फैला था, उसका बहुत कुछ श्रेय रहीम के सेनापतित्व को जाता है। स्पष्ट है कि रहीम ने शस्त्र में अपनी पारंगता का जो परिचय दिया वह भारतीय इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

सेनापति और साहित्यकार विशेषकर कवि की मानसिकता में बहुत अन्तर होता है। सेनापति छलबल और मारकाट कर विपक्षी दल पर विजय प्राप्त करता है। सामान्यत: वह अनुदार होता है। रहीम इसके बावजूद उदार, दानी, सहृदय तथा कवि थे, अर्थात् शास्त्र प्रवीण थे। वे अपनी उदारता तथा दानशीलता के लिए प्रसिद्ध थे। कभी रहीम का एक सेवक छुट्टी लेकर घर गया था। उसकी नववधू पहली बार ससुराल आई थी। उसने अपने पति से कुछ और दिनों तक रुकने के लिए कहा किंतु सेवक पति उसके अनुरोध को विवशता के कारण मान नहीं सका। अन्तत: उसकी पत्नी ने निम्नलिखित बरवै को एक लिफाफे में बंद किया और पति से कहा कि वह लिफाफा अपने मालिक को दे दे—

प्रेम-प्रीति का बिरवा, चल्यो लगाय।
सींचन की सुधि लीज्यो, मुरझि न जाय।।

* 610/368, जी केशव नगर, सीताराम रोड, लखनऊ - 226020, मो॰ 9559419018

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

रहीम उपर्युक्त बरवै को पढ़कर द्रवीभूत हो गये। उन्होंने अपने सेवक को बहुत दिनों का अवकाश देने के साथ-साथ उसकी पत्नी को वस्त्र तथा आभूषण भी भिजवाए। एक बार एक दीन-हीन ब्राह्मण अपनी पुत्री की शादी के लिए तुलसीदास के पास पहुंच कर उनसे आर्थिक सहायता की याचना की। तुलसीदास की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वे याचक ब्राह्मण की सहायता करते किन्तु उन्होंने निम्नलिखित दोहा लिखकर ब्राह्मण को दिया और कहा कि वह उस दोहे को रहीम को दे दे - सुरतिय, नरतिय, नागतिय सब चाहत अस होय। ब्राह्मण ने ऐसा ही किया। रहीम ने दूसरी पंक्ति लिखकर दोहे को पूरा किया - गोद लिए हुलसी फिरे, तुलसी सो सुत होय।। इतना ही नहीं रहीम ने उसे काफी धन देकर विदा किया। गंग कवि को रहीम ने उनके एक छप्पय पर प्रसन्न होकर 36 लाख रुपए दे डाले थे। रहीम ने मंडन, लक्ष्मीनारायण और बाण कवियों को भी पुरस्कृत किया था। रहीम वस्तुतः रहम दिल थे। अपने नाम को सार्थक करते थे।

सेनापति और साहित्यकार विशेषकर कवि की मानसिकता में बहुत अन्तर होता है। सेनापति छलबल और मारकाट कर विपक्षी दल पर विजय प्राप्त करता है। सामान्यतः वह अनुदार होता है। रहीम इसके बावजूद उदार, दानी, सहृदय तथा कवि थे, अर्थात् शास्त्र प्रवीण थे।

राजकाज के संचालन में सहयोग तथा विजय अभियानों पर जाने के बावजूद रहीम ने अवधी, ब्रज, संस्कृत आदि में काफी लिखा है। काव्य की विविध विधाओं-दोहा, सोरठा, सवैय्या, छप्पय, बरवै आदि में काव्य सृजन किया। उनकी प्रमुख रचनाएं हैं- दोहावली, बरवै नायिका भेद, नगर शोभा, खेट कौतुकम् और मदनाष्टक। अधिकांश दोहे मौलिक और कुछ संस्कृत से अनूदित हैं यथा—

येषां न विद्या तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणे न धर्मः।
ते मर्त्य लोके भुवि भार भूता,
मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।।
रहिमन विद्या बुद्धि नहि, नहीं धरम जस दान।
भू पर जन्म वृथा धरे, पशु बिनु पुंछ विषान।।

रहीम की रचना दोहावली में 282 दोहे हैं, जो अध्यात्म, भक्ति, ज्ञान, नीति और जीवन के विविध पक्षों से संबन्धित हैं। परम सत्ता (ईश्वर, अल्ला, ईसा, ओंकार आदि) जो सभी कवियों के लिए वर्णनातीत रहे हैं, के प्रति उनका भी यही विचार निम्नलिखित दोहे में व्यक्त हुआ—

रहिमन बात अगम्य की, कहत सुनन की नाहिं।
जे जानति ते कहत नहिं, कहत जो जानहि नाहिं। 1

रहीम श्रीराम और श्रीकृष्ण के भक्त थे। उनके दोहों में राम और कृष्ण, जो हिंदुओं द्वारा विष्णु के अवतार माने जाते हैं, की महिमा को चित्रित किया गया है यथा—

राम नाम जान्यो नहीं जान्यो सदा उपाधि।
कहि रहीम तिहि आपनो, जनम गँवायो बादि।। 2

रहीमा का विश्वास है कि जिसकी इज्जत रखने वाले कृष्ण हैं, उसका कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। वे लिखते हैं—

रहिमन कोउ का करि सकै, ज्वारी, चोर, लबार।
जो पत राखन हार है, माखन चाखन हार।। 3

समाज में सज्जनों और दुर्जनों की पटती नहीं। उन्होंने इस संबंध में बेर के वृक्ष को दुर्जन और केलो के पौधे को सज्जन की संज्ञा देते हुए लिखा—

कहु रहीम कैसे निभै, बेर केर को संग।
ये डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग।। 4

आज ही नहीं, रहीम के काल (इतिहास का मध्यकाल) में भी लोग धनार्जन के लिए अनुचित साधनों को प्रयोग करते होंगे। ऐसे लोगों को रहीम ने प्रवोधित किया—

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

रहिमन वित्ता अधर्म को जरत न लागै बार।
चोरी करि होरी रची, भई छनिक में छार।। 5

हम अपनी वाणी से शत्रु और मित्र बना लेते हैं। कविवर रहीम ने अनर्गल और कटुवचन के दुष्परिणाम को निम्नलिखित दोहे से चित्रित किया है—

रहिमन जिह्व बावरी, कहिगै सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।। 6

रहीम का निम्नलिखित सोरठा बहुत प्रसिद्ध है—

रहिमन मोहि न सुहाय, अमी पियावत मान विषु।
वरु विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो।।

बरवै नायिका भेद में 120 बरवै हैं। इस कृति में विभिन्न आयु तथा स्थिति की नायिकाओं का मनोहारी वर्णन है। उत्तमा, मध्यमा, अधमा, स्वकीया परकीया, प्रोषित पतिका, अभिसारिका आदि का विवरण रहीम के प्रेमिका विषयक ज्ञान के गाम्भीर्य तथा विशदता का प्रमाण है। ज्ञात यौवना संबंधी बरवै दृष्टव्य है—

औचक आइ जोवनवाँ मोहि दुख दीन!
छुटिगा संग गोइयवाँ, नहि भल कीन!! 7

जिस प्रेमिका (नायिका) का पति बाहर गया है वह वर्षा ऋतु में कामग्रस्त है।

उसकी मन: स्थिति निम्नलिखित बरवै में चित्रित है—

या झर में घर घर में, मदन हिलोर।
पिय नहि अपने कर में, करमै खौर।। 8

प्रौढ़ा अभिसारिका की चतुराई तथा साहस निम्नलिखित बरवै से स्पष्ट होता है—

चली रैन अँधियरिया साहस गाढ़ि।
पायन केर कँगनिया डारेस काढ़ि।। 9

विस्तार मय से अन्य नायिकाओं का बखान करना संभव नहीं है। नगर शोभा नामक कृति में 142 दोहे हैं। इनमें विभिन्न जातियों की महिलाओं का शृंगारपूर्ण चित्रण किया गया है। ब्राह्मणी के विषय में निम्नलिखित दोहा है—

उत्तम जाति ब्राह्मणी, देखत चित लुभाय।
परम पाप पल में हरत, परसत वाके पाय।। 10

सुनार की पत्नी यानी सुनारिन में तो रहीम ने इतना रूप देखा कि उसे विधाता द्वारा गढ़ा बता दिया—

परम रूप कंचन वरन, सोभित नारि सुनारि।
मानों सांचे ढारि कै, विधना गढ़ी सुनारि।। 11

दूध दही बेचने वाली गूजरी गोरस (दूध-दही) तो बेचती है किन्तु रस (रूप और रंग का) ग्राहक को कतई नहीं देती—

परम ऊजरी गूजरी, दह्यो सीस पै लेइ।
गोरस के मिस डोलही, सो रस नेक न देइ।। 12

उपर्युक्त कृति में भटियारिन, काछिन, नटी, कलवारिन, डोमनी आदि का चित्रण उनके रंग-रूप और हाव-भावों सहित इस ढंग से किया गया है कि पाठक को रसाप्लावित करके ही छोड़ता है।

बरवै नामक रचना में 109 बरवै हैं जिनमें संख्या 86, 94, 95 और 96 फारसी में हैं और शेष अवधी में। इनके विषय राम, कृष्ण, प्रेमी, प्रेमिका, विरह आदि हैं। बरवै संख्या-6 में रहीम ने भी गुरू वंदना की है—

पुन पुन बन्दौ गुरू के, पद जल जात।
जिहि प्रताप तै मनके, तिमिर बिलात।। 13

अधिकांश बरवै मोहन के विरह में विदग्ध गोपी के भावों का प्रकटीकरण करते हैं यथा—

सावन आवन कहिगे, स्याम सुजान।
अजहुं न आए सजनीए तरफत प्राण।।

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

घेर रह्यो दिन रतियां, विरह बलाय।
मोहन की यह बतियां , ऊधौ हाय।। 14

अथ खेट-कौतुकम संस्कृत और फारसी मिश्रित भाषा की कृति है। इसमें रहीम ने विभिन्न ग्रह और नक्षत्रों के प्रभाव का वर्णन किया है। इससे स्पष्ट है कि वे ज्योतिष के अच्छे जानकार थे। सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, राहु-केतु आदि के फलों (प्रभाव) के निरूपण उनकी उक्त भाषाओं की जानकारी के साथ-साथ मिश्रित भाषा में काव्य रचना कौशल का भी बोध कराता है। राहुफल का प्रभाव निम्नलिखित संस्कृत फारसी भाषा में रचित श्लोक में स्पष्ट किया गया है।

पिसरखाने स्थितों रास पुत्र सौख्य विवर्जितम्।
बेहोशं दर्द शिकमं नादानं कुरूते नरम्।। 15

मदनाष्टक नामक काव्य कृत्ति में 8 छंद हैं जो मालिनी छंद में हैं। सभी मालिनी छंद मदन (अनंग) के प्रभाव का प्रभावोत्पादक वर्णन करते हैं। अधोलिखित छंद प्रस्तुत है।—

विगत घन निशीथे चांद की रोशनाई।
सघन वन निकुंजे कान्ह वंशी बजाई।।
पति, सुत, निद्रा, साइयां छोड़ भागी।
मदन शिरसि भूयः क्या बला आन लागी।। 16

उक्त काव्य कृतियों के अतिरिक्त रहीम के कुछ फुटकर छंद और पद भी प्राप्त हैं। एक छंद की अन्तिम पंक्ति उनके अपने प्रिय या आश्रयदाता के प्रति लागव का संकेत देता है—

देस में रहेंगे परदेस में रहेंगे।
काहू वेष में रहेंगे पै रावरे कहाइहौं।। 17

रहीम का निम्नलिखित छंद असंगति अंलकार का अनुपम उदाहण रहा है—

दीन चहै करतार जिन्हें सुख सो तो रहीम टरै नहि टारे।
उधम पौरूष कीने बिना धन आवत आपुहि हाथ पसारे।।
दैव हंसे अपनी अपना विधि के परपंच न जाए विचारे।
बेटा भयो वसुदेव के धाम औ, दुंदुभि वाजत नंद के द्वारे।।

रहीम का 'कमल दल नैननि की उनमानि' शीर्षक नामक पद बहुत प्रसिद्ध रहा है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि रहीम ने काव्य की विभिन्न शैलियों में रचना की। जहां दोहे नीति, भक्ति, वैराग्य आदि विषयों पर प्रकाश डालते हैं वहां बरवै, सोरठा, छप्पय आदि प्रेम, विरह और श्रृंगार के विभिन्न पक्षों का मनोहारी चित्रण करते हैं। विश्व के साहित्य में ऐसा व्यक्तित्व दुर्लभ है, जो शस्त्र और शास्त्र दोनों का धनी रहा हो।

1. रहीम, दोहावली,	दोहा संख्या	-218
2. वही	दोहा संख्या	-246
3. ''	दोहा संख्या	-180
4. ''	दोहा संख्या	-31
5. ''	दोहा संख्या	-238
6. ''	दोहा संख्या	-193
7. रहीम, बरवै वाचिका भेद-	बरवै संख्या	-10
8. रहीम, बरवै नायिका भेद-	बरवै संख्या	-46
9. '' '' ''		-82
10. रहीम नगर शोभा	दोहा संख्या	-3
11. '' '' ''		-15
12. '' '' ''		-33
13. रहीम बरवै	बरवै	-06
14. रहीम	'' बरवै	-13
15. बरवै, '' बरवै		-47
16. रहीम अथ खेट-कौतुक्रम (राहुफलम) श्लोक		-91
17. मदनाष्टक मालिनी छन्द		-6

❑

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का स्रोत है।

—सुमित्रानंदन पंत

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

तकनीकी समुन्नयन और हिंदी

— केवल कृष्ण*

विभिन्न सॉफटवेयरों में प्रयुक्त (नेमक) फॉन्ट्स का कम्पैटिबल (compatiblen) न होना तथा विभिन्न प्रकार के की-बोर्ड ले-आउट का प्रयोग हिंदी में तकनीकी कार्य करने में एक गंभीर समस्या उत्पन्न करते हैं। इस कारण यूजर हिंदी की फाइलों का, अंग्रेजी की तरह आसानी से एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर पर, आदान-प्रदान (transfer) नहीं कर पाते हैं। हिंदी पाठ (text) को दूसरे सॉफ्टवेयर में जोड़ने (paste) में भी समस्या आती है। पब्लिकेशन के सॉफ्टवेयर में यूनीकोड एनकोडिंग का कम्पैटिबल न होने के कारण नवीनतम वर्जन के पब्लिकेशन सॉफ्टवेयर में भी विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम से डाटा ट्रांसफर में कठिनाई आती है। संयुक्त अक्षरों जैसे द्वारा, द्वितीय, खट्टा, विद्यालय आदि का अलग-अलग फॉन्ट में अलग-अलग प्रदर्शित होना भी हिंदी टकंण में परेशानी पैदा करता है।

हिंदी टंकण के लिए विभिन्न प्रकार के की-बोर्ड ले-आऊट विकल्प होना जैसे-इंस्क्रिप्ट, रेमिंग्टन, फोनेटिक आदि है और इनमें से इंस्क्रिप्ट की-बोर्ड ले-आऊट को ही भारत सरकार द्वारा मानक घोषित किया है।

भारत सरकार ने हिंदी के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं के लिए यूनीकोड एनकोडिंग को मान्यता दी है जो अंतर्राष्ट्रीय मानक ISO/IEC 10646 है। इससे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर अंग्रेजी की तरह ही सरलता से सभी कार्य किए जा सकते हैं, जैसे-वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई-मेल वेबसाइट निर्माण आदि।

हिंदी टंकण के लिए विभिन्न प्रकार के की-बोर्ड ले-आऊट विकल्प होना जैसे-इंस्क्रिप्ट, रेमिंग्टन, फोनेटिक आदि है और इनमें से इंस्क्रिप्ट की-बोर्ड ले-आऊट को ही भारत सरकार द्वारा मानक घोषित किया है। फोनेटिक की-बोर्ड ले-आऊट की कोई भी मानक नहीं है। विभिन्न ऑपरेटिंग सिस्टम जैसे विंडोज, लाइनेक्स आदि में विभिन्नता के कारण रेमिंग्टन की-बोर्ड ले-आऊट में किए गए टंकण कार्य को किसी अन्य सॉफ्टवेयर जैसे वेबसाइट निर्माण, डाटाबेस आदि लोड करने में परेशानी का सामना करना पड़ता है।

भारत सरकार ने हिंदी के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं के लिए यूनीकोड एनकोडिंग को मान्यता दी है जो अंतर्राष्ट्रीय मानक ISO/IEC 10646 है। इससे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर अंग्रेजी की तरह ही सरलता से सभी कार्य किए जा सकते हैं, जैसे-वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई-मेल वेबसाइट निर्माण आदि। हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान-प्रदान तथा हिंदी की-वर्ड पर गूगल या किसी अन्य सर्च इंजन में सर्च कर सकते हैं परंतु स्क्रिप्ट व्यवहार जैसे सभी ऑपरेटिंग सिस्टम तथा सभी इंटननेट ब्राउजर में हिंदी टेक्सट एक समान प्रदर्शित होना एक जैसा नहीं है।

वर्तमान में भाषा और तकनीकी एक सिक्के के दो पहलू हैं। बिना तकनीकी के भाषा कंप्यूटर पर आगे नहीं बढ़ सकती है। इसी प्रकार यदि कंप्यूटर पर किसी भाषा विशेष में कार्य किया जाना है तो भाषा की बारीकियों का ज्ञान होना भी आवश्यक है। आज ऐसा कोई विरला ही होगा जो कंप्यूटर की तकनीक और भाषा में समान रूप से दक्ष हो। हिंदी भाषा के कंप्यूटर पर पूरी तरह से सफल न हो पाने का मूल कारण ही यह है कि जो भाषाविद हैं वे कंप्यूटर की तकनीक के विशेषज्ञ नहीं है और जो कंप्यूटर तकनीकी के विशेषज्ञ हैं वे भाषाविद् नहीं हैं।

जब फॉन्ट्स अथवा की-बोर्ड के विकल्प का निर्माण किया जाता है तब यह कमी बहुत खलती है। भाषाविद और

*वरिष्ठ तकनीकी निदेशक राष्ट्रीय सूचना-विज्ञन केन्द्र, **kewal.krishan@nic.in**

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

कंप्यूटर तकनीकी के ज्ञाता अलग-अलग होने के कारण एक-दूसरे की जरूरतों को पूरी तरह से समझ अथवा समझा नहीं पाते। इस नतीजा यह है कि कंप्यूटर पर भाषा अपने मानक रूप में उपलब्ध न होकर कुछ कमियों के साथ उपलब्ध हो रही है। भाषा और तकनीकी का यह संगम दो प्रकार का मानकीकरण चाहता है, पहला भाषा और फॉन्ट के स्तर पर दूसरा की-बोर्ड के स्तर पर। यूनीकोड एनकोडिंग से पूर्व भी कंप्यूटर पर कई प्रकार के फॉन्ट्स उपलब्ध थे जो एक-दूसरे को सपोर्ट नहीं करते थे। कमोवेश यही हाल हिंदी की बोर्ड का भी था। यूनीकोड एनकोडिंग के बाद भी उपलब्ध फॉन्ट्स में एकरूपता नहीं है। इतना जरूर है कि यूनीकोड समर्थित फॉन्ट्स एक-दूसरे को दर्शाने में समर्थ हैं किंतु इनके रूप भिन्न-भिन्न हैं। की-बोर्ड में जहां इंस्क्रिप्ट की-बोर्ड को मानक मान लिया गया है वहीं रेमिंगटन एवं फोनेटिक की-बोर्ड इस मामले में पिछड़ गए हैं। रेमिंगटन की-बोर्ड की दुरूहता जग प्रसिद्ध है तो फोनेटिक की-बोर्ड की विभिन्न शैलियां प्रचलित हैं। इनमें एकरूपता का नितांत अभाव है। फोनेटिक की-बोर्ड की प्रसिद्धि एवं मांग को देखते हुए यह जरूरी हो गया है कि इस दिशा में कोई मानक निर्धारित कर एकरूपता लायी जानी चाहिए जिससे अनिश्चितताओं पर विराम लग सके । इसके लिए अच्छे भाषाविदों और कंप्यूटर 'एक्सपर्टस' का एक साथ कार्य करना आवश्यक है। यदि इनमें तालमेल नहीं होगा तो 'एक्स्पर्ट्स' शब्द में प्रयुक्त 'रेफ' वाला 'र' कभी भी अपनले सही स्थान पर नहीं पहुंच पाएगा। भाषा के नियमानुसार यह 'र' 'स' के ऊपर लगना चाहिए क्योंकि 'स' ही स्वरयुक्त एवं पूर्ण है। जैसा कि 'पार्श्व' में 'र' 'व' के ऊपर लगा है। मंगल फॉन्ट का प्रयोग करने पर एक्स्पर्ट्स में 'र' 'ट' के ऊपर तथा Arial Unicode MS फॉन्ट का प्रयोग करने पर यह 'स' के ऊपर जा लगता है जैसे एक्स्पर्ट्स में देखा जा सकता है। वास्तव में Arial Unico MS डै वाला शब्द, हिंदी भाषा की दृष्टि से सही एवं मानक है। यही कारण है कि यूज़र को फॉन्ट भिन्नता एवं की-बोर्ड्स में एकरूपता न होने के कारण असमंजस एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

वर्तमान में भाषा और तकनीकी एक सिक्के के दो पहलू हैं। बिना तकनीकी के भाषा कंप्यूटर पर आगे नहीं बढ़ सकती है। इसी प्रकार यदि कंप्यूटर पर किसी भाषा विशेष में कार्य किया जाना है तो भाषा की बारीकियों का ज्ञान होना भी आवश्यक है।

इन कठिनाइयों के अलावा यूनीकोर्ड समर्थित फॉन्ट्स से संबंधित एक प्रमुख समस्या यह है कि इनमें किए गए कार्य को पीडीएफ में तो कन्वर्ट किया जा सकता है किंतु जब पीडीएफ से वापस वर्ड में कन्वर्ट करने का प्रयास किया जाता है तो फाइल करप्ट हो जाती है और डाटा का नुकसान हो जाता है जबकि अंग्रेजी और नॉन यूनीकोर्ड फॉन्ट्स का प्रयोग करने पर यह समस्या नहीं आती। इन सभी समस्याओं का हल यही है कि अच्छे भाषाविद कंप्यूटर तकनीकी के विशेषज्ञों के साथ मिलकर फॉन्ट्स एवं सॉफ्टवेयर तैयार कराएं जिससे इन समस्याओं से निजात पाई जा सके। ❑

भारतीय संविधान के भाग 17, अध्याय 1 के अनुच्छेद 343 में उल्लिखित प्रावधानों के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिंदी है। संघ की राजभाषा संविधान के अनुसार नागरी लिपि में लिखी जाएगी तथा अंतर्राष्ट्रीय भारतीय अंकों का उपयोग किया जाएगा।

—राजभाषा नीति

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

आधुनिक बैंकिंग एवं सूचना प्रौद्योगिकी

— देवेन्द्रसिंह रावत*

''**आवश्यकता आविष्कार की जननी है**'' यह कहावत बैंकिंग क्षेत्र में निरंतर सत्य सिद्ध हो रही है, बैंकिग क्षेत्र में हो रहे आविष्कार भी व्यक्ति की आवश्यकता या ग्राहक की आवश्यकता के अनुसार समय-समय पर होते रहें हैं—व्यक्ति समाज की वित्त की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए बैकों का गठन हुआ। उनके प्रशासन को सुदृढ़ करने तथा समाज को उनका लाभ पहुंचाने के लिए समय के साथ उनमें भी परिवर्तन होते रहे, और आज बैंक एक आधुनिक तकनीक पर, व्यक्ति की आवश्यकताएं पूर्ण करने के लिए समय के साथ बदलते जा रहे हैं। समय के साथ परिवर्तित होते हुए आज बैंक पूर्णत: सूचना प्रौद्योगिकी के आधार पर ही कार्य कर रहे हैं। बैंकिंग कोई भी कार्य सूचना प्रौद्योगिकी के बिना आज संभव नहीं है। आज यदि बैंकों को कोई नया उत्पाद आरंभ करना है, समाज के पिछड़े और वंचित वर्गों को या छोटे से छोटे दूरस्थ गांव में लोगों तक अपनी सेवा पहुचांनी हैं तो सूचना प्रौद्योगिकी का सहारा लेना होगा, क्योंकि प्रत्येक गांव में बैंक अपनी शाखा नहीं खोल सकता। आज सूचना प्रौद्योगिकी और बैंकिंग ऐसे जुड़ गए हैं कि दोनों एक दूसरे के पर्याय हो गए हैं। बैंकिंग क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र से जुड़े लोगों को भी रोजगार के व्यापक अवसर प्राप्त हुए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के व्यापक आविष्कार से इस क्षेत्र में धोखाधड़ी के भी नए-नए तरीके अपनाए जाने लगे हैं। इस लेख में सूचना प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रयोग से लाभ तथा उसके उपयोग में बरती जाने वाली सतर्कता पर विचार मंथन किया गया है।

आज बैंक एक आधुनिक तकनीक पर, व्यक्ति की आवश्यकताएं पूर्ण करने के लिए समय के साथ बदलते जा रहे हैं। समय के साथ परिवर्तित होते हुए आज बैंक पूर्णत: सूचना प्रौद्योगिकी के आधार पर ही कार्य कर रहे हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी आधारित बैंकिंग सेवाएं

बैंकिंग क्षेत्र में ग्राहकों को सामान्य रूप में दी जाने वाली सेवाएं जैसे नकदी जमा, नकदी का आहरण, आर टी जी एस द्वारा या एन ई एफ टी द्वारा धन-प्रेषण, समाशोधन सेवाएं, मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेंट बैंकिंग, कार्ड द्वारा भुगतान प्रणाली, कार्ड द्वारा नकदी आहरण तथा धन अंतरण, उत्पाद विकास, प्रबंधन सूचना प्रणानी, विनियामक सूचना प्रणाली, जोखिम प्रबंधन, ग्राहक संबंध प्रबंधन, धोखाधड़ी निगरानी, धन शोधन निगरानी, आदि सभी सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा ही संचालित होते हैं। देश के दूरस्थ इलाकों में लोगों तक बैंकिंग सेवाएं एक हस्त चलित उपकरण, जिसे हैंड हेल्ड डिवाइस के नाम से जाता है, के माध्यम से बैंकिंग सेवाएं पहुंचाई जा रही है। इसके माध्यम से वे लोग कई मील दूर स्थित शाखा के साथ अपने स्थानीय कारोबार प्रतिनिधि के माध्यम से अपने लेनदेन कर सकते हैं। इससे उन लोगों को एक बड़ा सहारा मिला है। वे सरकारी योजनाओं के अंतर्गत चलाए जाने वाले कार्यों की मजदूरी अपने बैंक के कारोबारी प्रतिनिधि से प्राप्त कर सकते हैं और रकम जमा भी करवा सकते हैं। वे कई स्थानों पर लगे बायोमैट्रिक ए टी एम के माध्यम से अपने खाते से नकदी भी ले सकते हैं। इसे समाज के एक बड़े वंचित वर्ग तक के बैंकिंग सेवाएं पहुंचाने में सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान कहा जा सकता है।

* बी-122, प्रयाग अपार्टमेंट, बी-1, वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली - 110016, मो॰ 7838671373

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

बैंकिंग क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग के प्रमुख पड़ाव

बैंकिंग क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के कार्यान्वयन के प्रमुख पड़ाव निम्न प्रकार हैं:–

- 1980 और 1990 के दशक में कार्ड आधारित भुगतान आरंभ हुए जिनमें शामिल हैं डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड।
- 1990 के दशक में इलेक्ट्रॉनिक भुगतान प्रणाली आरंभ हुई।
- 2000 के प्रारंभ में इलेक्ट्रॉनिक निधि अंतरण का शुभारंभ हुआ।
- मार्च 2004 में धन अंतरण के लिए आर टी जी एस प्रणाली का शुभारंभ हुआ।
- वर्ष 2005 / 2006 में इलेक्ट्रॉनिक निधि अंतरण के स्थान पर एन ई एफ टी प्रणाली आरंभ हुई।
- वर्ष 2007 में चेक ट्रेकेशन प्रणाली आरंभ हुई।
- निजि क्षेत्र के नये बैंकों में नब्बे के दशक में और सरकारी क्षेत्र के बैंकों में वर्ष 2003–04 के बाद सी बी एस का कार्यान्वयन आरंभ हुआ। जिससे ग्राहकों को कहीं भी और कहीं से भी अपने खाते का परिचालन करने की सुविधाएं प्राप्त करने का विकल्प प्राप्त हुआ।
- बैंकिंग क्षेत्र में इंटरनेट बैंकिंग का शुभारंभ हुआ।
- सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग डेटा संग्रहण, ग्राहक संबंध प्रबंधन, समन्वित राजकोष प्रबंधन, जोखिम प्रबंधन, मानव संसाधन प्रबंधन, विभिन्न विनियामक रिपोर्टें प्रस्तुत करने आदि के किया जाना आरंभ हुआ।
- वित्तीय समावेशन का कार्य पूरा करने के लिए दूर दराज के गांवों तक बैंकिंग सेवाएं पहुंचाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग आरंभ हुआ।
- विभिन्न बिलों का भुगतान कार्डों, इंटरनेट, आदि के माध्यम से आरंभ हुआ।
- इस श्रृखंला में मोबाइल बैंकिंग भी शामिल हो गई है।
- 24 घंटे उपलब्ध स्वयं–परिचालित ई–बैंकिंग सुविधाएं।

आज यदि बैंकों को कोई नया उत्पाद आरंभ करना है, समाज के पिछड़े और वंचित वर्गों को या छोटे से छोटे दूरस्थ गांव में लोगों तक अपनी सेवा पहुचांनी हैं तो सूचना प्रौद्योगिकी का सहारा लेना होगा।

बैंकिंग क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रयोग से बढ़ते लाभ

1. ग्राहकों की सुविधा के अनुसार सेवाएं

सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग से ग्राहकों को दी जाने वाली सुविधाएं बढ़ी हैं। आज ग्राहक 24 घंटे अपनी आवश्यकता के अनुसार ए टी एम से अपनी रकम आहरित कर सकता है। ई–बैंकिंग कक्षों के माध्यम से 24 घंटे अपने खाते का परिचालन स्वयं कर सकता है। बैंक ग्राहकों के साथ संपर्क बनाने के लिए ई–मेल, अपनी वेब साइट सोसियल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं। साथ ही ग्राहकों को बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने के लिए अपनी वेबसाइट का भी उपयोग कर रहे हैं। सोसियल पीडिया के माध्यम से बैंक अपनी सेवाओं के बारे में प्राप्त सूचनाएं भी ग्राहक से प्राप्त कर रहे हैं और अपने नए–नए उत्पाद भी ग्राहकों तक इसी माध्यम से बड़ी कुशलता से और तेजी से पहुंचा रहे है।

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

2. विनियामक आवश्यकताओं की पूर्ति

बैंक अपनी विनियामक आवश्कताओं पूरी करने के लिए प्रबंधन सूचना प्रणाली हेतु सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहे हैं, जिससे आंकड़ों की शुद्धता और पारदर्शिता बढ़ी है और बैंकिंग प्रणाली में विनियामकों और ग्राहकों का विश्वास बढ़ा है।

3. वित्तीय समावेशन का कार्यान्वयन

वित्तीय समावेशन को कार्यान्वित करने में सूचना प्रौद्योगिकी का बहुत बड़ा योगदान है। आज देश के दूर-दराज के गांवों के लोग भी कारोबार प्रतिनिधि द्वारा संचालित हस्त चलित उपकरण के माध्यम से अपने बैंक खाते का परिचालन कर सकते हैं। वह अपनी रकम आहरित कर सकते हैं, रकम जमा कर सकते हैं और कुछ मात्रा में अपनी आवश्यकता के ऋण भी प्राप्त कर सकते हैं। सरकार इसके माध्यम से समाज के अब तक बैंकिंग सेवाओं से वंचित परिवारों को बैंकिंग और बीमा सेवाएं पहुंचाने के लिए कार्य कर रही है। इस प्रकार प्रौद्योगिकी समाज के आर्थिक विकास में सहायक हो गई है।

ई-बैंकिंग कक्षों के माध्यम से 24 घंटे अपने खाते का परिचालन स्वयं कर सकता है। बैंक ग्राहकों के साथ संपर्क बनाने के लिए ई-मेल, अपनी वेब साइट सोसियल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं। साथ ही ग्राहकों को बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने के लिए अपनी वेबसाइट का भी उपयोग कर रहे हैं।

4. ग्राहक सेवा में कुशलता

आज ग्राहक अपने खाते का परिचालन, अपने धन का अंतरण आदि सभी कार्य इंटरनेट या मोबाइल के माध्यम से अपने घर या कार्यालय में बैठकर ही कर सकता है। वह अपने खाते का विवरण या खाते में परिचालन की जानकारी अपने मोबाइल पर प्राप्त कर सकता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ग्राहक के मोबाइल पर उसके बैंक की शाखा खुल गई है, जिसके माध्यम से वह अपने खाते का परिचालन कर सकता है। प्लास्टिक कार्ड के माध्यम से अपनी खरीद की आवश्यकताएं और नकदी आहरण की आवश्यकताएं पूर्ण कर सकता है। इससे ग्राहकों को सुविधाएं मिली हैं साथ की बैंक के कर्मचारियों का कार्य भी कम हो गया है, जिससे बैंकों की जनशक्ति भी कम हुई है। इस प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग से बैंकों के ग्राहकों को घर बैठे अपना बैंकिंग का कामकाज करने की सुविधा मिली है।

सूचना प्रौद्योगिकी आधारित उत्पादों के प्रयोग में जोखिम

सूचना प्रौद्योगिकी के अधिकतम उपयोग से व्यक्ति की सुविधाओं में अपार वृद्धि हुई है, वहीं दूसरी ओर इस आविष्कार का दुरुपयोग करने के तरीके भी सामने आ रहे हैं। जिस गति से सूचना प्रौद्योगिकी का विकास व्यक्ति और समाज के लिए सुविधाएं सृजित करने के लिए हुआ है, उसी गति से धोखाधड़ी करने वाले लोग उस प्रौद्योगिकी का उपयोग धोखाधड़ी करने के लिए कर रहे हैं, धोखेबाज व्यक्ति किसी के खाते का पास वर्ड हैक करके उसके खाते से धन अंतरण कर सकते हैं, उसे किसी शाखा में जाने की जरूरत नहीं है, वह मोबाइल के माध्यम से ही यह सभी तरह की जालसाजी भी कर सकता है। प्लास्टिक कार्ड के माध्यम से किसी विक्रेता के स्थान पर भुगतान करने से कार्ड की क्लोनिंग का जोखिम बढ़ गया हैं। कार्ड की क्लोनिंग किये जाने पर कहीं से भी कार्ड का उपयोग करके खरीददारी की जा सकती है।

सूचना प्रौद्योगिकी आधारित जोखिमों से बचाव

किसी भी आविष्कार से जहां समाज को लाभ होते हैं, उसका नकारात्मक रूप में उपयोग करने से समाज को और व्यक्ति को बहुत बड़े नुकसान भी हो सकते हैं। परमाणु उर्जा इस क्षेत्र का बहुत बड़ा उदाहरण है। उससे बिजली बनाकर बड़े-बड़े उद्योग संचालित किए जा सकते हैं। विश्व को रोशनी दी जा सकती है, लेकिन अगर उसका गलत उपयोग किया जाए तो उससे परमाणु बम भी बनाए जा सकते हैं। इसी

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

तरह सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से ग्राहकों को घर बैठे बैंकिंग सेवाएं प्राप्त करने और अपने खाते को परिचालन करने का लाभ मिला है ,लेकिन उससे उनके खाते के परिचालन के पासवर्ड की हैकिंग का जोखिम भी बढ़ गया है, इसलिए, आज यह आवश्यक हो गया है कि जब कभी बैंक नए उत्पाद आरंभ करें, उसको धोखाधड़ी से बचाने के लिए सुरक्षा के उपाय भी साथ-साथ किए जाने चाहिए। कुछ बैंकों ने अपने कार्डो के द्वारा भुगतान के समय अतिरिक्त पासवर्ड की सुविधा आरंभ की है, जिससे कुछ स्तर तक कार्ड भुगतान सुरक्षित हो सका है। मोबाइल बैंकिंग सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा नवीनतम आविष्कार है, उसके सुरक्षा चक्र को भेदने के लिए भी हैकर्स अपनी तैयारी कर रहे हैं, हाल ही में एक चालू खाते से हुई एक बड़ी रकम के अंतरण की घटना इसका ज्वलंत उदाहरण है,जिसमें मोबाइल के द्वारा कई खातों में धन अंतरण किया गया।

अगले दशक में सूचना प्रौद्योगिकी और बैंकिंग

सूचना प्रौद्योगिकी का विकास और बैंकिंग में उसके बढ़ते प्रयोग से अगले दशक में बैंकिंग क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन होने की संभावनाएं हैं। वर्तमान में समाज का एक सुशिक्षित वर्ग ही इंटरनेट बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग का उपयोग कर रहा है। अगले दशक तक यह सुविधा समाज का निचला वर्ग या आम आदमी भी करने लगेगा, क्योंकि वित्तीय समावेशन के लिए इसी माध्यम का उपयोग अधिक किया जाएगा। बैंकिंग क्षेत्र में पेपरलेस बैंकिंग हो जाएगी,क्योकि सभी सूचनाएं ईमेल के माध्यम से भेजी जानी आरंभ हो गई हैं, अगले दशक तक यह व्यवस्था सुचारू रूप में उपयोग में आ जाएगी। साथ ही, साईबर धोखाधड़ी की संभावनाएं बढ़ जाएगी, क्योंकि हैकर भी हमेशा नई-नई तकनीकियों का प्रयोग करने लगे हैं। इसके लिए बैंकिंग क्षेत्र को भी साइबर सुरक्षा घेरे को और मजबूत करने के लिए प्रयास करने पड़ेंगे। बैंकिंग के कार्य एटीएम, मोबाइल और नेटबैंकिंग के माध्यम से होने पर तथा शाखाओं में ग्राहकों के कम आने पर ग्राहकों से संपर्क के लिए भी इंटरनेट और सोसियल नेटवर्किंग का माध्यम अपनाना होगा, ताकि ग्राहकों से निरंतर संपर्क बनाए रखा जा सके। ग्राहकों को बैंक की सेवाओं और उत्पादों के बारे में जानकारी देने के लिए इंटरनेट का अधिकतम उपयोग किया जायेगा।

वर्तमान में समाज का एक सुशिक्षित वर्ग ही इंटरनेट बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग का उपयोग कर रहा है। अगले दशक तक यह सुविधा समाज का निचला वर्ग या आम आदमी भी करने लगेगा, क्योंकि वित्तीय समावेशन के लिए इसी माध्यम का उपयोग अधिक किया जाएगा।

बैंकिंग के कार्य एटीएम, मोबाइल और नेटबैंकिंग के माध्यम से होने पर तथा शाखाओं में ग्राहकों के कम आने पर ग्राहकों से संपर्क के लिए भी इंटरनेट और सोसियल नेटवर्किंग का माध्यम अपनाना होगा, ताकि ग्राहकों से निरंतर संपर्क बनाए रखा जा सके।

उपसंहार

सूचना प्रौद्योगिकी से बैंकिंग क्षेत्र में पारदर्शिता आई है, ग्राहकों को सुविधाएं मिली हैं, बैंकों ने ग्राहकों की आवश्यकताओं के अनुसार अपने नए उत्पाद तैयार किए हैं, जिससे उनका ग्राहक आधार बढ़ा है और कारोबार भी बढ़ा है। साथ ही बैंक इससे अपने प्रबंधकीय और नियामक अनुपालन के कार्य कुशलता से कर रहे हैं। शाखाओं में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से स्वच्छता का वातावरण बना है। पेपरलेस बैंकिंग की धारणा उत्पन्न हुई है। ग्राहक अपने खाते का परिचालन स्वयं घर बैठे ही कर सकता है। लेकिन इससे उसके खाते के साथ धोखाधड़ी की संभावनाएं भी बढ़ गई हैं। साइबर क्राइम रोकने के लिए सरकार सचेत हुई है और कुछ नए कानून भी बने हैं। लेकिन अंततः कहा जा सकता है कि सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग से आम व्यक्ति के लिए सुविधाएं बढ़ी हैं और बैंकों को अपने प्रबंधन करने में सहायता मिली है। इससे समाज के आर्थिक विकास में भी सहायता मिली है। ❑

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

तेल ताड़ की खेती

— डॉ॰ एस॰ आर॰ यादव*

तेल ताड़ (इलेइस गिनीनसिे जैक्) पश्चिमी अफ्रीका के गिनी तट का देशज कहलाता है। यही इसका उद्गम स्थल है जहां यह अद्र्ध जंगली या जंगली रूप में पाया जाता है। यह पामी परिवार तथा कोकोइनी जाति के अंतर्गत आता है। बहुवर्षीय तिलहनों में तेल ताड़ सर्वाधिक तेल उत्पादन करने की क्षमता रखता है। इसकी खेती से दो विभिन्न तेल अर्थात् ताड़ तेल और ताड़ भ्रूण तेल प्राप्त होते हैं। ऐतिहासिक तथ्यों से ताल तेड़ की उपयोगिता पांच हजार वर्षों से ज्ञात होती है। तेल ताड़ (ऑयल पॉम) संसार में अधिकतम खाद्य तेल उत्पादन करने वाली फसल है। इस फसल का उत्पादन प्रतिवर्ष 4 से 6 टन प्रति हेक्टेयर आंका गया है।

तेल ताड़ की फसल विश्व के वनस्पतिक तेल भंडार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। वर्तमान में विश्व में तेल उत्पादन की दृष्टि से तेल ताड़ की खेती का द्वितीय स्थान है। देश में विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस शाताब्दी के अंत तक तेल ताड़ की खेती प्रथम स्थान पर आ सकती है।

तेल ताड़ की फसल विश्व के वनस्पतिक तेल भंडार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। वर्तमान में विश्व में तेल उत्पादन की दृष्टि से तेल ताड़ की खेती का द्वितीय स्थान है। देश में विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस शाताब्दी के अंत तक तेल ताड़ की खेती प्रथम स्थान पर आ सकती है। देश में खाद्य तेलों की दिन प्रतिदिन बढ़ती मांग की भरपाई करने के लिए सरकार को विदेशों से इसका आयात करना पड़ रहा है जिसमें देश का विदेशी मुद्रा भंडार आड़े आ रहा है। इन्हीं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने तेल ताड़ की खेती को बढ़ावा दिया है क्योंकि यह एक ऐसी फसल है जो कि अधिकतम तेल उत्पादन दे सकती है। भारत में आंध्र प्रदेश और कर्नाटक दो ऐसे राज्य हैं जहां अन्य राज्यों की तुलना में तेल ताड़ (ऑयल पॉम) की खेती की अधिक संभावनाएं हैं।

भारत में सबसे पहले राष्ट्रीय वनस्पति बाग, कोलकाता में 1886 में स्थापित किया गया। इसके बाद महाराष्ट्र फॉर कल्टिवेशन ऑफ साईंसेस (एम॰ए॰सी॰एस॰) द्वारा 1947 से 1959 के दौरान अफ्रिकन ड्यूरा ताड़ों को भारत में लाया गया। वर्ष 1960 में केरल सरकार ने नाइजीरिया और मलेशिया से रोपण सामग्री लाकर तेल ताड़ स्टेशन को स्थापित किया। इस प्रकार देखा जाए तो वास्तविक रूप में भारत में तेल ताड़ की व्यावसायिक खेती 1971 में ऑयल पॉम इंडिया लिमिडेड ने आरंभ की थी। बाद में वर्ष 1973 में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में भी इसकी खेती शुरू की गई। इस फसल की उत्पादक क्षमता को देखते हुए भारत सरकार ने डॉ॰ के॰ एल॰ चड्ढा, डॉ॰ पी॰ रत्नम, डॉ॰ के॰ एम॰ तिवारी जैसी महान विभुतियों की अध्यक्षताओं में कई समिति यां और कार्यकारी समूहों का गठन किया। इनके अध्ययन से ज्ञात हुआ कि देश के 11 राज्यों के 7.96 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में तेल ताड़ की खेती की जा सकती है।

तेल ताड़ की व्यावसायिक स्तर पर खेती उष्ण कटिबंध वातावरण वाले देशों में बहुतायत होती है। हालांकि भारत में इसकी खेती बहुत पहले से ही की जा रही है परंतु व्यावसायिक खेती के रूप में सर्वप्रथम 1960 में केरल राज्य की इसकी खेती असिंचित दशाओं में आरंभ की गई। केरल की दशाओं में तेल की उपज बहुत कम होती है। यह उपज औसतन 0.5 से 1.0 टन प्रति हैक्टेयर आंकी गई है। जबकि इसके ठीक विपरीत आंध्र प्रदेश और कर्नाटक राज्य में डी॰आर॰डी॰ए॰ तथा डी॰बी॰टी॰ कार्यक्रमों के अंतर्गत लगाए प्रदर्शनों में अधिक उपज प्राप्त हुई। यहां तक भी देखा गया है कि आंध्र प्रदेश राज्य के कुछ किसानों ने तो तेल ताड़ के रोपण के छटे वर्ष में ही 5 टन के बराबर अर्थात 25 टन एफ.एफ.बी.

* सहायक निदेशक, केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान संतोषनगर, डाकघर-सैदाबाद, हैदराबाद-500 059

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

की उपज प्राप्त की है। इसकी खेती के लिए जिन नए क्षेत्रों की पहचान की गई है उनमें इसे अधिक सघन और प्रतियोगात्मक होना पड़ेगा क्योंकि इन क्षेत्रों में उसे अनेक उन व्यावसायिक फसलों से प्रतियोगिता करनी पड़ेगी जो सिंचित क्षेत्रों तथा अच्छे भू-जल उपलब्धता वाले क्षेत्रों में प्रमुख तौर पर उगाई जाती हैं। किसानों को वैज्ञानिक प्रौद्योगिकियों का अवश्य सहारा लेना होगा ।

भारत में खाद्य तेलों के उत्पादन की दिशा में तेल ताड़ की खेती का प्रमुख स्थान है। इसके क्षेत्रफल में प्रतिवर्ष निरंतर वृद्धि दर्ज की जा रही है। तेल ताड़ की खेती से किसानों को पूरे साल लगातार आमदनी होती रहती है। इसके साथ ही खाद्य तेल का जहाँ एक ओर निरंतर उत्पादन होता रहता है वहीं दूसरी ओर उसकी आपूर्ति भी होती रहती है। भारत में किसानों को तेल ताड़ की खेती करने के लिए केंद्र और राज्य सरकार की ओर से निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है।

भारत में इसकी खेती बहुत पहले से ही की जा रही है परंतु व्यावसायिक खेती के रूप में सर्वप्रथम 1960 में केरल राज्य की इसकी खेती असिंचित दशाओं में आरंभ की गई।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और गैर-सरकारी संगठनों व निजी कंपनियों के सहयोग से इसकी खेती में उत्पादन बढ़ाने और कृषि लागत कम करने के लिए आजकल वैज्ञानिक तरीकों को अपनाया जा रहा है। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा सिफारिश की गई तकनीकियों और प्रौद्योगिकियों को अपनाने से इसकी खेती में बहुत लाभ लिया जा सकता है। कृषि मंत्रालय के भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा आंध्र प्रदेश के पश्चिमी गोदावरी जिले के पेदावेगी में 19 फरवरी, 1995 में तेल ताड़ अनुसंधान केंद्र की स्थापना की जिसका वर्ष 2009 में उन्नयन कर उसे तेल ताड़ अनुसंधान निदेशालय का दर्जा प्रदान किया । यह निदेशालय किसानों को निरंतर नवीन प्रौद्योगिकी से अवगत कराने हेतु प्रयासरत है।

परिषद के पेदावेगी स्थित इस अनुसंधान निदेशालय द्वारा तेल ताड़ के मूलभूत तथा अनुप्रयोगात्मक आयामों में शोध के साथ-साथ तेल ताड़ की खेती के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी का विकास भी किया जा रहा है। इस निदेशालय का उद्देश्य तेल ताड़ की खेती व प्रसंस्करण में लगे लोगों जैसे कि विभिन्न राज्यों के विभागों के कृषि तथा उद्यान विकास अधिकारियों, विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालय के शिक्षा संकायों के सदस्यों, उद्यमियों तथा कृषिकों को प्रशिक्षण देना भी है।

भारत में खाने के तेलों की कमी को ध्यान में रखते हुए तेल ताड़ की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू॰एन॰डी॰पी॰) ने तिलहन व दलहन प्रौद्योगिकी मिशन के माध्यम से तेल ताड़ की खेती में संलग्न किसानों को प्रशिक्षण देने के लिए एक महत्वपूर्ण परियोजना को मंजूरी देते हुए वित्तीय सहायता प्रदान की थी। इस परियोजना के अंतर्गत दो वर्ष की समयावधि में दो सौ अधिकारियों तथा छ:हजार कृषकों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

तेल ताड़ एक नम उष्ण जलवायु की फसल है। इसे 150 मि॰मी॰ प्रतिमाह वर्षा या 2500 से 4000 मि॰मी॰ प्रति वर्ष समान रूप से वितरित वर्षा की आवश्यकता रहती है। हालांकि भारत जैसे विशाल देश में वर्षा का वितरण असमान और अपर्याप्त है। अतः इस फसल की खेती केवल निश्चित सिंचाई साधनों वाले क्षेत्रों में वैज्ञानिकों द्वारा सिफारिश की गई प्रौद्योगिकी के सहारे करनी होगी। इसकी खेती के लिए अधिकतम तापमान 29 से 33 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस आवश्यक है। केवल यही नहीं अपितु इसे प्रतिदिन कम से कम पांच घंटे सूर्य की तेज धूप की भी आवश्यकता रहती है। कुल मिलाकर इसके लिए 80 प्रतिशत से अधिक आर्द्रता आवश्यक है।

लगभग हर तरह की मृदा में इसकी भरपूर खेती की उपज

संदर्भ: तेल ताड़ अनुसंधान निदेशालय द्वारा प्रकाशित प्रोफाइल, संदर्भ सामग्री, स्मारिका व अन्य पम्पलैट।

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

की पैदावार ली जा सकती है। आद्र, अच्छे जल निकास वाली, गहरी जलोढ़ मिट्टियाँ, जिनमें कार्बनिक पदार्थ पर्याप्त मात्रा में हो और जिनमें जल रिसाव अच्छा हो, इसकी खेती के लिए सर्वोत्तम आंकी गई हैं। इसकी फसल के रोपण हेतु मृदा की गहराई कम से कम एक मीटर होनी चाहिए। अत्यधिक क्षारीय, अम्लीय, जल प्लावित तथा तटीय रेतीली मृदाओं में तेल ताड़ की खेती कदापि नहीं करनी चाहिए। हालांकि इस फसल का रोपण किसी भी समय में किया जा सकता है, फिर भी, जून-दिसंबर माह जो कि मानसून का समय है, इसके लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है। ग्रीष्म ऋतु में रोपित फसल हेतु पर्याप्त सिंचाई, पलवार तथा आच्छादन फसलों, जैसे-सनई को थाले में दो से तीन पंक्तियों में बुवाई करने से गर्मी में बचाव किया जा सकता है। रोपण के लिए प्रयोग में 12 से 14 माह के ऐसे स्वस्थ पौधे, जिनकी ऊंचाई एक से 1.3 मीटर हो तथा 13 कार्यात्मक पंक्तियाँ हों और उनके कॉलर क्षेत्र की मोटाई अच्छी हो, लाना चाहिए।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और गैर-सरकारी संगठनों व निजी कंपनियों के सहयोग से इसकी खेती में उत्पादन बढ़ाने और कृषि लागत कम करने के लिए आजकल वैज्ञानिक तरीकों को अपनाया जा रहा है। कृषि वैज्ञनिकों द्वारा सिफारिश की गई तकनीकियों और प्रौद्योगिकियों को अपनाने से इसकी खेती में बहुत लाभ लिया जा सकता है।

तेल ताड़ की वृद्धि एवं विकास के लिए संतुलित तथा पर्याप्त मात्रा में प्राथमिक, दृवितीयक तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों की आवश्यकता रहती है। वर्षाधीन तेल ताड़ बागानों के लिए उर्वरकों की मात्रा को इस सारणी में दर्शाया गया है—

सारणी: तेल ताड़ हेतु अनुशंसित उर्वरक मात्रा

पोषक तत्व ग्राम प्रति ताड़ प्रतिवर्ष

ताड़ की आयु	नाइट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश	मैग्नीशियम
प्रथम वर्ष	400	200	400	125
द्वितीय वर्ष	800	400	800	250
तृतीय और बाद के वर्ष	1200	600	1200	500

तेल ताड़ की फसल का सिंचित क्षेत्रों में भी भरपूर उत्पादन किया जा सकता है। सिंचित क्षेत्रों में उर्वरकों की कुल मात्रा को तीन महीने के अंतराल पर देना चाहिए। रोपण के नए पौधों में उर्वरक की पहली मात्रा रोपण के तीन माह में देनी चाहिए। इसकी फसल में खरपतवारों को निरंतर हाथों से या संस्तुत खरपतवार नाशकों द्वारा नष्ट करते रहना चाहिए।

भारत में तेल ताड़ की सफलता काफी हद तक अच्छे गुणवत्ता वाले बीजों की उपलब्धता एवं आपूर्ति पर निर्भर करती है। प्राप्त परिणामों से ज्ञात होता है कि अभी तक भारत के ग्यारह राज्यों में लगभग आठ लाख हेक्टेयर का क्षेत्र इसकी खेती के लिए उपयुक्त पाया गया है। भारत में 1980 के दशक में बड़े पैमाने पर इसकी खेती आरंभ की गई। देशी रोपण सामग्री के महत्व और आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए तथा इसके शंकर अंकुरों के लिए बढ़ती हुई मांग को पूरी करने के लिए देश के विभिन्न स्थानों पर इसके छः बीज केंद्रों की स्थापना की गई। देश में इसकी शंकर बीज के उत्पादन की प्रक्रिया सर्वप्रथम 1982 में शुरू की गई। नाइजीरिया से भरपूर विदेशी मुद्रा प्रदान करने के उपरांत इसकी किस्मों का अब भारत में ही भरपूर मात्रा में उत्पादन किया जा रहा है परंतु किसानों में इसकी बढ़ती मांग के कारण अभी भी हम आत्मनिर्भर नहीं हो पाए है, जिसके लिए निरंतर प्रयास करते रहना होगा। हमें अपने विदेशी मुद्रा भंडार को बचाए रखने के लिए इसकी देशी किस्मों में निरंतर वैज्ञानिक तरीकों से सुधार करते रहना होगा। यह एक ऐसी फसल है जिससे किसान को परिपक्वता के उपरांत अगले 25 वर्षों तक एक निर्धारित आय प्राप्त होती रहती है। ❑

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

डेंगू बुखार

— डॉ॰ संजीव गोयल*

यह क्या होता है

डेंगू बुखार एक आम फैलने वाला रोग है। इसकी मुख्य विशेषताएं है

1. तीव्र बुखार

2. अत्यधिक शरीर दर्द तथा सिर दर्द

बच्चों में इस बीमारी की तीव्रता अधिक होती है। यह बीमारी यूरोप महाद्वीप को छोड़कर पूरे विश्व में होती है। प्रतिवर्ष पूरे विश्व में लगभग 2 करोड़ लोगों को डेंगू बुखार होता है।

यह किस कारण होता है

यह फ्लैवीवायरस (Flavivirus) नाम के वायरस (विषाणु) द्वारा होता है जिसके चार विभिन्न प्रकार हैं। इस बीमारी को हड्डी तोड़ बुखार कहा जाता है क्योंकि इसके कारण शरीर व जोड़ों में बहुत दर्द होता है।

डेंगू फैलता कैसे है

मलेरिया की तरह डेंगू बुखार भी मच्छरों के काटने से फैलता है। इन मच्छरों को 'एडीज मच्छर' कहते है। ये मच्छर दिन में भी काटते हैं। भारत में यह रोग बरसात के मौसम में सबसे अधिक होता है।

संक्रामक काल: जिस दिन डेंगू वायरस का संक्रमित कोई मच्छर किसी व्यक्ति को काटता है तो उसके लगभग 3.5 दिनों बाद ऐसे व्यक्ति में डेंगू के लक्षण प्रकट हो सकते हैं। यह संक्रामक काल 3–10 दिनों तक भी हो सकता है।

मलेरिया की तरह डेंगू बुखार भी मच्छरों के काटने से फैलता है। इन मच्छरों को 'एडीज मच्छर' कहते है। ये मच्छर दिन में भी काटते हैं। भारत में यह रोग बरसात के मौसम में सबसे अधिक होता है।

डेंगू बुखार तीन प्रकार के होते है:—

1. क्लासिकल (साधारण) डेंगू बुखार

2. डेंगू हमरेजिक बुखार (DHF)

3. डेंगू शॉक सिन्ड्रॉम (DSS)

1. क्लासिक (साधारण) डेंगू बुखार

- ठंड लगने के साथ अचानक तेज बुखार चढ़ना
- सिर, मासपेशियों तथा जोड़ों में दर्द होना।
- आंखों के पिछले भाग में दर्द होना जो आंखों को दबाने या हिलाने से और भी बढ़ जाता है।
- अत्यधिक कमजोरी, भूख में बेहद कमी
- मुंह के स्वाद का खराब होना
- गले में दर्द होना
- रोगी बेहद दुखी तथा बीमार महसूस करता है
- शरीर पर लाल ददोरे (रैश) का होना। शरीर पर लाल–गुलाबी दरोरे निकल सकते हैं।
- गर्दन तथा छाती पर विसरित (Diffuse) दानों की तरह के ददोरे हो सकते हैं। बाद में यह ददोरे और भी स्पष्ट हो जाते हैं।

साधारण (क्लासिकल) डेंगू बुखार की अवधि लगभग 5–7 दिन तक रहती है। अधिकतर मामलों में साधारण डेंगू

* भीम सेन सच्चर सामान्य अस्पताल, पानीपत–(हरियाणा) मो॰ 9516131888

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

बुखार ही होता है। साधारण डेंगू बुखार एक स्वयं ठीक होने वाली बीमारी है तथा इसमें मृत्यु नहीं होती।

2. डेंगू हमरेजिक बुखार (DHF)

साधारण (क्लासिकल) डेंगू बुखार के लक्षणों के साथ-साथ निम्नलिखित लक्षणों में से एक भी लक्षण प्रकट होता है तो डेंगू हमरेजिक बुखार होने का शक करना चाहिए।

- नाक मसूढ़ों से खून आना
- शौच या उल्टी में खून
- त्वचा पर गहरे नीले-काले रंग में छोटे या बड़े चिकते पड़ जाना

यदि रोगी की किसी स्वास्थ्य कर्मचारी द्वारा टोर्निके टेस्ट किया जाए तो यह पॉजिटीव पाया जाता है। डेंगू बुखार से ग्रस्त रोगी को बीमारी के शुरू के 6-7 दिनों में मच्छरदानी से ढके हुए बिस्तर पर ही रखें ताकि मच्छर उस तक न पहुंच पायें।

(3) डेंगू शॉक सिन्ड्रोम (DSS)

इस प्रकार के डेंगू बुखार में डेंगू हमरेजिक बुखार (DHF) के ऊपर बताए गए लक्षणों के साथ-साथ ''शॉक'' की अवस्था के कुछ लक्षण भी प्रकट हो जाते है।

- रोगी अत्यधिक बेचैन हो जाता है और तेज बुखार के बावजूद भी उसकी त्वचा ठंडी महसूस होती है।
- रोगी धीरे-धीरे होश खोने लगता है।
- यदि रोगी की नाड़ी देखी जाए तो वह तेज और कमजोर महसूस होती है। रोगी का रक्तचाप (ब्लडप्रेशर) कम होने लगता है।
- DHF और DSS का तुरंत उपचार शुरु नहीं किया जाता है तो ये जानलेवा हो सकते हैं।

उपचार:

यदि रोगी को साधारण (क्लासिकल) डेंगू बुखार है तो उसका उपचार व देखभाल घर पर की जा सकती है। चूंकि यह स्वयं ठीक होने वाला रोग है इसलिए केवल लाक्षणिक उपचार ही चाहिए।

उदाहरण के तौर पर:

- स्वास्थ्य कर्मचारी की सलाह के अनुसार पेरासिटामॉल की गोली या शरबत लेकर बुखार को कम रखिए।
- रोगी को डिस्प्रिन, एस्प्रिन कभी ना दें।
- यह बुखार 102 F से अधिक है तो बुखार को कम करने के लिए हाइड्रोथेरेपी (जल चिकित्सा) करें।
- सामान्य रूप से भोजन देना जारी रखें। बुखार की स्थिति में शरीर को और अधिक भोजन की आवश्यकता होती है।
- रोगी को आराम करने दें।

यदि रोगी में DHF या DSS की ओर संकेत करने वाला एक भी लक्षण प्रकट होता नज़र आए तो शीघ्रातिशीघ्र रोगी को निकटतम अस्पताल में ले जाएं ताकि वहां आवश्यक परीक्षण करके रोग का सही निदान किया जा सके। प्लेटलेट्स एक प्रकार की रक्त कोशिकाएं होती है जो DHF तथा DSS में कम हो जाती हैं। यह भी याद रखने योग्य बात है कि डेंगू बुखार के प्रत्येक रोगी को प्लेटलेट्स चढ़ाने की आवश्यकता नहीं होती।

प्लेटलेट्स एक प्रकार की रक्त कोशिकाएं होती है जो DHF तथा DSS में कम हो जाती हैं। यह भी याद रखने योग्य बात है कि डेंगू बुखार के प्रत्येक रोगी को प्लेटलेट्स चढ़ाने की आवश्यकता नहीं होती।

- यदि समय पर सही निदान करके जल्दी उपचार शुरु कर दिया जाए तो DHF तथा DSS का संपूर्ण उपचार संभव है।

रोकथाम:

डेंगू बुखार की रोकथाम सरल, सस्ती तथा बेहतर है। आवश्यकता है कुछ सामान्य उपाय बरतने की-जैसे:-

- एडीज मच्छरों का प्रजनन (पनपना) रोकना।
- एडीज मच्छरों के काटने से बचाव।

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

एडीज मच्छरों का प्रजनन रोकने के उपाय

- मच्छर केवल पानी के स्रोतों जैसे कि नालियों, गड्ढों, रूम कूलर्स, टूटी बोतलों, पुराने टायर्स व डिब्बों तथा ऐसी ही अन्य वस्तुओं में, जहां पानी ठहरता हो, में ही पैदा होते हैं।
- अपने घर में और उसके आस-पास पानी एकत्रित न होने दें। गड़ढों को मिट्टी से भर दें। रुकी हुई नालियों को साफ कर दें। रूम, कूलरों तथा फूल दानों का सारा पानी सप्ताह में एक बार पूरी तरह खाली कर दें, उन्हें सुखाएं तथा फिर से भरें। खाली व टूटे-फूटे टायरों, डिब्बों तथा बोतलों आदि का उचित विसर्जन करें । घर के आस-पास सफाई रखें।
- पानी की टंकियों तथा बर्तनों को सही तरीके से ढक कर रखें ताकि मच्छर उनमें प्रवेश ना कर सकें और प्रजनन न कर सकें।
- यदि रूम कूलरों तथा पानी की टंकियों को पूरी तरह खाली करना संभव नहीं है तो यह सलाह दी जाती है कि उनमें सप्ताह में एक बार पेट्रोल या मिट्टी का तेल डाल दें। प्रति 100 लीटर पानी के लिए 30 मि॰लि॰ प्रेट्रोल या मिट्टी का तेल पर्याप्त है। ऐसे करने से मच्छर का पनपना रुक जाएगा।
- पानी स्रोतों में कुछ छोटी किस्म की मछलियां (जैसे की गैम्बुसिया, लेबिस्टर) भी डाल सकते हैं। यह मछलियां पानी में पनप रहे मच्छरों व उनके अंडों को खा जाती हैं।इन मछलियों को स्थानीय प्रशासनिक कार्यालयों से प्राप्त किया जा सकता है।
- यदि संभव हो तो खिड़कियों व दरवाजों पर जाली लगवाकर मच्छरों को घर में आने से रोकें।
- मच्छरों को भगाने व मारने के लिए मच्छर नाशक क्रीम, स्प्रे, मैट, काइल्स आदि प्रयोग करें। रात में मच्छरदानी के प्रयोग से भी मच्छरों के काटने से बचा जा सकता है सिनेट्रोला तेल भी मच्छरों को भगाने में काफी प्रभावी है।
- ऐसे कपड़े पहनना ताकि शरीर का अधिक से अधिक भाग ढका रहे। यह सावधानी बच्चों के लिए अति आवश्यक है। बच्चों को मलेरिया के मौसम में निक्कर व टीशर्ट न ही पहनाएं तो अच्छा है।
- मच्छर नाशक दवाई छिड़कने वाले कर्मचारी जब भी यह कार्य करने आएं तो उन्हें मना मत कीजिए। घर में दवाई छिड़कवाना आप ही के हित में है।
- घर के अंदर सभी क्षेत्रों में सप्ताह में एक बार मच्छर नाशक दवाई का छिड़काव अवश्य करें। यह दवाई फोटो-फ्रेम्स, परदों, कलेण्डरों आदि के पीछे तथा घर के स्टोर कक्ष व सभी कोनों में अवश्य छिड़कें। दवाईं छिड़कते समय अपने मुंह व नाक पर कोई कपड़ा अवश्य बांध लें तथा खाने पीने की सभी वस्तुओं को ढक कर रखें।
- फ्रिज के नीचे रखी हुई पानी इकट्ठा करने वाली ट्रे को भी प्रतिदिन खाली कर दें।
- अपने घर के आस-पास के क्षेत्र में सफाई रखें। कूड़ा-करकट इधर-उधर न फेंके। घर के आस-पास जंगली घास व झाड़ियां आदि न उगने दें। ये मच्छरों के छिपने व आराम करने के स्थल है।
- यदि आपको लगता है कि आपके क्षेत्र में मच्छरों की संख्या में वृद्धि हो गयी है या फिर बुखार से काफी लोग ग्रसित हो रहे हैं तो अपने स्थानीय स्वास्थ्य केंद्र, नागरपालिका या पंचायत केंद्र में अवश्य सूचना दें।
- यह भी याद रखने योग्य बात है कि एडीज मच्छर दिन में भी काट सकते हैं। इसलिए दिन में भी मच्छरों से बचाव आवश्यक है।
- डेंगू बुखार सर्वाधिक रूप से जुलाई से अक्तूबर माह के बीच की अवधि में होता है, क्योंकि इस मौसम में मच्छरों के पनपने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ होती है इसलिए इस मौसम में हर सावधानी बरतनी चाहिए।

डेंगू बुखार से ग्रस्त रोगी को बीमारी के शुरू के 6-7 दिनों में मच्छरदानी से ढके हुए बिस्तर पर ही रखें ताकि मच्छर उस तक ना पहुंच पायें।

इलाज से परहेज बेहतर है।

❑

\\192.168.3.1\E\3703HA-2

विविध

डीएनए फिंगर प्रिंटिंग (DNA Finger Printing) क्यों है एक अकाट्य साक्ष्य

— कैलाश नाथ गुप्त*

सारांश—सरल भाषा में डीएनए फिंगर प्रिंटिंग अपराधियों को पकड़ने हेतु एक महत्वपूर्ण साक्ष्य है। परन्तु आज के युग में इसके अनेक महत्वपूर्ण आयाम हैं–आर्युविज्ञान के विश्लेषण में, पेडिग्री एप्लीकेशन में, जानवरों के सेक्स चुनाव में, वन्य प्राणी संरक्षण में तथा मानव प्रजाति के उद्भव तक में भी। यह एक क्रांतिकारी तकनीक है, जिसके भारत में महान वैज्ञानिक व विद्वान है, डा॰ लालजी सिंह जी, जो कुछ समय पूर्व तक सेंटर फॉर सेल्यूलर एवं मोलिक्यूलर बायोलॉजी (CCMB), CSIR, हैदराबाद में निदेशक पद को सुशोभित कर रहे थे एवं देश सेवा में तन–मन से पूर्ण समर्पित व संलग्न रहे। देश को उनकी सेवाओं पर नाज है। उन्हें ही यह श्रेय जाता है कि भारत के न्यायालयों में उसकी महत्वपूर्ण स्वीकृति एवं विश्वसनीयता के झंडे गाड़े एवं इसे एक महत्वपूर्ण साक्ष्य के रुप में स्वीकृति प्रदान कराई। अब यह एक अकाट्य साक्ष्य के रुप में न्यायालयों में धड़ल्ले से स्वीकार की जा रही है। डा॰ लालजी सिंह का इस हेतु कोटि–कोटि धन्यवाद।

अमेरिका की खुफिया एजेंसी एफबीआई ने 80 के दशक में तमाम ऐसे मामलों का निबटारा डीएनए परीक्षण विधि से किया और अपराधियों की दुनिया में भूकंप आ गया क्योंकि उनका बचना बहुत मुश्किल हो गया था।

अपराध के शातिराना तरीकों व जटिल मामलों में सटीक और पुख्ता सुबूतों के अभाव में इंसाफ नजरअंदाज हो जाता है, हालांकि बीते कुछ अरसे से डीएनए परीक्षण के जरिए वल्दियत, अपराध, बलात्कार और हत्या की गई अबूझ पहेलियों बेहद दिलचस्प अंदाज व सटीक पैमानों पर सुलझाई गई है। इस जांच से जुड़े कई अहम् पहलुओं की और इस की प्रासंगिकता पर रोशनी डालना उपयोगी होगा। डीएनए के जरिए वल्दियत का सही–सही पता लगाया जा सकता है, यानि वल्दियत जांचने के लिए डीएनए जांच एक सटीक जरिया है, जहां पारंपरिक सुबूत नहीं होते या कोई झूठ बोलने पर उतारु हो तो वहां एक मात्र डीएनए जांच ही सहारा होती है, जिससे दूध का दूध और पानी का पानी साफ हो जाता है।

प्रामाणिकता:

एक दो नहीं, बल्कि अब तक देशभर में सैकड़ों ऐसे मामलों में जहां या तो स्पष्ट सुबूत नहीं थे या दूसरे पेच थे, उन्हें डीएनए जांच के जरिए ही सुलझाया जा सकता था, हर व्यक्ति के डीएनए की बनावट, उंगलियों की बनावट की तरह एक दूसरे बिल्कुल भिन्न होती है। दो अलग–अलग व्यक्तियों के डीएनए एक जैसा होता 10 अरब मामलों में से कोई एक मामला हो सकता है, यही नहीं, पूरी दुनिया के डीएनए वैज्ञानिक का दावा करते हैं कि जांच में गलती के लिए अक्सर 300 मामलों में से किसी एक मामले में ही हो सकता है। आज की तारीख में सिर्फ हिंदुस्तान में ही नहीं, बल्कि लगभग एक दर्जन देशों में डीएनए फिंगर प्रिंटिंग जांच की बदौलत जटिल से जटिल आपराधिक मामलों का निबटान हो रहा है।

कब और कैसे:

डीएनए जांच की विधि वास्तव में अमेरिका में खोजी गई थी और अमेरिका तथा ब्रिटेन में यह जांच विधि 1980 में दशक में ही अस्तित्व में आ गई थी। अमेरिका की खुफिया एजेंसी एफबीआई ने 80 के दशक में तमाम ऐसे मामलों का निबटारा डीएनए परीक्षण विधि से किया और अपराधियों की दुनिया में भूकंप आ गया क्योंकि उनका बचना बहुत मुश्किल हो गया था।

*डी–1ए/115 जनकपुरी, (डी–ब्लॉक), पंखा रोड, नई दिल्ली–110058, दूरभाष (नि॰) 011–2852607, 9911677600

\\192.168.3.1\E\2533HA-3

ब्रिटेन में भी इस विधि से सैकड़ों आपराधिक वारदातों का निबटान हुआ। अमेरिका और ब्रिटेन के अलावा इस तकनीक में महारत हासिल करने वाला तीसरा देश भारत है।

डीएनए फिंगर प्रिंटिंग का रहस्य छुपा है, डा॰ लाल जी सिंह के विचारों, उद्घोषों, प्रशिक्षण सामग्री व अभिव्यक्तियों में, जो हर प्रकार से काफी प्रेरणा दायक व महत्वपूर्ण हैं।

अपराध उतना ही पुराना है जितनी मानव सभ्यता। पर उसी प्रकार मानव की जिज्ञासा भी है, अपराध के अनुसंधान हेतु। लगभग 150 वर्षों पूर्व (1860 में) अंगुल छाप (डीएनए फिंगर प्रिंटिंग नहीं) का पहली बार एक ब्रिटिश प्रशासक सर विलियम हरशेल द्वारा प्रयोग में लाया गया था, जिससे अशिक्षित मिलिटरी जवानों द्वारा भारी मात्रा में धन गबन को रोका जा सके। उन्होंने इन लोगों से एक पेपर पर अंगुल छाप देने को कहा था, बिना उसकी उपयोगिता को समझे। फिलहाल, इससे धन का गबन रूक गया।

सर विलियम हरशेल ने यह पाया कि किसी भी दो व्यक्तियों के अंगुल छाप आपस में नहीं मिलते। वे हर एक व्यक्ति के लिए अनूठे होते हैं। वे इसे एक वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करना चाहते थे, अत: उन्होंने अति महत्वपूर्ण पत्रिका 'नेचर' में अपना एक लेख प्रस्तुत किया जो लंदन से प्रकाशित होती है। यद्यपि कि यह पेपर इस आधार पर स्वीकार नहीं हुआ कि क्या ये अंगुल छाप किसी भी व्यक्ति में आजीवन उसी प्रकार रहते हैं? सर विलियम हरशेल ने सन्1860 में अपनी अंगुल छाप ली और पुन: 1888 में 28 वर्षों बाद दोनों यह प्रदर्शित करते हुए कि इन दोनों में कोई अन्तर नहीं था-केवल कुछ टूट-फूट के अतिरिक्त। उन्होंने फिर अपना लेख मशहूर पत्रिका 'नेचर' में छपने हेतु 1888 में पुन: जमा किया, अर्थात् 28 वर्षों बाद और इस बार यह स्वीकार हो गया। (नेचर-vol. 28 ए पेज-201) तिथि-28 जून, 1888 को।

उस समय की यह एक अद्भुत खोज थी। इसने पूरे विश्व के काफी विद्वानों, जाने-माने बायोलॉजिस्टों का ध्यान आकर्षित किया। उनमें सबसे महत्वपूर्ण थे फ्रांसीस गेलटन जिन्होंने जनगणना विश्लेषण किया और एक पुस्तक जिसका शीर्षक था- 'फिंगर प्रिंटिंग' की रचना की, जिसके आधार पर विश्व के पहले व्यक्ति को अर्जेंटिना में 1891 में फांसी की सजा हुई। फिलहाल फिंगर प्रिंटिंग की मान्यता तब अधिक बढ़ी जब ब्रिटिश बायोलॉजिस्ट एडवर्ड हेनरी ने एक विस्तृत विवरण फिंगर प्रिंट का प्रस्तुत किया जो अनेक सेक्टर पर आधारित था अर्थात रिजेज और ग्रूव्ज तथा एंगेल आदि। फिंगर प्रिंट का यह विश्लेषण पूरे विश्व में आज भी प्रयोग किया जाता है।

सजायाप्ता अपराधियों के डेटाबेस बनाए गए हैं। किसी भी दो व्यक्तियों के आपस में उसी प्रकार होने का रेशियो 1010 में किसी एक व्यक्ति का पाया जाता है। यह मानते हुए कि विश्व की जनसंख्या औसतम 6.9x 1.9 है। इसकी संभावना बहुत कम है कि विश्व में दो व्यक्ति ऐसे जीवित हों जिनके फिंगर प्रिंट पैटर्न आपस में मिलते-जुलते हों। यहां तक कि दो जुड़वा लोगों में भी फिंगर प्रिंट भिन्न होते हैं। अत: अपराध के स्थान पर पाये जाने वाले फिंगर प्रिंट उसी प्रकार हैं जैसे अपराधी ने अपनी फोटोग्राफ छोड़ दी हो।

अपराधियों में आपस में यह होड़ लगी रहती है कि वह अपराध करने के नये-नये तरीके अपनाएं और अन्वेषण संस्थाओं को नये-नये विचार तथा तकनीक से अपराध का अनुसंधान करना पड़ता है। जब अपराधियों ने यह समझ लिया कि अगर अपराध स्थल पर वह अपना फिंगर प्रिंट छोड़ते हैं तो वह अवश्य पकड़े जाएंगे, अत: उन्होंने दस्तानों का इस्तेमाल शुरू किया। इस प्रकार अन्वेषण एजेंसियां मजबूर हो गई।

खून की उपयोगिता—1901 तक यह माना जाता था कि सभी मानव का खून एक ही होता है। यह दुर्भाग्य की बात रही कि हजारों लोगों की मृत्यु गलत खून के चढ़ाने से होती रही। 1901 में कार्ल लैंडस्टीनर ने पहली बार यह प्रदर्शित कर दिखाया कि मानव खून को चार ग्रुपों में (ए, बी, एबी एवं ओ) में विभाजित किया जा सकता है, जो आजकल खून के ग्रुपिंग के 'एबीओ सिस्टम' के रूप में जाना जाता है। यह एक आश्चर्यजनक खोज थी जिसने हजारों लोगों की जान प्रतिदिन बचायी। कार्ल लैंडस्टीजर को 29 साल बाद महत्वपूर्ण नोबल पुरस्कार' से सम्मनित किया गया।

1901 में कार्ल लैंडस्टीनर ने पहली बार यह प्रदर्शित कर दिखाया कि मानव खून को चार ग्रुपों में (ए, बी, एबी एवं ओ) में विभाजित किया जा सकता है, जो आजकल खून के ग्रुपिंग के 'एबीओ सिस्टम' के रूप में जाना जाता है।

\\192.168.3.1\E\2533HA-3

जैसे ही 'ब्लड ग्रुप सिस्टम' की खोज हुई, फॉरेंसिक साइंटिस्ट ने अपनाना शुरू कर दिया, जिससे अपराध अन्वेषण में व्यक्तियों की खास पहचान सिद्ध की जा सके। परन्तु ब्लड ग्रुप के साथ एक समस्या है कि अगर यह मैच कर जाता है तो शत प्रतिशत निश्चितता के साथ यह नहीं कहा जा सकता है कि यही व्यक्ति उस बालक का बायोलॉजिकल पिता है तथा ऐसा अपराधी है जिसका खून अपराध स्थल पर पाया गया है। यह इसलिए कि दो व्यक्ति जो आपस में संबंधित न हो परन्तु उनके ब्लड ग्रुप के मिलने की संभावना काफी रहती है। कम-से-कम ऐसे दो व्यक्ति पाए जा सकते हैं, जिनका ब्लड ग्रुप एक जैसा हो। अत: इस कारण से इसको सकारात्मक साक्ष्य नहीं माना जो सकता। परन्तु अगर ब्लड ग्रुप आपस में ना मिले तो एक दूसरे से अलग करने के लिए इसके शत-प्रतिशत साक्ष्य के रूप में माना जा सकता है।

'डीएनए' का वर्ग अलग-अलग व्यक्तियों में अलग-अलग होता है जो एक ऐसा स्वरूप प्रदान करता है जो अलग-अलग व्यक्तियों पर आधारित होता है।

सन् 1937 में 'आरएच फैक्टर' की खोज हुई जिसको फोरेंसिक विद्वानों ने पहचान स्थापित करने हेतु अपनाना प्रारम्भ कर दिया। आज हम जानते हैं कि हमारे रक्त में 100 से अधिक विभिन्न फैक्टर है जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से अलग करते हैं। इनमें में सम्मिलित है-'आइसोजीम्स' जो हमारे खून में मौजूद हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण है मानव 'लिम्फोसिट एंटीजेन (एचएलए) जो हरएक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं।

अगर हम 18 भिन्न-भिन्न प्रकार के टेस्ट ध्यान में रखें जिनमें सम्मिलित हों ब्लड ग्रुप्स, आरएच फैक्टर्स, विभिन्न प्रकार के 'आइसोजीम्स' और 'एचएलए' तो शत-प्रतिशत बहिष्कारिता पायी जा सकती है। फिर भी सकारात्मक एकात्मकता 99.7 प्रतिशत होती है। यह सभी संभावित संदेह से परे नहीं माना जा सकता। अत: न्यायालयों में यह मान्य नहीं है। अगर न्यायाधीश को किसी को हत्या के मुकदमें फांसी की सजा देनी है तो उन्हें 999.99 प्रतिशत संभावित साक्ष्य की आवश्यकता पड़ेगी। इनके अतिरिक्त यह टेस्ट प्रोटीन पर निर्भर करते हैं जो अपराध स्थल के बायोलॉजिकल टिसूज में पाए जाते हैं। प्रोटीन उतने विश्वसनीय नहीं होते हैं।

जिस समय तक फोरेंसिक लेबोरेटरी में अन्वेषण हेतु लाए जाते हैं, तब तक उनके कोटि में कमी आ जाती है। अत: फोरेसिक विद्वान इन नमूना जांच की साक्ष्य प्रस्तुत नहीं कर पाते। अत: इस बात की आवश्यकता थी कि बायोलॉजिकल सामग्री की ऐसी पहचान निकाली जा सके जिससे वह एक तरफ स्थिर रह सके तथा दूसरी ओर व्यक्तियों पर विशेष रूप से आधारित हो सके। इस आवश्यकता की पूर्ति की डीएनए फिंगर प्रिंटिंग की खोज ने 1985 में ब्रिटिश साइंटिस्ट प्रोफेसर एलेक जेफ्रीज ने जो लेसेस्टर विश्वविद्यालय के थे। यह एक आश्चर्यजनक खोज थी। यह जनसंख्या जैनेटिक्स के लिए आश्चर्यजनक खोज के रूप में आई जो यह समझते थे कि हम सभी का 'डीएनए' एक ही होता है तथा व्यक्तियों में फर्क नहीं होता है।

एलेक जेफ्रीज ने एक अकाट्य साक्ष्य प्रस्तुत किया कि 'डीएनए' का वर्ग अलग-अलग व्यक्तियों में अलग-अलग होता है जो एक ऐसा स्वरूप प्रदान करता है जो अलग-अलग व्यक्तियों पर आधारित होता है। उन्होंने अपनी खोज को फोरेंसिक अन्वेषण हेतु प्रस्तुत किया। आज 'डीएनए फिंगर प्रिंटिंग' घर-घर में जाना जाने वाला नाम है, पूरे विश्व में यह अनेक क्षेत्रों में प्रयोग में लाया जा रहा है-जैसे माता या पिता की पहचान गुमशुदा बच्चे की पहचान, बलात्कार के मामले, हत्या, सड़ी-गली लाशें, वन्य प्राणी संरक्षण तथा इसी प्रकार अन्य मामलों में।

डीएनए फिंगर प्रिंटिंग क्या है?

बीते कुछ सालों के दौरान कई पितृत्व व आपराधिक गुत्थियों को सुलझाने में डीएनए फिंगर प्रिंटिंग तकनीक बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है। यह समस्त प्रक्रिया डीएनए पर आधारित होती है। सभी मनुष्यों, जीव-जन्तुओं की कोशिकाओं में एक रसायन डीएनए रहता है जो मनुष्य को उसकी विशिष्ट पहचान प्रदान करता है। यह डीएनए शरीर के किसी भी भाग लार, रक्त, बाल, वीर्य आदि से प्राप्त किया जा सकता है।

इस पद्धति का सर्व प्रथम प्रयोग 1984 में सर एलेक जोसेफ ने किया था। डीएनए फिंगर प्रिंटिंग भी फोरेंसिक साइंस की विधा फिंगर प्रिंट तकनीकी पर आधारित है। जिस प्रकार संसार में किन्हीं दो व्यक्तियों के अंगुल छाप समान नहीं हो सकते, उसी प्रकार डीएनए का क्रम भी सभी में एक समान नहीं होता।

इस विधि में शरीर के किसी भी भाग की कोशिका में से

\\192.168.3.1\E\2533HA-3

रसायनिक विधि के द्वारा प्राप्त डीएनए को अलग-अलग खंडों में विभाजित किया जाता है। फिर उन्हें रेडियो सक्रिय बनाने के बाद उनका एक विशिष्ट क्रम प्राप्त होता है। यह क्रम ही वह विशिष्ट क्रम होता है जो उस व्यक्ति को और लोगों से अलग करता है। इसके बाद इसकी छानबीन करके इसे एक्स-रे फिल्म पर एक्सपोज किया जाता है, जहां वह ब्लैक बार बनाते हैं। इसे ही डीएनए फिंगर प्रिंट कहते हैं।

डीएनए की यह समस्त क्रिया पांच स्टेप्स में पूरी होती है:—

- सबसे पहले डीएनए को कोशिका में अलग किया जाता है इसके बाद डीएनए को रेट्रिक्शन एंजाइम की मदद से कई जगहों पर तोड़ा जाता है।
- इन टूटे हुए डीएनए को जैल पर लगाया जाता है।
- विद्युत करेंट की धारा प्रवाहित करने पर यह अपनी लम्बाई के हिसाब से अलग होने लगते हैं।
- इन सभी अलग-अलग डीएनए खंडों को डीनैचुरेशन कर दोनों तंतुओं को अलग किया जाता है।
- अंतिम चरण में सभी खंडों को रेडियो सक्रिय का जांच की जाती है, उसी दौरान विशिष्ट पेयर की पहचान की जाती है।

डीएनए फिंगर प्रिंटिंग भी फोरेंसिक साइंस की विधा फिंगर प्रिंट तकनीकी पर आधारित है। जिस प्रकार संसार में किन्हीं दो व्यक्तियों के अंगुल छाप समान नहीं हो सकते, उसी प्रकार डीएनए का क्रम भी सभी में एक समान नहीं होता।

इसके अलावा मानव विरुद्ध अपराध संबंधी फोरेंसिक विश्लेषण में, वन्य जीव संबंधी अपराधों के अन्वेषण में, पितृत्व और मातृत्व को स्थापित करने में, अज्ञात मृतक की पहचान में, क्षत-विक्षत/नर कंकाल शवों की पहचान में, और प्राकृतिक आपदा में व्यक्तियों की पहचान आदि में डीएनए परीक्षण उपयोगी है।

प्रत्येक व्यक्ति के डीएनए का कैमिकल स्वरूप वही होता है। इसका मुख्य आधार है शुगर और फॉस्फेट। यह दोनों चार मुख्य यूनिट द्वारा एक में सम्मिलित होते हैं अर्थात अडेनाइन (A), गुनाइन (G), थैमीन (T), और सिटोसिन (C) A इन आधारों का कैमिकल स्वरूप इस प्रकार होता है कि एक का A दूसरे के T के साथ बॉण्ड बनाता और G भी C के साथ। ऐसा कोई रास्ता नहीं है कि AG के साथ हाईड्रोजन बॉण्ड बनाए अथवा G C के साथ या ब्ज के साथ या GV के साथ।

व्यक्तियों में फर्क या जानवरों में जो फर्क होता है वह केवल बेस जोड़ो के आर्डर का। प्रत्येक व्यक्ति के डीएनए में हजारों लाखों बेस पेअर होते हैं जो प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न स्वरूप में होते हैं। इन स्वरूपों की पहचान करके प्रत्येक व्यक्ति की पहचान निश्चित तौर पर की जा सकती है। फिलहाल चूंकि लाखों बेस पेअर होते हैं अत: वैज्ञानिक लोग एक छोटा रास्ता अपनाते हैं जो डीएनए के रिपीटिंग पैटर्न पर आधारित होता है।

डीएनए के बारंबार आने वाले क्लास जैसे GAT को विशेष रूप से अलग किया जाता है उसकी तीस प्रतियां दूसरे व्यक्ति के उसी अनुरूप बनाई जाती है और वह तकनीक जिसके आधार पर हम फर्क या विभिन्नता महसूस करते हैं, उसे डीएनए फिंगर प्रिंटिंग कहा जाता है। इसका नामकरण किया था एलेक जैफ्रीज ने यह जोर देने के लिए कि हरेक व्यक्तिका डीएनए पैटर्न एक दूसरे से अनोखा होता है जैसे हमारे अंगुल छाप। वास्तव में डीएनए फिंगर प्रिंट पैटर्न किसी भी अंगुल छाप से अधिक अनूठे होते हैं।

प्रो॰ एलेक जैफ्रीज ने अनेकानेक नॉन कोडिंग (जंक) डीएनए सीक्वेंसेज को ग्लोबिन जीन के फ्लैकिंग रीजन से अलग कर दिया, जिसको उन्होंने डीएनए फिंगर प्रिंटिंग के रूप में सिद्ध कर दिया। इसको इन्होंने पेटेंट करवा लिया, अत: यह अन्य लोगों को मुफ्त में उपलब्ध नहीं था।

सीसीएमबी ने रीपेटेटीव डीएनए की एक वर्ग को अलग कर दिया जिसमें एक जहरीले सांप (बेन्डेड करेत) के गाटा रीपीड्स थे। इसको बेन्डेड करेत माइनर सेटेलाइट डीएनए का नाम दिया गया। इस डीएनए के 545 बेस जोड़ों को क्लोन किया गया जिसमें अधिकतर गाटा रीपीड्स थे। अलग-अलग असंबंधित व्यक्तियों के डीएनए फिंगर प्रिंट में व्यक्तिगत विशिष्ट पैटर्न पाए जाते हैं।

\\192.168.3.1\E\2533HA-3

कुछ व्यक्तियों में कुछ बैंड्स सामान्य हो सकते हैं लेकिन दो व्यक्तियों में निश्चित तौर पर उसी प्रकार के बैंड्स नहीं हो सकते। केवल जुड़वा लोगों को छोड़कर, जिसके डीएनए फिंगर प्रिंट पैटर्न आइडेंटिकल हो सकते हैं। इन बैड्स को प्रयोग फोरेंसिक अन्वेषण में किया जाता है। उदाहरण के तौर पर एक परिवार में माता-पिता एवं बच्चे में अगर डीएनए फिंगर प्रिंट टेस्ट किया जाय तो इन सभी में पैर्टन भिन्न भिन्न प्रकार का दिखाई देगा। परंतु यदि बहुत गंभीरता से देखा जाय तो बच्चे में जो बैंड मौजूद होगा, वही या तो मां में होगा या पिता में एवं इससे भिन्न नहीं। साधारण तौर पर मातृत्व में निश्चितता होती है। अगर मातृत्व का ज्ञान है तो इससे पैतृकता को स्थापित किया जा सकता है। इसी प्रकार अगर पैतृत्व का ज्ञान है को मातृत्व को स्थापित किया जा सकता हैं अगर माता-पिता का ज्ञान है तो बच्चे के व्यक्तित्व को स्थापित किया जा सकता है। भाईयों और बहनों के केस में डीएनए फिंगर प्रिंट पैटर्न एक से नहीं होंगे वरन् अलग-अलग होंगे। यह इसलिए होता है क्यों कि 46 क्रोमोजोम्स में केवल 23 ही बच्चे के विरासत में आ पाते हैं। क्योंकि क्रोमोजोम्स के द्वारा ही डीएनए आगे बढ़ता है अत: बच्चे में जो 50 प्रतिशत बैंड्स मौजूद होते हैं वो मां से विरासत में आते हैं तथा 50 प्रतिशत पिता से। फिलहाल कौन सा 50 प्रतिशत बैड्स किससे विरासत में आया, यह एक रैंडम फेनामेना होता है। अत: भाईयों और बहनों के फिंगर प्रिंट पैटर्न में विभिन्नता होती है। फिलहाल इन दोनों में 50 प्रतिशत से अधिक बैंड्स मिलते-जुलते होते हैं जबकि अन्य बिना रिश्ते के लागों ये बैंड्स केवल 30 प्रतिशत ही मिलते-जुलते पाये जा सकते हैं। अत: इस तकनीकी द्वारा यह स्थापित किया जा सकता है कि कोई भी दो व्यक्ति भाई अथवा बहन हैं या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति के डीएनए में हजारों लाखों बेस पेअर होते हैं जो प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न स्वरूप में होते हैं। इन स्वरूपों की पहचान करके प्रत्येक व्यक्ति की पहचान निश्चित तौर पर की जा सकती है।

अगर जुड़वा व्यक्ति में कोई अपराध करता है तो डीएनए फिंगर पैटर्न द्वारा यह स्थापित करना कठिन हो जाता है कि उन दोनों में से किसने किया है। इस तकनीकी की अपनी सीमाएं हैं। इसके विपरीत अंगुल छाप के द्वारा यह स्थापित किया जा सकता है कि अपराध किसने किया है क्योंकि जुडवा लोगों में भी अंगुल छाप अलग-अलग होते हैं।

डीएनए फिंगर प्रिंटिंग की विभिन्न उपयोगिताएं—

डीएनए फिंगर प्रिंटिंग का आज अनेकानेक क्षेत्रों में प्रयोग हो रहा है, जैसे—

(1) **अपराध अनुसंधान**—उदाहरणार्थ हत्या, बलात्कार, चोरी आदि।

(2) **कंज्यूमर प्रोडक्टस की प्रामाणिकता**—अक्सर यह पाया जाता है कि मशहूर कंपनियों के नाम पर जाली सामग्रियां निकाल दी जाती है। इसलिए बहुत सी अच्छी कम्पनियां अपने उत्पादनों में डीएनए सिक्वेंस अंदर चिपका देते हैं। जहां शंका होती है, उन लेबल्स को निकाल कर डीएनए सिक्वेंस एवं उत्पादन की प्रामाणिकता स्थापित की जा सकती है।

(3) **मेडिकल डायगनोसिस**—जैसे ल्यूकेमिया आदि बीमारियों में रक्त का डीएनए फिंगर प्रिंटिंग पैटर्न व्यक्ति के माता-पिता से भिन्न होता है। अत: बीमारियों की पहचान की जा सकती है।

(4) **पेडीग्री विश्लेषण**—यह घोड़ों, जानवरों, भैंसों की ब्रीडिंग प्रोग्राम में अधिकतर प्रयोग में लाया जाता है। कुछ लोग अधिक दूध पाने, बीमारी से लड़ने की क्षमता बढ़ाने या दौड़ में अधिकता लाने के लिए अधिक पैसे खर्च करने के लिए तैयार रहते हैं। इसका प्रयोग कुत्तों में भी किया जाता है।

(5) **सीड़-स्टॉक पहचान**—जो वैज्ञानिकों द्वारा विकसित करके किसानों को दिया जाता है। यह पौधों के मालिक्यूलर ब्रीडिंग में भी प्रयोग किया जाता है।

(6) **जानवरों में सैक्स**—सेलैक्सन- गर्भाधान कराकर इच्छित सैक्स के जानवरों को पैदा करने हेतु।

(7) **रक्षा रिकार्ड्स**—अमेरिका में नये भर्ती जवानों के रक्त के नमूने के एक फ्रीजर में स्टोर कर लिए जाते हैं। युद्ध के दौरान जब कोई जवान गुम हो जाता है और क्षत-विक्षत शरीर प्राप्त होता है जिसे पहचानना मुश्किल

\\192.168.3.1\E\2533HA-3

होता है तब उसके शरीर के डीएनए की उस संरक्षित ब्लड सैम्पल से मिलान की जाती है जिससे उसकी पहचान की जा सके।

(8) **वन्य जीवन संरक्षण**—वन्य जीवन संरक्षण में इसका प्रयोग जंगली जानवरों की विभिन्नताओं और उनकी इनब्रीडिंग के लिए किया जाता है जो उनकी नस्ल के बचाने हेतु आवश्यक है। यह उनकी पवित्रता को स्थापित करने हेतु भी प्रयोग में लाया जाता है।

(9) **पारिवारिक मामले**—इन में सम्मिलित हैं पितृत्व एवं मातृत्व की स्थापना, गुमशुदा बच्चे की पहचान और जच्चा-बच्चा वार्ड में बच्चों के अदला-बदली के मामलों में।

डीएनए परीक्षण से किसी व्यक्ति, पौधे, जानवर आदि की कोशिका में पाए जाने वाले डीएनए के विश्लेषण के आधार पर उन की आनुवंशिकी व पहचान स्थापित की जाती है और किन्हीं 2 व्यक्तियों के बीच विभेद भी किया जाता है। किसी भी व्यक्ति में आधे आनुवांशिक गुण पिता से और आधे माता से प्राप्त होते हैं।

डीएनए फिंगर प्रिंट की उपयोगिता और व्यावहारिक उपयोग के बारे में विधि विज्ञान प्रयोगशाला, हिमाचल प्रदेश के सहायक निदेशक डा॰ नीती प्रकाश दुबे के मतानुसार डीएनए परीक्षण से किसी व्यक्ति, पौधे, जानवर आदि की कोशिका में पाए जाने वाले डीएनए के विश्लेषण के आधार पर उन की आनुवंशिकी व पहचान स्थापित की जाती है और किन्हीं 2 व्यक्तियों के बीच विभेद भी किया जाता है। किसी भी व्यक्ति में आधे आनुवांशिक गुण पिता से और आधे माता से प्राप्त होते हैं। जब किसी भी जैनेटिक पहचान सिद्ध करनी होती है तो उसके जैनेटिक मारकर अध्ययन किया जाता है। वैसे सभी मनुष्यों का 99 फीसदी डीएनए समान होता है लेकिन जैनेटिक मार्कर का एक छोटा हिस्सा सभी में भिन्न होता है। इस जैनेटिक मार्कर का क्रम और इसकी संख्या सभी में अलग-अलग होती है, जिसके आधार पर उस व्यक्ति की पहचान सिद्ध की जाती है। सामान्यत: फोरेंसिक एनालिसिस में कोशिका की नाभिक के पूर्ण डीएनए का परीक्षण किया जाता है, लेकिन वाई डीएनए (यह केवल पुरूष को पिता से मिलता है) के अध्ययन से पितृ पीढ़ी का पता लगता है जबकि एम डीएनए (यह स्त्री और पुरुष दोनों को माता से प्राप्त होता है) का अध्ययन से मातृ पीढ़ी का पता लगता है। पीसीआर तकनीक से जैव अंश के कम सैंपल का संवर्धन करके अच्छे नतीजे प्राप्त होते हैं। यह सौ फीसदी विश्वसनीय हैं।

भारत में डीएनए फिंगर प्रिंटिंग को अनेक रोमांचक और बड़े मामलों के सुलझाने हेतु प्रयोग किया गया है।

खोए हुए छात्र की कंकाल से पहचान—भारत में डीएनए परीक्षणों की शुरूआत एक रोमांचक वारदात से हंई, दरअसल, 1989 में स्कूल में पढ़ने वाला एक लड़का हैदराबाद के निकट से कहीं लापता हो गया। कई दिनों तक घर वाले और पुलिस भी उस लड़के की खोजबीन करती रही मगर उसका कहीं पता नहीं चला, लगभग एक हफ्ते बाद स्कूल से थोड़ी दूर मौजूद कूड़े के ढेर से हड्डियों का एक कंकाल बरामद हुआ। पुलिस को शक हुआ कि यह कंकाल खोए हुए छात्र का ही है, मगर यह बात कैसे गले उतरे? मां-बाप भी इस बात को मानने को राजी नहीं थे। उन्हीं दिनों हैदराबाद में डीएनए फिंगर प्रिंटिंग प्रयोगशाला में काम करना शुरू किया गया था, इसलिए हैदराबाद के केन्द्रीय फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला में वह कंकाल लाया गया।

प्रयोगशाला को उस कंकाल के खोए हुए छात्र के शव के होने या न होने की पुष्टि का कार्य सौंपा गया। यहां के प्रमुख डीएनए वैज्ञानिक लालजी सिंह ने उस कंकाल की हड्डियों से कुछ टिश्यू को इकटठा किया और खोए हुए छात्र के मां-बाप के रक्त के नमूने लिए, इसके बादे उन्होंने अपनी डीएनए परीक्षण जांच शुरु कर दी, लगभग एक हफ्ते बाद लालजी सिंह ने सिद्ध कर दिया कि वह कंकाल खोए हुए छात्र का ही था।

पितृत्व की पहचान पितृत्व के मामले में भी डीएनए जांच की शुरूआत लगभग 20 साल पहले तब हुई जब डीएनए जांच विधि की शुरू होने के कुछ दिनों के भीतर ही केरल की एक अदालत में अपने ढंग का एक अनूठा मामला आया।

15 सितम्बर 1989 को केरल की तेल्लीचेरी की अदालत में देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक डा॰ लालजी सिंह हाजिर हुए। उन्होंने अदालत कक्ष में ही एक प्रोजक्टर व स्लाइड के सहारे वहां मौजूद लोगों को समझाया कि डीएनए फिंगर प्रिंट क्या है।

\\192.168.3.1\E\2533HA-3

पहली बार भारतीय न्यायिक व्यवस्था ने डीएनए रक्त परीक्षण को मान्यता दी।

नैना साहनी मर्डर मामला—1995 मे दिल्ली की नैना साहनी को उसके पति ने हत्या करके तंदूर में झोंक दिया। हालांकि लाश पूरी तरह से खाक नहीं हो पाई, उसके पहले ही एक पुलिसवाले द्वारा सतर्कता के चलते लाश को तंदूर से निकाल लिया गया। लेकिन लाश में कोई भी अंग न तो साबूत था और न ही उसे पारंपरिक तरीके से पहचाना जा सकता था।

समस्या यह थी कि उस लाश को नैना साहनी की लाश कैसे माना जाए? इस जटिल मामले को कोई मंझा हुआ जासूस भी नहीं सुलझा सकता था, क्योकि नैना साहनी की तंदूर में जलने से बची जो लाश हासिल हुई थी वह महज जलाभूना हड्डियों का एक कंकाल भर था।

डीएनए फिंगर प्रिंटिंग तकनीक का प्रयोग आज पूरी विश्व में धड़ल्ले से किया जा रहा है। इस हेतु सीसीएमबी में अब नई-नई मशीनें उपलब्ध हैं तथा अन्य कई तकनीकों को विकसित किया जा रहा है।

ऐसे में यह जिम्मेदारी हैदराबाद स्थित सैंटर फौर मौलिक्यूलर बायोलौजिकल स्टडीज के डीएनए प्रिंट विभाग के तत्कालीन निदेशक लालजी सिंह को सौंपी गई। लालजी सिंह ने नेतृत्व में फोरेंसिक वैज्ञानिकों के एक दल ने नैना साहनी की जली भूनी हड्डियों से कुछ ऊतकों को इक्टठा किया। इसके बाद जांच शुरू हुई डीएनए फिंगर प्रिटिं जांच। लगभग 1 महीने बाद ही लालजी सिंह ने यह सिद्ध कर दिया कि वास्तव में जला हुआ शरीर नैना साहनी का ही था।

गुमशुदा बच्चे का मामला (मद्रास हाईकोर्ट)—एक युगल जोडी का बच्चा गुम हो गया था जिसे उन्होंने कई वर्षों बाद मद्रास में कैम्प कर रहे एक खानाबदोश के पास देखा। उनके अनुसार यह बच्चा उन्हीं का था और उन्होंने खानाबदोश से अपने बच्चे को पा लेने की भरपूर कोशिश की। अंत में यह मामला मद्रास हाई कोर्ट गया जिन्होंने राज्य फोरंसिक लैबोरेटरी तमिलनाडु की सहायता की। कई प्रयोग करने के बाद भी मामला न सुलझ पाया, तब यह मामला सीसीएमबी को भेजा या। उन्होंने अनेक टेस्ट करके यह सिद्ध कर दिया कि यह बच्चा उन युगल जोड़ी का नहीं था। यह प्रयोग डीएनए फिंगर प्रिंट की सहायता से किए गए। तब मद्रास हाईकोर्ट ने बच्चे को खानाबदोश के हवाले कर दिया।

अग्रवासी मामलों में डीएनए फिंगर प्रिटिंग—अनेक देश जैसे अमेरिका, लंदन, ऑस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड ने अप्रवासियों के लिए डीएनए फिंगर प्रिंट टेस्ट अनिवार्य कर दिया है।

स्वामी श्रद्धानंद केस—एक उच्च परिवार की महिला बंगलौर में स्वामीजी के साथ रहने लगी। अपने पति से उसको चार लड़कियां थी जो अपनी मां के पास अक्सर आया-जाया करती थी। उनकी मां मंहगे गिफ्ट भी बच्चों को देती रहती थी। एक दिन जब एक लड़की जब आश्रम आई तो उसने पाया कि उनकी मां वहां नहीं थी। उसको यह बताया गया कि उनकी मां मानसिक रूप से अस्वस्थ थी अत: उन्हें मानसिक अस्पताल में भर्ती करा दिया गया। जब लड़की वहां गई तो इस प्रकार का कोई रोगी वहां नहीं मिला। भारत सरकार ने इस आशंका पर कर्नाटका सरकार को विस्तृत अन्वेंषण करने का आदेश दिया, जो कई सालों तक चला। पुलिस इस निष्कर्ष पर पहुची कि बच्चों की मां को स्वामी जी ने मारकर कहीं दफना दिया है। कोर्ट के आदेश पर घर में खुदाई की गई और औरत के कंकाल को निकाला गया और उसके दांत सुरक्षित थे। बालों के भी सैंपल लिया गया। पीसीआर तकनीक के प्रयोग से डीएनए टेस्ट किया गया, तो उसी महिला के पास गए। यह महिला बहुत धनी परिवार की थी और उसकी हत्या का यही कारण था। अंतत: डीएनए फिंगर प्रिंटिग साक्ष्य के आधार पर स्वामी श्रद्धानंद को कोर्ट के द्वारा फांसी सुनाई गई।

पंजाब के मुख्यमंत्री की हत्या—चंडीगढ़ में सेक्रेटेरिएट मे मानव बम द्वारा मुख्यमंत्री बेंअंत सिंह एवं अन्य 18 लोगों की हत्या हुई। डीएनए फिंगर प्रिटिंग द्वारा यह स्थापित किया गया कि घटना स्थल पर जो दो पैर एक सर पाया गया वह एक ही व्यक्ति के थे। यह मानव बम डिलावर सिंह के पाए गए। न्यायालय में काफी जिरह के पश्चात् साक्ष्य को स्वीकार किया गया और पकड़े गए अपराधी को आजीवन कारावास की सजा हुई।

\\192.168.3.1\E\2533HA-3

बलात्कार के मामले में—इनमें डीएनए फिंगर प्रिटिंग को एक अकाट्य साक्ष्य के रूप में स्वीकार की जाती है। इस हेतु अलग से गवाहों की आवश्यकता नहीं होती। वीर्य और रक्त के नमूने से डीएनए फिंगर प्रिटिंग द्वारा बलात्कारों की पहचान की जा सकी है। अनेकानेक बलात्कार के मामले में इस तकनीक का प्रयोग किया जा सकता है। अत: एक सामाजिक जागृति लाने की आवश्यकता है तथा अन्वेषणकर्ताओं की ऐसी ट्रैनिंग देने की जरूरत है कि वे नमूने किस प्रकार उठाए जिससे उचित न्याय दिलाए जा सके।

स्वामी प्रेमानंनद केस—स्वामी की चेलियां श्रीलंका एवं भारत की कुछ बेसहारा लड़कियां थी जिनसे स्वामी के नाजायज संबंध थे। एक दिन आश्रम से तीन लड़कियां भाग गई और पुलिस को बताया कि उनमें से एक गर्भवती थी जो स्वामीजी के कारण हुआ। उसका गर्भपात कराया गया और उसी समय माता, स्वामीजी और गर्भपात किए हुए बच्चे के रक्त के नमूने लिए गए। इसके आधार पर चौथी जेनरेसन का भी प्रयोग स्वामी जी पर किया गया। इन सभी प्रयोगों से यह सिद्ध हुआ कि गर्भपात किए हुए बच्चें के पिता स्वामीजी ही थे। श्री लालजी सिंह फोरेंसिक एक्सपर्ट को क्रास परीक्षण किया गया और स्वतंत्रता के पश्चात् किसी पहले केस में लंदन से एक एक्सपर्ट को इस हेतु बुलाया गया। उन्होंने भी अपने टेस्ट किए। अंत में उन्होंने माना सीसीएमबी में जो टेस्ट किए गए वह काफी गहनता से किए हुए थे। अंतत: सीसीएमबी की रिपोर्ट मानी गई। इसके आधार पर स्वामीजी को आजीवन कारावास की सजा हुई जिसकी अपील सुप्रीम कोर्ट में भी अमान्य हो गई।

जच्चा-बच्चा केन्द्र में बच्चे बदलने के मामले—भारत में आजकल ऐसी अनेक शिकायतें आ रही है। केरल में एक बच्चे की मां ने बताया कि उने लड़के को जन्म दिया था जिसे बाद में लड़की में बदल दिया गया। अपनी स्त्री के जोर देने पर पति ने सीसीएमबी में आकर डीएनए फिगर प्रिंट कराने का निर्णय लिया। इसमें आधुनिक एसटीआर तकनीक का प्रयोग किया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि वह बच्चा उनका नहीं था। इससे यह सूचित होता है कि जब आप जच्चा-बच्चा केंद्र जाएं तो अपने जन्में बच्चे को ही लाएं।

इस तरह के लगभग 500 से ज्यादा मामले डीएनए परीक्षण विधि के जरिए सुलझाए जा चुके हैं। इनमें से कई मामले तो इतने पेंचीदा थे कि अगर डीएनए परीक्षण विधि मौजूदा नहीं होती तो शायद ही उन्हें सुलझाया जा सकता। ऐसे में कहा जा सकता है कि डीएनए जांच परीक्षण वास्तव में वह परीक्षण विधि है जो तब अकाट्य सुबूत ढुंढ़ लेती है जब पारस्परिक तरीके सुबूत हासिल करना असम्भव होता है। वास्तव में आज डीएनए रक्त परीक्षण एक ऐसा वाक्य है जो हर पढ़े लिखे आदमी के जुबान पर है। डीएनए परीक्षण विधि अब अदालत और वैज्ञानिकों के लिए ही नहीं, हमारे देश के आम पढ़े लिखे लोगों के लिए भी अनजानी चीज नहीं रह गई है।

फोरेसिंक अनुसंधान का भविष्य—वैज्ञानिकों के विश्व के 2.3 मिलियन डेटावेस एसएनपी बना लिए हैं और डीएनए चिप बनाने के हेतु प्रयास रत्न हैं। इसके आधार पर अपराधियों को आसानी से पकड़ा जा सकता है। कुछ सालों में यह विकसित तकनीक प्रयोग में आ जाएगी और कुछ ही घंटों में विश्लेषण का कार्य भी पूरा किया जा सकेगा। डीएनए फिंगर प्रिटिंग तकनीक का प्रयोग आज पूरी विश्व में धड़ल्ले से किया जा रहा है। इस हेतु सीसीएमबी में अब नई-नई मशीनें उपलब्ध हैं तथा अन्य कई तकनीकों को विकसित किया जा रहा है। अत: आने वाले अगले 5 वर्षों में यह क्या स्वरूप लेगा, अभी से यह कुछ निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता है। शायद असम्भव से भी सम्भव हो सकता है। अनुसंधानकर्ता यह भी कह रहे हैं कि डीएनए तकनीक से अपराधियों के मगसॉट्स बनाए जा सकते हैं, जो सुबूत वह छोड़ता है, उसके आधार पर उसकी फोटो बनाई जा सकती है, जिससे यह पहचाना जा सके कि वह किस प्रकार का दिखेगा। इस तकनीक के द्वारा दो लोगों के डीएनए को मिश्रित करके यह अंदाजा भी लगाया जा सकता है कि उनके बच्चे को स्वास्थ तथा शारीरिक लक्षण क्या होंगे। क्रेडिट कार्ड में भी नानो फिंगर प्रिट्िंस समाहित करने की प्रक्रिया विकसित कर ली गई है। जिससे उनकी नकल न की जा सके। अब एक नई तकनीक के अनुसार यह साबित किया जा सकता है कि एक हजार वर्ष पूर्व आपके पूवर्ज किस गांव में रहते थे। ऐसी जियोग्रैफिक पॉपुलेशन स्ट्रक्चर (जीपीएस) का विकास कैलिफोर्निया युनिवर्सिटी में श्री इरान एलहैक द्वारा किया गया।

इस प्रकार विज्ञान द्वारा विकसित डीएनए फिंगर प्रिटिंग एक सटीक साक्ष्य है जो अबूझ पहेलियों को सुलझाने में काफी महत्वपूर्ण है। ❑

\\192.168.3.1\E\2533HA-3

राजभाषा संबंधी गतिविधियां

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

आकाशवाणी, राजकोट

दिनांक 08 जुलाई, 2015 को विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक डॉ॰ मीरा सौरभ, सहायक निदेशक (कार्यक्रम) की अध्यक्षता में आयोजित की गई। श्री बी एस यादव, सदस्य सचिव ने धारा 3(3) का शत-प्रतिशत अनुपालन के मुद्दे को गम्भीरता से लेते हुए बताया कि इसके अंतर्गत सामान्य आदेश, परिपत्र, टेण्डर करार, संविदा, प्रेस विज्ञप्ति आदि आते हैं यह सभी द्विभाषी जारी होने चाहिए। सदस्य सचिव का सुझाव था कि कार्यालय में हिंदी प्रत्राचार का प्रतिशत 82 प्रतिशत है, जोकि लक्ष्य 90 प्रतिशत से कम है, इसे बढ़ाने की जरूरत है। इसे बढ़ाने के लिए कार्यालय अध्यक्ष एवं अन्य अनुभाग अधिकारी अपने पास आने वाली फाइलों पर हिंदी काम के लिए टिप्पणी करें एवं हिंदी कामकाज़ को बढ़ावा देने के लिए निर्देश लिखें। सदस्य सचिव ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से जारी वार्षिक कार्यक्रम 2015-16 के लिए निर्धारित लक्ष्यों को समिति के सम्मुख पढ़कर सुनाया तथा कार्यालय में हिंदी के प्रचार एवं प्रसार को गति देने के उद्देश्य से लक्ष्य प्राप्ति के लिए और अधिक प्रयास करने का आग्रह किया। जिनमें प्रमुख मुद्दे थे - हिंदी पत्राचार, हिंदी में प्राप्त पत्रों का जवाब हिंदी में देना, टिप्पण, हिंदी प्रशिक्षण, हिंदी में डिक्टेशन, कंप्यूटरों का द्विभाषीकरण, वेब साइट को द्विभाषीकरण सौ प्रतिशत, नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों का प्रदर्शन, अनुभागों का निरीक्षण, तिमाही बैठकों का आयोजन, नराकास की बैठकों में भागीदारी, कोड मैनुअल, फार्मस आदि का अनुवाद और ऐसे अनुभाग को नामित करना जहां सारा काम हिंदी में हो।

मुख्य आयकर आयुक्त, शिलांग

मुख्य आयकर आयुक्त, शिलांग की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वित्तीय वर्ष 2015-16 की प्रथम बैठक दिनांक 30 जून, 2015 को श्री एस एम अशरफ, भा रा से, मुख्य आयकर आयुक्त, शिलांग की अध्यक्षता में कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुई। धारा 3(3) का अनुपालन - तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा के क्रम में धारा 3(3) की विस्तृत चर्चा की गई और इसके अंतर्गत आने वाले कुल दस्तावेजों के बारे में विस्तार से बताया। समिति को बताया गया कि समीक्षाधीन तिमाही में धारा 3(3) के अंतर्गत कुल 58 कागज़ात जारी किए हैं और जिनमें से केवल अंग्रेजी में कोई कागज़ात जारी नहीं किया गया है। इस संबंध में अध्यक्ष महोदय ने यह निदेश दिया कि भविष्य में भी इस तरह के कागज़ात द्विभाषी रूप में ही जारी किए जाएं। श्री मनीष कुमार साह, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने समिति को बताया कि वार्षिक कार्यक्रम में दिए लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए तिमाही में दिनांक 28 मई, 2015 को कार्यालय परिसर में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें आयकर विभाग शिलांग में कार्यरत अधिकारियों व कार्मिकों ने हिस्सा लिया। अध्यक्ष महोदय ने प्रत्येक तिमाही में एक कार्यशाला आयोजन का निदेश दिया। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि फाइलों पर छोटी-छोटी टिप्पणियां यथासंभव हिंदी में ही की जाए। हिंदी प्रयोग को बढ़ाने के लिए राजभाषा विकास अनुभाग द्वारा दिए गए सुझावों पर अमल किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी निदेश दिया कि सभी फाइलों एवं रजिस्टरों की सूची को द्विभाषी रूप में तैयार करने के लिए हिंदी अनुभाग में भेजे जाएं।

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 105वीं बैठक संस्थान के सभा-कक्ष में दिनांक 21 अगस्त, 2015 को डॉ॰ आलोक सहाय, निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित की गई। प्रारम्भ में सहायक निदेशक (रा॰भा॰) एवं समिति के सदस्य-संयोजक श्री सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। वेबसाइट पर समय-समय पर जारी की जाने वाली सामग्री द्विभाषी में लोड करने के संबंध में सहायक

\\192.168.3.1\E\2533HA-3

निदेशक (कंप्यूटर) ने यह सूचित किया कि ई-टेंडर अब द्विभाषी रूप में वेबसाइट पर अपलोड किया जा रहा है। अध्यक्ष महोदय ने निर्देश दिया कि धारा 3(3) अर्थात् परिपत्र, टेंडर सूचना, अधिसूचना आदि को अनिवार्य रूप से द्विभाषी रूप में ही वेबसाइट पर अपलोड किया जाए। विभिन्न अनुभागों में द्वारा 3(3) के अंतर्गत जारी कागज़ात की समीक्षा करते हुए अध्यक्ष महोदय ने इस बात पर संतोष प्रकट किया कि इस धारा के अंतर्गत सभी दस्तावेज़ द्विभाषी में ही जारी किए गए हैं।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क के प्रधान आयुक्त का कार्यालय, मुंबई—II

केंद्रीय उत्पाद शुल्क, मुंबई-II आयुक्तालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वित्तीय वर्ष 2014-15 की चतुर्थ बैठक दिनांक 12 जून, 2015 को डॉ॰ राम निवास, आयुक्त की अध्यक्षता में कार्यालय के सम्मलेन कक्ष में संपन्न हुई। बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए श्री एन॰एन॰ कमलापुरे, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने मा॰ अध्यक्ष की अनुमति से बैठक की कार्रवाई प्रारंभ की। मा॰ अध्यक्ष महोदय ने उपरोक्त जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् सभी सदस्यों को निर्देश दिए कि इस बात का ध्यान रखा जाए कि किसी भी स्थिति में हिंदी पत्राचार के प्रतिशत में गिरावट नहीं होनी चाहिए बल्कि कार्यालय से जारी होने वाले अधिक से अधिक पत्र हिंदी में ही मूल रूप से जारी करने का प्रयास करें, जिससे राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी पत्राचार के निर्धारित 90 प्रतिशत के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। उन्होंने आगे कहा जैसा कि विदित है, राजभाषा नीति व नियमों का अनुपालन सुनिश्चित किए जाने संबंधी केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में सरकारी कामकाज़ में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर दिशा-निर्देश/आदेश जारी किए जाते हैं, जिनका अनुपालन करना हम सभी का कर्त्तव्य है। उन्होंने सभी सदस्यों को निर्देश दिया कि वे यह सुनिश्चित करें कि राजभाषा नीति एंव नियमों का भी मंडल कार्यालयों एवं मुख्यालय स्थित सभी अनुभागों में समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है और इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के उपाय किए जा रहे हैं।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, वाराणसी

भारतीय विमानपत्तन लाल बहादुर शास्त्री अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा राजभाषा कार्यान्वयन समिति के वर्ष 2015 की तिमाही बैठक श्री डी॰एस॰ गढ़िया, निदेशक, विमानपत्तन की अध्यक्षता में दिनांक 18 अगस्त, 2015 को नये टर्मिनल भवन के सी॰आर॰पी॰ लाउंज में आयोजित हुई। सदस्य-सचिव ने तिमाही बैठक कार्यालयाध्यक्ष की अध्यक्षता में आयोजित होने के संबंध में सदस्यों के साथ अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे नये अध्यक्ष महोदय के सशक्त निर्देशन में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को और अधिक बल मिलेगा तथा राजभाषा के क्षेत्र में नये कीर्तिमान स्थापित होंगे।

दूरदर्शन केंद्र, दिल्ली

दूरदर्शन केंद्र, दिल्ली की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक अपर महानिदेशक,नाडोजा डॉ. महेश जोशी की अध्यक्षता में दिनांक 24 जून,2015 को आयोजित की गई। सहायक निदेशक (रा.भा.) ने सुचित किया कि दूरदर्शन केंद्र, दिल्ली की वेबसाइट पर उपलब्ध अंग्रेजी सामग्री का राजभाषा एकांश द्वारा हिंदी में अनुवाद करके उसे वेबसाइट पर अपलोड करने तथा वेबसाइट का हिंदी में उपलब्ध करने का कार्य प्रशासन अनुभाग द्वारा नामित एजेंसी को दे दी गई है। इस सामग्री का एजेंसी द्वारा पेज सेटिंग के बाद उसका राजभाषा एकांश द्वारा पुन: पाठशोधन किया गया है।

आकाशवाणी, बीकानेर

इस केंद्र पर गठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 21 जुलाई,2015 को श्री एस.के.मीना, निदेशक (अभियांत्रिकी) एवं केंद्राध्यक्ष महोदय की अध्यक्षता में संपन्न हुई। यह बैठक वर्ष 2015 की द्वितीय बैठक थी जो अप्रैल-जून, 2015 की तिमाही में राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं प्रगति पर विचारार्थ रखी गई थी। सदस्य सचिव ने 2015-16 के वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम की सभी मदों से सदन को अवगत कराते हुए कहा कि 'क' क्षेत्र में होने के नाते इस केंद्र पर कामकाज का लक्ष्य 100 प्रतिशत है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं है यदि हम हिंदी के प्रति समर्पित हो जाए। तकनीकी किस्म की विवरणियां जो भेजी जाती हैं, उन पर अग्रेषण पत्र हिंदी में लगाकर भी हम लक्ष्य प्राप्ति में सहयोग

\\192.168.3.1\E\2533HA-3

कर सकते हैं। अध्यक्ष महोदय ने तकनीकी किस्म के पत्राचार में हिंदी अनुवाद का सहारा लेकर इसे शतप्रतिशत तक पहुंचाने के निर्देश दिए। सदस्य सचिव ने आगे कहा कि इस केंद्र की हिंदी पत्रिका मरूवाणी के 16वें अंक को राजस्थान विशेषांक का रूप दिया जा रहा है। परन्तु न तो इस केंद्र से और न ही राजस्थान स्थित अन्य केंद्रों से इस विषय से संबंधित कोई रचना प्राप्त हुई है। इसके अभाव में इसके स्वरूप में परिवर्तन किया जा सकता है। फिर भी इस केंद्र के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अनुरोध किया जाता है कि किसी भी रूप में अपना रचनात्मक सहयोग यथाशीघ्र प्रदान करें ताकि पत्रिका को अंतिम रूप दिया जा सके। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हिंदी पत्रिका इस केन्द्र की पहचान है और हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण कार्य है।

आकाशवाणी, जयपुर

आकाशवाणी, जयपुर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक सोमवार, दिनांक 20 जुलाई, 2015 को अपराहन 3:00 बजे केंद्राध्यक्ष श्री सुधीर राखेचा अध्यक्षता में आयोजित की गई। सर्व प्रथम अध्यक्ष ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया और सहायक निदेशक (राजभाषा) को बैठक प्रारम्भ करने की अनुमति दी । सहायक निदेशक (राजभाषा) ने पिछली बैठक का कार्यवृत्त पढ़ा तथा इसकी समीक्षा की गई एवं अनुवर्ती कार्रवाई पर संतोष व्यक्त किया। सदस्य सचिव ने बताया कि केंद्र के सभी अधकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का कार्य साधक ज्ञान है एवं सभी को प्रवीणता प्राप्त है। अत: प्रशिक्षण अपेक्षित नहीं है।

हिंदी कार्यशाला दिनांक जुलाई, 2015 को आयोजित की गई, जिसमें मल्टी टास्किंग कर्मचारियों सहित 60 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला की विशेषता यह रही कि इसमें स्वयं केंद्राध्यक्ष, केंद्र अभियंता एवं उप निदेशक श्रोता अनुसंधान भी उपस्थित रहे।

दूरदर्शन केंद्र, ईटानगर

21 अगस्त, 2015 को श्री राजेश एन तायड़े केंद्र प्रभारी एवं निदेशक (अभि०) की अध्यक्षता में दूरदर्शन केंद्र: ईटानगर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक कार्यालय के सभा कक्ष में आयोजित की गई। श्री बेणी माधव भट्टाचार्य, हिंदी प्रभारी ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अनुरोध किया कि सितंबर, 2015 में हिंदी पखवाड़ा, हिंदी दिवस तथा हिंदी सप्ताह आयोजित किया जाएगा तथा सभी सदस्यों को इसमें भाग लेकर सफल बनाए। साथ में 01 सितंबर, 2015 से 31 सितंबर, 2015 तक सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अनुरोध करते हुए कहा कि वे इस माह अपना हस्ताक्षर हिंदी में करें। श्री पल्लव चक्रवर्ती, उप निदेशक समाचार ने सभी सदस्यों को अवगत कराया कि सभी प्रकार के मांग पत्र द्विभाषी बना दिया गया है तथा हिंदी में रोजगार समाचार तथा अरूणाचल इस हफते हिंदी में प्रसारित किया जा रहा है।

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केंद्र, गुवाहाटी

30 जून, 2015 को श्री एम.एस. अन्सारी, अपर महानिदेशक (अभियांत्रिकी) की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक कार्यालय के सभा कक्ष में आयोजित की गई। सदस्य सचिव ने सर्वप्रथम सभी उपस्थित सदस्यों का स्वागत करते हुए बताया कि श्रीमती ऋचा बैनर्जी, संयुक्त निदेशक, आकाशवाणी महानिदेशालय के निर्देशानुसार सिविल निर्माण स्कंध के कार्यालय को भी इस बैठक में शामिल किया गया है और यह पहली बैठक है जो संयुक्त रूप से आयोजित की जा रही है। श्री अजित कुमार सिन्हा अधीक्षण अभियंता तथा उनके कार्यालय से नामित सदस्यों का राजभाषा कार्यान्वयन समिति में शामिल होने पर स्वागत किया। सदस्य सचिव ने समिति को जानकारी दी कि हिंदी की गृह पत्रिका ''नीलांचल'' छप कर आ चुकी है। सप्ताह में एक दिन हिंदी में अधिकाधिक कामकाज़ हिंदी में करने पर चर्चा की गई। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि इसके लिए गुरुवार का दिन निर्धारित किया जा सकता है। कार्यालय के स्टाफ के सदस्यों द्वारा सर्वाधिक कामकाज़ हिंदी में काम करने पर निजी पुरस्कार देने संबंधी मुद्दे पर चर्चा की गई। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि फिलहाल सबसे अधिक हिंदी में पत्र जारी करने वाले स्टाफ के सदस्य को पुरस्कृत करने पर विचार किया जा सकता है। अधीक्षण अभियंता (सिविल) ने कहा कि हर माह हिंदी का कोई न कोई कार्यक्रम जैसे-वाद-विवाद, भाषण आदि का आयोजन किया जाए ताकि हिंदी की चर्चा होती रहे और हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बना रहे। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि इस संबंध में हिंदी अनुभाग विचार कर आवश्यक कार्यवाही करे।

\\192.168.3.1\E\2533HA-3

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें,

सूरत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सूरत की विशेष बैठक दिनांक 13 मई, 2015 को सूरत क्षेत्रीय कार्यालय के सभा कक्ष में आयोजित की गई। बैठक की मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव श्रीमती पूनम जुनेजा एवं भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, मुंबई के उपनिदेशक (कार्यान्वयन) श्री विनोद कुमार शर्मा उपस्थित थे। बैठक की अध्यक्षता बैंक ऑफ बड़ौदा, सूरत क्षेत्र के उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री शेलेंद्र सिंह ने की। बैठक में उपस्थित मुख्य अतिथि श्रीमती पूरम जुनेजा जी ने सर्वप्रथम राजभाषा को आगे बढ़ाने के लिए सभी सदस्यों को उनके कार्यों में इतनी व्यस्तता के बावजूद इस बैठक में आगमन हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि राजभाषा के प्रति आपकी रुचि, इस छोटे से अंतराल पर आपको सूचित करने पर भी आपकी लगभग शत प्रतिशत उपस्थिति को देखकर पता चल रहा है। अपने बारे में उन्होंने बताया कि मैंने 10 साल तक संसदीय राजभाषा समिति में सचिव के रूप में कार्य किया। इसके बाद मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय में महासचिव के रूप में कार्य किया। हिंदी भाषा से मेरा बड़ा नाजुक-सा संबंध है। मैंने बी.ए. अंग्रेजी साहित्य से एवं एम.ए. भी अंग्रेजी साहित्य से उत्तीर्ण किया। इसके अलावा एल. एल.बी. भी अंग्रेजी माध्यम से की है। सिविल सेवाओं में आने के बाद भी मेरा हिंदी भाषा से कोई गहरा संबंध नहीं था, परंतु आज मैं यह कहना चाहूंगी कि हिंदी से बड़ी कोई सेवा नहीं है। हिंदी में कार्य करना अपने आप में बड़ा कार्य है। इस अवसर पर उपस्थित सदस्यों ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

बेंगलूर, (बैंक)

22 जुलाई, 2015 को केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय, बेंगलूर के सभागार में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), बेंगलूर की 59वीं अर्ध वार्षिक बैठक केनरा बैंक के कार्यपालक, निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास (बैंक), बेंगलूर श्री प्रद्युमन सिंह रावत की अध्यक्षता में संपन्न हुई। नराकास (बैंक), बेंगलूर के सदस्य-सचिव एवं सहायक महाप्रबंधक, केनरा बैंक, मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय, बेंगलूर डॉ. सोहन लाल एवं क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण), बेंगलूर के उप निदेशक श्री पी. विजय कुमार ने नराकास के सदस्य कार्यालयों की हिंदी संबंधी प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा की। बैठक के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), बेंगलूर की छ:माही पत्रिका 'प्रयास' के 31वें अंक का विमोचन किया गया। इस बैठक के दौरान विभिन्न श्रेणियों के तहत अपने कार्यालयों/शाखाओं में राजभाषा नीति का सबसे अच्छा कार्यान्वयन करने के लिए 17 विभिन्न बैंकों/वित्तीय संस्थाओं को राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया।

रांची (बैंक)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), रांची की चौदहवीं अर्ध वार्षिक बैठक दिनांक 15 जुलाई, 2015 को होटल ली लैक, रांची में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री पार्थदेब दत्त, अध्यक्ष, नराकास (बैंक), रांची एवं क्षेत्र महाप्रबंधक, इलाहाबाद बैंक द्वारा की गई। श्री सुनील कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक, इलाहाबाद बैंक ने नराकास (बैंक), रांची द्वारा विभिन्न बैंकों में राजभाषा प्रचार-प्रसार हेतु किए गए कार्यों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि राजभाषा का मंच अपने आप में महत्वपूर्ण मंच है क्योंकि इस मंच से अभी बैंक समेकित रूप से कार्य करते हैं। श्री निर्मल कुमार दुबे, प्रभारी अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व), कोलकाता ने अपने संबोधन में सदस्यों का अभिवादन करते हुए कहा कि नराकास की बैठकें मुख्यत: कार्यपालकों के लिए आयोजित की जाती हैं। अत: समिति द्वारा आयोजित अर्द्ध-वार्षिक बैठकों में सभी कार्यालयों से उनके प्रमुखें द्वारा अनिवार्यत: सहभागिता की जानी चाहिए। श्री दुबे ने नराकास की वेब साइट के अनावरण पर अध्यक्ष महोदय को बधाई दी। उन्होंने भारत सरकार द्वारा संचालित पारंगत कार्यक्रम की भी जानकारी दी।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री पार्थदेव दत्त, अध्यक्ष, नराकास (बैंक), रांची एवं क्षेत्र महाप्रबंधक, इलाहाबाद बैंक ने सर्वप्रथम वेब साइट के अनावरण पर शुभकामनाएं दी। समिति की वार्षिक पत्रिका 'स्पंदन' पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री दत्त ने कहा कि पत्रिका का प्रकाशन नराकास के अन्तर्गत कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी लेखन के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से किया जाता है। यह पत्रिका राजभाषा के कार्यों को प्रदर्शित करने का एक सशक्त माध्यम भी है। अंत में धन्यवाद ज्ञापन श्री वी.के. शर्मा, मुख्य प्रबंधक, पंजाब नैशनल

\\192.168.3.1\E\2533HA-3

बैंक द्वारा पारित किया गया। तदुपरांत बैठक समाप्त की घोषणा कर दी गई।

झज्जर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, झज्जर की छमाही बैठक श्री प्रभात शुक्ला नराकास अध्यक्ष एवं अग्रणी बैंक प्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक, झज्जर की अध्यक्षता में दिनांक 23 जुलाई, 2015 को पंजाब नैशनल बैंक, अग्रणी बैंक कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में आयोजित हुई। इस बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, नई दिल्ली से श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) एवं कार्यालय अध्यक्ष विशेष रूप से उपस्थित थे।

बैठक के प्रारंभ में श्री एस.एस. रोहिला, अधिकारी एवं नराकास सचिव ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए समिति के बारे में प्रकाश डाला। अपने उदबोधन में श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) ने भारत सरकार की राजभाषा नीति, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम वर्ष 2015-16 पर चर्चा, नराकास का महत्व तथा राजभाषा संबंधी अन्य मदों की विस्तार से जानकारी दी। समिति को अवगत कराया गया कि झज्जर शहर में गृह मंत्रालय द्वारा नराकास का दायित्व पंजाब नैशनल बैंक को सौंपा गया है। बैठक में उपस्थित सभी सदस्य कार्यालयों को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के बारे में बताया गया।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क एवं सेवाकर आयुक्तालय, गाजियाबाद

केंद्रीय उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क एवं सेवाकर आयुक्तालय, गाजियाबाद की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 07 अगस्त, 2015 को आयुक्त श्री जे.आर. पाणिग्राही, की अध्यक्षता में आयोजित की गई। सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय, ने बैठक में सभी सदस्यों का स्वागत किया और सदस्य सचिव को बैठक की कार्रवाई प्रारम्भ करने की अनुमति दी। सदस्य सचिव ने पिछली बैठक के कार्यवृत्त पर अनुवर्ति कार्रवाई को प्रस्तुत किया तथा समिति द्वारा उसकी पुष्टि की गई।

अध्यक्ष महोदय ने सभी वरिष्ठ अधिकारियों, मण्डल प्रभारियों एवं मुख्यालय स्थित सभी शाखा प्रभारियों को निर्देश दिया कि वे मूल रूप से हिंदी में पत्राचार करें क्योंकि गाजियाबाद आयुक्तालय 'क' क्षेत्र में आता है। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली द्वारा हिंदी पत्राचार हेतु 100 प्रतिशत का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अत: लक्ष्य को देखते हुए अभी और प्रयास किया जाना अपेक्षित है। हिंदी पत्राचार बढ़ाने हेतु मूल पत्राचार अनुस्मारक, व्यक्तिगत सुनवाई, अग्रसारण पत्र, अधिनिर्णयन आदेश का 'प्रिएम्बल', सूचना का अधिकार (आरटीआई) आदि हिंदी में ही किए जाएं। आयुक्त महोदय ने यह भी निर्देश दिया कि पत्रिका अबिलंब प्रकाशित की जाए जिसके लिए सभी अधिकारी एवं कर्मचारी स्तरीय लेख, कविता, कहानी, रिपोर्ताज, विभागीय जानकारी से संबंधित लेख, चुटकले आदि हिंदी शाख को दें। अधिकारियों एवं कर्मचारियों के परिवार के सदस्य भी पात्रिका हेतु लेख दे सकते हैं।

रोहतक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रोहतक की छमाही बैठक श्री आर.के. सलूजा, नराकास अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक की अध्यक्षता में दिनांक 27 अगस्त, 2015 को पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में आयोजित हुई। इस बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, नई दिल्ली से श्री नरेंद्र सिंह महेरा, अनुसंधान अधिकारी (कार्यान्वयन) एवं कार्यालय अध्यक्ष उपस्थित थे। बैठक के प्रारम्भ में श्री एन.एस. तंवर, सदस्य सचिव एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए समिति के उद्देश्यों एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात मंचासीन नए नराकास अध्यक्ष एवं सभी उपस्थतों का स्वागत किया व अध्यक्ष की अनुमति से कार्ससूची के अनुसार बैठक की कार्यवाही प्रारम्भ की गई। बैठक में चर्चा के दौरान यह निर्णय भी लिया गया कि नराकास के तत्वावधान में भविष्य में भी प्रत्येक माह किसी एक सदस्य कार्यालय द्वारा कोई-न-कोई हिंदी का कार्यक्रम (जैसे कि यूनीकोड प्रशिक्षण, हिंदी कार्यशाला, कोई हिंदी प्रतियोगिता आदि) अवश्य किया जाए। इस कड़ी में अक्तूबर माह में केंद्रीय विद्यालय, नवंबर माह में भारतीय जीवन बीमा निगम तथा दिसंबर माह में पंचाब नैशनल बैंक द्वारा राजभाषा संबंधी कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया। आयोजित किए जाने

\\192.168.3.1\E\2533HA-3

वाले कार्यक्रमों में सदस्य कार्यालयों से अधिकारियों/कर्मचारियों को नामित करने का अनुरोध किया गया।

सोनीपत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सोनीपत की बैठक दिनांक 05 अगस्त, 2015 को श्री महेन्द्र कुमार, पुलिस उप महानिरीक्षक, केरिपुबल, सोनीपत की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में मुख्य अतिथि के तौर पर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली के श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) सरोजिनी नगर, नई दिल्ली ने शिरकत की। सदस्य सचिव ने सूचित किया कि सदस्यों कार्यालयों द्वारा तिमाही बैठकों की रिपोर्ट समय पर प्राप्त नहीं हो रही हैं। अत: प्रत्येक तिमाही रिपोर्ट को समय पर ऑन-लाईन भेजना सुनिश्चित करें एवं 1-1 प्रतिलिपि इस कार्यालय को भी भेजना सुनिश्चित करें ताकि सदस्यों कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्टों के आधार पर समीक्षा की जा सकें एवं इन रिपोर्टों के आधार पर ही वार्षिक पुरस्कारों का निर्धारण किया जा सके। अधिकतर कार्यालयों में पत्राचार हिंदी में ही हो रहा है। कुछ एक कार्यालयों में पत्राचार निर्धारित लक्ष्यों से बहुत कम है। अत: निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु संबंधित कार्यालयों द्वारा सघन प्रयास किया जाना आवश्यक है।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में नराकास अध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार, पुलिस उप महानिरीक्षक महोदय ने कहा कि हमारे कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाना हम सबकी जिम्मेदारी है, केवल इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। इसके लिए केवल हम वरिष्ठ धिकारियों को शुरूआत करने की जरुरत है और लगातार मॉनीटरिंग की जरुरत है। हिंदी के प्रयोग के लिए हम अपने कार्यालयों के लिए कोई वार्षिक कार्य योजना भी बना सकते हैं। हम यह कोशिश करें कि जो काम एक बार हिंदी में आरंभ हो गया है वह दोबारा अंग्रेजी में शुरू न हो।

शिमला

शिमला नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 3 जून, 2015 को मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, रेलवे बोर्ड भवन के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता मुख्य आयकर आयुक्त एवं समिति अध्यक्ष श्रीमती अंबिका खटुआ ने की।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्रीमती अंबिका खटुआ, मुख्य आयकर आयुक्त ने सदस्यों से कहा कि वे बैठक में लिए गए निर्णयों को अपने-अपने कार्यालयों में लागू करवाएं और अपने कार्मिकों को समिति की गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें। बैठक में चर्चा अनुसार सदस्य कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग संबंधी निरीक्षण करवाया जाएगा। जिन कार्यालयों में अच्छा कार्य हिंदी में हो रहा है वे निश्चय ही प्रशंसा के पात्र हैं। लेकिन जिन कार्यालयों में कम काम हो रहा है वे अवश्य कुछ ठोस प्रयास करें। बैठक में कार्य की समीक्षा का उद्देश्य निंदा करना नहीं है बल्कि राजभाषा के प्रयोग में आगे वाली कठिनाइयों को दूर करना है। हिंदी में कार्य करना मुश्किल नहीं है केवल शुरुआत की जरूरत है और उसके बाद निरंतर मॉनीटरिंग की जरूरत है।

चण्डीगढ़

बैठक में भारतीय खेल प्राधिकरण, भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल-परिक्षेत्रीय कार्यालय, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र-हिमाचल प्रदेश, भारतीय जीवन बीमा निगम इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों/प्रतिनिधियों ने अपने-अपने कार्यालय में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए किए गए प्रयासों की जानकारी सदस्यों को दी। अपने संबोधन में अध्यक्ष महोदय ने सदस्यों से कहा कि 'आज की बैठक में उपस्थित होने के लिए मैं सभी सदस्यों और रा.भा. विभाग के प्रतिनिधि श्री नरेंद्र मेहरा का धन्यवाद करता हूं। आज बैठक में काफी चर्चा की गई है और लगभग 110 कार्यालयों की रिपोर्टों की समीक्षा की गई। जिन कार्यालयों में अच्छा कार्य हो रहा है, उन्हें मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूं। मुझे आशा है कि वे भविष्य में भी वे अपने प्रयास जारी रखेंगे। जिन कार्यालयों में अभी भी कुछ कमी है वे उसे दूर करने के लिए कुछ ठोस प्रयास करें। हिंदी में कार्य करना मुश्किल नहीं है कवल एक शुरुआत की जरूरत है।'

अंबाला छावनी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति/अंबाला छावनी की इस वर्ष की पहली बैठक मंडल रेल प्रबंधक श्री अतिल कुमार कंठपाल

\\192.168.3.1\E\2533HA-3

स्वागत किया। बैठक में हिंदी अधिकारी सहित नराकास (उपक्रम) सदस्य कार्यालयों कि विभागाध्यक्षों, नराकास (केंद्रीय कार्यालय) के प्रतिनिधि और भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में राजभाषा विभाग के उप निदेशक (कार्या॰) डॉ॰ बी॰के॰ सिंह, हिंदी शिक्षण योजना के उप निदेशक (पूर्वोत्तर) श्री एसएलएस पूर्ति एवं केंद्रीय हिंदी निदेशालय के उप निदेशक (भाषा) श्री रामनिवास जी उपस्थित रहे। हर वर्ष की भांति इस बैठक के अध्यक्ष, नराकास (उपक्रम) श्री बरपूजारी, उन महाप्रबंधक (प्रशासन, सीसी एव सीएसआर) श्रीमती अंजन बरुआ और राजभाषा विभाग के प्रतिनिधिगण डॉ॰ बी॰के॰ सिंह, श्री एसएलएस पूर्ति और रामनिवास के करकमलों से लोकापर्ण किया गया तथा उत्कृष्ट रचनाकारों को पुरस्कार व प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

(ग) कार्यशाला

आकाशवाणी, दिल्ली

आकाशवाणी, दिल्ली में राजभाषा हिंदी के प्रति कार्मिकों में चेतना बनाए रखने के लिए तथा सरकारी कामकाज हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के क्रम में 03 जुलाई, 2015 को प्रसारण भवन के सभागार कक्ष में आकाशवाणी, दिल्ली के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कंप्यूटर प्रचालन एवं यूनिकोड समर्थित फॉन्टस विषय पर आयोजित कार्यशाला में व्याख्याता के रूप में श्री केवल कृष्ण, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राष्ट्रीय सूचना-प्रौद्योगिकी केंद्र (एन॰आई॰सी॰),राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय को आमन्त्रित किया गया था। इस कार्यशाला में कंप्यूटर पर कार्य करने वाले कार्मिकों के साथ-साथ कई कार्यक्रम अधिकारियों ने भी भाग लिया। श्री राजीव कुमार शुक्ल, उप-महानिदेशक (कार्यक्रम) ने अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। किसी भी प्रकार की सूचना दूर बैठे व्यक्ति को सूचना-प्रौद्योगिकी की सहायता से तभी भेजी व प्राप्त की जा सकती है,जब तत्संबंधी वॉछिंत तकनीकी आवश्यकताएं पूरी की जाती हों। उन्होंने यूनिकोड समर्थित फॉन्टस की उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला।

पश्चिम रेलवे, मुम्बई

पश्चिम रेलवे के प्रधान कार्यालय के विभिन्न विभागों में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दिनांक: 22 जुलाई 2015 को मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर श्री जी॰एस॰ टुटेजा की अध्यक्षता में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में आयकर विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ॰ अविनाश कान्त शर्मा ने संघ की राजभाषा नीति विषय पर और उप महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ॰ सुशील कुमार शर्मा ने कंप्यूटरों में यूनि कोड के माध्यम से हिंदी में कार्य करना विषय पर व्याख्यान दिए।

एनएमडीसी लिमिटेड, हैदराबाद

एमएमडीसी लिमिटेड के मुख्यालय, हैदराबाद में 07 मई, 2015 को निगम के सभी विभागों में कार्यरत अधिकारियों के लिए एक दिवसीय विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला अधिकारियों को राजभाषा नीति की जानकारी देने, यूनिकोड पर हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तथ् तत्संबंधी शब्दावली का अभ्यास कराने के उद्देश्य से आयोजित की गई 1 मुख्य अतिथि श्री एल॰एन॰ मार्थ, अधिशासी निदेशक (संसाधन योजना एवं सुरक्षा) ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। उन्होंने एनएमडीसी मुख्यालय में राजभाषा प्रयोग की समीक्षा करते हुए सभी प्रतिभागियों से आग्रह किया कि वे अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करें। कार्यशाला के प्रथम सत्र में अतिथि संकाय डॉ॰ वी॰ प्रत्यूषा, उप प्रबंधक (राजभाषा), एचएएल, हैदराबाद ने हिंदी टिप्पण तथा प्रारूप लेखन पर अभ्यास सत्र लिया। कार्यशाला के द्वितीय सत्र में श्री रवि कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग, हैदराबाद ने राजभाषा नीति एवं वार्षिक कार्यक्रम के बारे में प्रतिभागियों से चर्चा की।

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

एमसीएफ, हासन

अप्रैल–जून 2015 तिमाही के लिए मुख्य नियंत्रण सुविधा, हासन में 17 जून 2015 को एमसीएफ–हासन में कार्यरत प्रकार्यात्मक पदनामित अधिकारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में सत्र संचालन के लिए श्री अशोक कुमार बिल्लूरे, संयुक्त निदेशक (रा॰भा॰), अंतरिक्ष विभाग, बेंगलूरू को आमंत्रित किया गया। कार्याशाला के उद्घाटन सत्र में कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री एस॰ परमेश्वरन, निदेशक, एमसीएफ ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा के कार्यान्वयन का दायित्व सबसे पहले समहू/प्रभाग/अनुभाग प्रधानों पर है और वे अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में करें ताकि अन्य कर्मचारी उनसे प्रेरित होकर अपना दैनंदिन कार्यालयीन कार्य हिंदी में कर सकें। कार्याशाला के दौरान श्री आर॰ शिवकुमार, प्रधान, लेखा व आंविस/का साप्र, एमसीएफ ने स्वागत भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी को दिल से अपनाने की जरूरत है तभी हम अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में कर पायेंगे।

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, राँची में 27 जून, 2015 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ॰ आलोक सहाय ने किया। उन्होंने अपने उदघाटन भाषण में वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों को संबोधित करते हुए कि हमारा संस्थान हिंदी भाषी प्रदेश में है। अत: हमारा यह दायित्व बनता है कि हम अपना शतप्रतिशत सरकारी कार्य हिंदी में करें। उन्होंने यह भी कहा कि तसर रेशम उद्योग मुख्य रूप से जनजाति एवं समाज के पिछड़े वर्गों के उत्थान से जुड़ा हुआ है। अतएव उन तक अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकियों को पहंचाने के लिए हिंदी का कोई विकल्प नहीं है। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में यशोधरा राठौर, हिंदी विभाग, राँची कॉलेज, राँची ने वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों को संबोधित करते हुए राजभाषा हिंदी के विविध पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अन्त में डॉ॰वी॰पी॰ गुप्ता, वैज्ञानिक–डी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िसा, भुवनेश्वर

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िसा भुवनेश्वर, कार्यालय में दिनांक 17 जून, 2015 से 19 जून, 2015 तक तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कार्यालय के निधि वर्ग, प्रशासन गर्ग, पेंशन वर्ग एवं लेखा व वीएलसी वर्ग के कार्यों से संबंधित विषयों पर हिंदी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन पर प्रशिक्षण दिया गया। इसके अलावा कार्यालयीन शब्दावली सामान्य पत्राचार, राजभाषा नीति एवं नियमों के बारे में भी जानकारी दी गई। कार्यालयीन में उपस्थित सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को व्याख्यान एवं कक्षाओं का संचालन श्री आर॰ एन॰ चान्द, श्री आर॰ बी॰ पासवान, सहायक निदेशक ने किया।

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, शिलांग

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार तथा सरकारी कामकाज में हिंदी में कार्य को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, शिलांग में 28 मई, 2015 को एक दिवसीय हिंदी कार्शाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में आयकर विभाग, शिलांग क्षेत्र के कार्मिक शामिल हुए। श्री मनीष कुमार साह, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने कार्यशालाएं में तिमाही प्रगति रिपोर्ट के बारे में विस्तार से बताया। कार्यशाला के माध्यम से सभी कर्मचारियों को हिंदी सीखने और उसका उपयोग सरकारी कार्य में करने की अपील की गई। यह भी कहा गया कि कार्यालय द्वारा आयोजित कार्यशालाओं का भरपूर लाभ उठाया जाना चाहिए। जिससे कि कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग में सार्थक सुधार हो सके।

प्रमाणु ऊर्जा विभाग, मुंबई

प्रमाणु ऊर्जा विभाग, अणुशक्तिनगर, मुंबई स्थित यूनिटों–निर्माण सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय, भारी पानी बोर्ड, क्रय एवं भंडार निदेशालय, परमाणु, ऊर्जा नियामक परिषद एवं विकरण एवं आइसोटोप प्रौद्योगिकी बोर्ड की संयुक्त राजभाषा

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

समन्वय समिति के तत्वावधान में इन पाँचों युनिटों के कर्मचारियों एवं अधिकारियों हेतु प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान (ATI), शून्य तल, विक्रम साराभाई भवन, अणुशक्तिनगर में दिनांक 16 जून, 2015 से 18 जून 2015 तक तीन दिवसीय संयुक्त हिंदी कार्यशाला हिंदी का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्‌घाटन निसेसंप्रति के मुख्य अभियंता श्री प्रदीप अग्रवाल ने किया। इस कार्यशाला में भारत सरकार की राजभाषा नीति, प्रमाणु ऊर्जा विभाग की गतिविधियां, पत्राचार के प्रकार एवं अभ्यास, हिंदी वर्तनी का मानकीकरण, पारिभाषिक शब्दावली, टिप्पण लेखन एवं अभ्यास, परमाणु ऊर्जा विभाग की प्रोत्साहन योजनाएं इत्यादि विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। निसेसंप्रति के मुख्य प्रशासन अधिकारी श्री एस॰बी॰ बोस द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण, जयपुर

जयपुर विमानपत्तन पर दिनांक 08 जुलाई, 2015 से 09 जुलाई, 2015 तक दो अर्धदिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। यह कार्यशाला पिछली हिंदी कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षार्थियों से प्राप्त सुझावों के आधार पर निदेशक विमानपत्तन के निर्देशनुसार प्रशासनिक व कार्मिक मामलों में हिर्दी का प्रयोग/कठिनाई व प्रशासनिक पत्राचार में हिंदी का प्रयोग कठिनाई तथा समाधान पर आयोजित की गई, जिसमें सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया से आए राजभाषा अधिकारी श्री ओमप्रकाश मनियारा द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस अवसर पर निदेशक विमानपत्तन द्वारा सभी प्रतिभागियों से कार्यशाला के संबंध में फीडबैक तथा सुझाव मांगे गए। निदेशक महोदय ने कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को सुझाव दिया कि वे अपने कार्यालय में अपना अधिक-से-अधिक कार्य हिंदी में ही करें।

आकाशवाणी, नागपुर

राजभाषा कार्यान्वयन समिति आकाशवाणी,नागपुर के तत्वाधान में कार्यालय के सभाकक्ष में योग पर आधारित कार्यक्रम पर कार्यशाला का आयोजन दिनांक 10 जून,2015 को कार्यालय प्रमुख श्री रमेश घरडे और कार्यक्रम प्रमुख श्री गोविंदराजन की उपस्थिति में किया गया। इस कार्यशाला में आमंत्रित योगाचारी स्वामी विस्मयानंदजी द्वारा योग के माध्यम से सभी उपस्थित अधिकारीगण/कर्मचारीगण को जानकारी दी गई योग क्या है? ध्यान क्या है? हम जीवन को सुख-शान्ति और समृद्ध कैसे बना सकते हैं आदि विषयों को बड़े सरल और सहज भाषा में समझाया। ध्यान कैसे किया जाता है? क्यों करना चाहिए? इसके क्या फायदे हैं। इसकी क्रिया एवं आसन संबंधित विस्तृत जानकारी दी। सरल एवं सहज हिंदी में ध्यान कराने की विधि से सभी उपस्थित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण को प्रत्यक्ष अनुभव कराया। इस कार्यशाला में कार्यालय के सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण, श्रीमती रत्ना भामरे डीडीओ/सहायक अभि॰, श्री बी॰ श्रीनिवास, कार्यक्रम अधिकारी, श्रीमती सुनालिनी शर्मा, कार्यक्रम अधिकारी, श्रीमती प्रियदर्शिनी राउत, कार्यक्रम अधिकारी, श्रीमती कल्पना नंदनपवार, कार्यक्रम अधिकारी, श्री शरद सूर्यवंशी, प्रभारी हिंदी अधिकारी, श्रीमती नंदा बल्लाल, श्री एस॰एस॰ मोहलिया, श्री जी॰जी॰ जाधव, श्री एम॰टी॰ हेहाउ, लेखापाल आदि उपस्थिति थे। योग कार्यशाला समापन और आभार प्रदर्शन डॉ॰ हरीश पाराशर -'ॠणु' ने किया।

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, हावड़ा

दिनांक 01 अगस्त,2015 को राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की प्रगति का जायजा लेने हेतु क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र) के अनुसंधान अधिकारी (कार्या) श्री निर्मल कुमार दूबे द्वारा अंचल कार्यालय, हावड़ा का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर अंचल कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के लिय यूनिकोड एप्लिकेशन को सक्रिय करके हिंदी में काम करने में सक्षम बनाने की अपेक्षा को पूरा करने हेतु अंचल कार्यालय, हावड़ा के परिसर में अधिकारी एवं लिपिक संवर्ग हेतु यूनिकोड आधारित हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। अध्यक्ष महोदय श्री रघुनाथ दास जी के अध्यक्षीय भाषण में सभी स्टाफ सदस्यों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित किया तथा सभी को धारा 3(3) एवं नियम 5 का अनुपालन सुनिश्चित करने को कहा। राजभाषा अधिकारी

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

सुश्री पूनम कुमारी प्रसाद ने कंप्यूटर पर यूनिकोड सक्रियण,हिंदी टंकण एवं तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया।

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, पुणे

25 जून, 2015 को मध्य रेल के पुणे मंडल पर राजभाषा विभाग द्वारा रेलवे बोर्ड के निदेशानुसार मंडल अधिकारियों के लिए अधिकारी हिंदी डिक्टेशन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के आरंभ में पुणे मंडल के अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री मिलिन्द देउस्कर ने अपने संबोधन में बताया कि राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से अधिकारियों के लिए हिंदी डिक्टेशन कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इस कार्यशाला में डॉ॰ श्रीमती विभावरी गोरे, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी ने हिंदी में डिक्टेशन देने का सैध्दांतिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला को सफल बनाने में राजभाषा विभाग, पुणे के सभी कर्मचारियों ने विशेष प्रयास किए।

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली

संस्थान के अधिकारी/कर्मचारी अपना कामकाज हिंदी में सरलता से कर सकें, इसमें उन्हें सहायता देने के लिए समय-समय पर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है इसी काम में संस्थान के स्टाफ सदस्यों के लिए 27 जुलाई, 2015 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य यूनिकोड साफ्टवेयर 'सारांश' के इस्तेमाल का अभ्यास कराना था जिससे इसका प्रयोग आसानी से किया जा सके। इस कार्यशाला का उद्घाटन डॉ॰ दिनेश पॉल, निदेशक ने किया। उन्होंने उपस्थित सभी सहभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि इस कार्यशाला से सहभागियों को यूनिकोड साफ्टवेयर 'सारांश' के इस्तेमाल करने में मदद मिलेगी और उनकी इस साफ्टवेयर को इस्तेमाल करने में आने वाली कठिनाइयां दूर होंगी। उन्होंने यह भी कहा कि प्रशिक्षण के दौरान आप सबसे ज्यादा सीख पाते हैं। कार्यशाला के विषय को आर्यन ई साफ्टवेयर प्राइवेट कंपनी के श्री कपिल अरोड़ा ने भाषण एवं अभ्यास पद्धति द्वारा प्रतिमादित किया। उन्होंने प्रतिभागियों के यूनिकोड की जानकारी देते हुए बताया कि यूनीकोड का प्रयोग वे सभी अधिकारी एवं कर्मचारी भी कर सकते हैं,जिन्हें हिंदी टंकण नहीं आता था यूनीकोड में ऐसे बहुत से विकल्प हैं, जिसकी मदद से पत्र, नोटिंग, ई-मेल आदि हिंदी में भेजे जा सकते हैं। कार्यशाला का समापन करते हुए हिंदी अधिकारी, श्रीमती रेखा जुनेजा ने सभी सहभागियों का धन्यवाद किया और आशा प्रकट की कि यह कार्यशाला सहभागियों के लिए पर्याप्त उपयोगी रहेगी और इससे प्राप्त जानकारी का वे कंप्यूटर पर अपने दैनिक कामकाज में उपयोग करेंगे।

कार्पोरेशन बैंक, मंगलूर

कार्पोरेशन बैंक ने प्रधान कार्यालय के विभिन्न कार्यात्मक इकाइयों में नामित राजभाषा संपर्क अधिकारियों के लिए 26 जून, 2015 को वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग के मार्गदर्शन में 'राजभाषा प्रयोग-आपसी संवाद-सार्थक दिशा एवं मस्तिष्क मंथन' के अंतर्गत एक कार्यशाला आयोजित की। 25 राजभाषा संपर्क अधिकारियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। श्री अम्बरीस कुमार सिंह, मुख्य प्रबंधक ने औपचारिक रूप से सभी का स्वागत किया। श्री सी॰के॰ गोपाल, महा प्रबंधक ने कार्यशाला का विधिवत् उद्घाटन किया। उन्होंने वित्तीय सेवाओं तथा हमारे प्रधान मंत्री द्वारा शुभारंभ की गई विभिन्न सामाजिक योजनाओं के लक्ष्यों को पूरा करने में हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के महत्व को उल्लेख किया। डॉ॰ जयन्ती प्रसाद नौटियाल, उप महा प्रबंधक ने संबंधित प्रभागों में राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करते हुए संपूर्ण बैंक में राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने में राजभाषा संपर्क अधिकारियों के महत्व पर प्रकाश डाला। अपने बहु चर्चित शोध कार्य ''हिंदी, विश्व में भाषा भाषियों की दृष्टि से प्रथम एवं सबसे लोकप्रिय भाषा'' के संबंध में जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि विभिन्न दूतावासों तथा स्त्रोता से ऑकड़े एकत्रित करते हुए यह साबित कर पाए हैं कि हिंदी विश्व में सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा है। उनके शोध कार्य का उल्लेख विभिन्न मंचों से किया गया है तथा विश्व भर के विद्वानों ने इसकी सराहना की है। उन्होंने कहा कि भाषा स्वाभिमान का मामला है। भारतीयों की गुलाम मानसिकता के कारण अंग्रेजी के प्रयोग को सम्मानजनक माना जाता है। हमें गर्व

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

के साथ हिंदी का प्रयोग तथा इस तथ्य का प्रचार करना चाहिए। श्री अजीत कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक के धन्यवाद ज्ञापन से कार्शाला संपन्न हुई।

आकाशवाणी, चेन्नै

राजभाषा विभाग के निर्देशों का पालन करते हुए आकाशवाणी, चेन्नै में साल में चार हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। इस सिलसिले में अप्रैल-जून तिमाही के लिए दिनांक 16 जून, 2015 को एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला के प्रारंभ में हिंदी अनुवादक श्रीमती लता वेंकटेश ने व्याख्याता श्री एन॰ कण्णन, हिंदीअनुवादक, एअर इंडिया लि॰, चेन्नै का स्वागत करते हुए कार्यशाला के प्रतिभागियों का भी स्वागत किया। अपने भाषण में उन्होंने हिंदी के व्यावहारिक प्रयोग पर बल देते हुए कार्यशाला का पूरा लाभ उठाने की अपील की। सत्र का विषय रहा 'बोलचाल की हिंदी'। श्री कण्णन जी ने दैनंदिन के व्यवहार में हिंदी के प्रयोग पर प्रकाश डालते हुए हिंदी में बोलने के विषय पर कर्मचारियों को अभ्यस्त करवाया। उन्होंने इस पर भी बल दिया कि रूचि और उत्साह के साथ होने वाले राजभाषा कार्यान्वयन बहुत ही सफल सिद्ध होता है। नामित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़ी रुचि से कार्यशाला में भाग लिए। श्रीमती आर॰ रमा, हिंदी अनुवादक के धन्यवादार्पण के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।

आकाशवाणी, पणजी

आकाशवाणी पणजी हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान के लिए गोपांचल के संपादक श्री मोहनदास सुर्लकर को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। श्री दामोदर आठलेकर, कार्यक्रम निष्पादक ने हिंदी कार्यशाला का संचालन किया। श्री मोहनदास सुर्लकर ने आपने व्याख्यान में हिंदी द्वारा भारत को जोड़ने के प्रयास को अधोरेखित किया। दक्षिण भारत में अब तक हुए हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाने के प्रयासों पर उन्होंने प्रकाश डाला। साथ ही गोवा में हिंदी का प्रचार और विकास किस तरह से हुआ है इस पर श्री सुर्लकर विस्तार से बोले। जब तक दुनिया भर के विभिन्न प्रांतों में विश्व हिंदी सम्मेलनों का उन्होंने जिक्र किया तथा हिंदी को विश्व की एक प्रमुख भाषा बनाने में किन-किन प्रकारों से प्रयास होने की जरूरत है। इसकी विस्तृत जानकारी उन्होंने प्रस्तुत की। हिंदी कार्यशाला में हुए विचार-विमर्श में श्री गोपाल चिप्पलकट्टी, सुश्री एन फर्नान्डिस, श्रीमती सेलिना एन्ड्रज, श्री नंददीपक बट्टा,श्रीमति यिंथिया रेगी, श्री प्रेमानंद कमद, श्री प्रमोद कुमार, श्री निवेश चौहान,श्री आर॰जी॰ गावडे, श्री दिनकर यादव, श्रीमती उषा नाईक, श्रीमती प्रिया रेडकर, श्री एम॰सी॰ लोबो, श्री कमलाकांत कालसेकर, श्रीमती स्वाती मावजेकर, श्री सिताराम भोगले, श्री स्नेहल फोंडेकर, श्रीमती सोनिया वेर्लेकर, श्रीमती अनुजा महाले, श्री अशोक गवस, श्रीमती सीमा मट्टास, श्री चंदू तारी, श्रीमती शदर मुलगांवकर, श्रीमती दर्शना गावस, श्री वियज परवार, श्री गिरीश हलर्णकर, श्री ररफदास गावस और श्री अशोक बांदोडकर ने आपने विचार रखे।

आकाशवाणी, बीकानेर

आकाशवाणी, बीकानेर केंद्र पर दिनांक 21 जुलाई, 2015 को एक दिवसीय हिदी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला की अध्यक्षता केंद्र के निदेशक अभियांत्रिकी एवं केंद्राध्यक्ष श्री एस॰के॰ मीना ने की तथा डॉ॰ उमा कान्त गुप्त, उप-प्राचार्य डूंगर महाविद्यालय को मुख्य अतिथि के रूप में तथा वरिष्ठ साहित्यकार डॉ॰ ममता सिंह को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। कार्यशाला का प्रारंभ केंद्र के कार्यक्रम अध्यक्ष श्री अमित सिंह के स्वागत भाषण से हुआ। उन्होंने कहा कि हिंदी का सबसे ज्यादा प्रचार-प्रसार रेडियो यानी आकाशवाणी के माध्यम से हुआ है। देश की योजनाएं हों या फिर विज्ञापन, इनको हिंदी में प्रसारित कर जन-मानस तक पहुंचाने का दायित्व आकाशवाणी आज भी बखूबी निभा रहा है। केंद्र के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री केशव प्रसाद बिस्सा ने कार्यालय के दायित्वों में हिंदी का स्थान विषय पर पत्रवाचन में अपनी बात रखी कि-शासकीय कार्यों में हिदी को मन, वचन और कर्म से अपनाकर ही कम अपना दायित्व निभा सकते हैं। वरिष्ठ उद्घोषक श्री प्रमोद शर्मा ने कहा कि हिंदी केवल शब्दों का जोड़-तोड़ भर नहीं है, बल्कि यह तो शब्दों का योग है-भावों का योग है और ऐसा योग है जो जीवन का सही रूपांतरण करता है। कार्यशाला का संयोजन करते हुए प्रभारी सहायक निदेशक राजभाषा श्री ओम मल्होत्रा ने हिंदी के राजभाषा स्वरूप की जानकारी देते

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

हुए उसके संवैधानिक दायित्वों के प्रति जागरूक होने की बात कहीं। मुख्य वक्ता डॉ॰ ममता सिंह ने हिंदी साहित्य की वर्तमान स्थिति से रू-ब-रू कराया। अपने आर्शीवचन में मुख्य अतिथि डॉ॰ उमाकांत गुप्त ने व्यक्त किया कि भाषा अस्मता की पहचान है। वैश्विक स्तर पर हिंदी के पठन-पाठन को लेकर आपने कहा कि विश्व स्तर पर हिंदी की स्थिति गरिमामय है। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में केद्राध्यक्ष श्री एस॰के॰ मीना ने आंगुतक अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि बाजारवाज के चलते हिंदी का विकास स्वत: ही हो रहा है।

नराकास, मंगलूर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति मंगलरु के तत्वाधान में हिंदी माह समारोह- 2015 के सिलसिले में कार्पोरेशन बैंक द्‌वारा 4 अगस्त, 2015 को सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्य कार्पोरेशन बैंक के स्टाफ सदस्यों के लिए राजभाषा के व्यावाहरिक पहलुओं पर संयुक्त कार्यशाला आयोजित की गई। श्री अजीत कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक, कार्पोरेशन बैंक के ने अपने उद्‌घाटन भाषण में कार्यशाला के उद्‌देश्य को उजागर किया और कहा कि सरकारी कार्यालयों में हिंदी या अन्य किसी राज्यों की राजभाषा में सुचारू रूप से कार्य करने के लिए राजभाषा आवश्यक है। डॉ॰ जयंती प्रसाद, सदस्य-सचिव, नराकास तथा उप महा प्रबंधक, कार्पोरेशन बैंक ने अपने अभिभाषण में संप्रेषण के माध्यम के रूप में भाषा के महत्व का उल्लेख किया। उन्होंने हिंदी की संवैधानिक स्थिति पर भी प्रकाश डाला। हिंदी के वैश्चिक स्वरूप के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ॰ नौटियाल ने कहा कि हिंदी बोलने वाले की संख्या का लिहाज किए बिना हिंदी विश्व में सर्वोपरि है। श्री अम्बरीष कुमार सिंह, मुख्य प्रबंधक, कार्पोरेशन बैंक ने प्रतिभागियों को कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत करवाया। कार्यशाला के पश्चात् नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंगलूरू के तत्वाधान में कार्पोरेशन बैंक द्‌वारा प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री अम्बरीष कुमार सिंह, मुख्य प्रबंधक, ने कहा कि यह प्रतियोगिता नूतन ढंग से आयोजित की जा रही है।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, उदयपुर

भारतीय विमानपत्तन में राजभाषा हिंदी के प्रोन्नयन एवं विकास की दिशा में हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन नियमित अंतराल पर किया जाता है। इसी क्रम में उदयपुर विमानक्षेत्र के कार्मिकों हेतु कार्यालयी कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग एवं व्यावहारिक कठिनाइयों को दूर करने हेतु दिनांक 18 से 19 अगस्त को उत्तर क्षेत्र मुख्यालय से दौरे पर आए हुए राजभाषा प्रभारी श्री संजीव कुमार, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) के दिशा-निर्देशन में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। तदुपरांत प्रात:कालीन सत्र में श्री संजीव कुमार, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) द्‌वारा राजभाषा नीति-एक परिचय पर कार्मिकों को भारत सरकार की राजभाषा नीति के संवैधानिक एवं वैधानिक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। द्‌वितीय सत्र में श्री विजय सिंह चौहान, पूर्व राजभाषा अधिकारी, हिंदुस्तान जिंक लि॰ एवं निवर्तमान निदेशक (प्रशासन) तारा संस्थान, उदयपुर द्‌वारा कार्मिक एवं प्रशासनिक मामलों में हिंदी मे प्रयोग पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यशाल के द्‌वितीय दिन दिनांक 19 अगस्त, 2015 को प्रथम सत्र में श्री संजीव कुमार , उप महाप्रबंधन (राजभाषा) द्‌वारा ''राजभाषा निरीक्षण संबंधी समितियों'' पर व्याख्यान तथा द्‌वितीय सत्र में श्री गिरीराज पालीवाल, के हिंदी अनुवादक, भारत संचार निगम लि॰ एवं पूर्व सचिव नराकास, उदयपुर द्‌वारा ''कार्यालयी कार्य में यूनिकोड के माध्यम से हिंदी के अधिकाधिक उपयोग'' विषय पर व्याख्यान एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

आकाशवाणी केंद्र, जलगांव

आकाशवाणी केंद्र जलगाव में राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्‌वारा दिनांक 29.07.2015 को दो सत्रीय एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस कार्यशाला को व्याख्याता के रूप में आकाशवाणी केंद्र औरंगाबाद के सहायक निदेशक (रा॰भा॰प्रभारी) डॉ॰ साहेबराय सोनवणे उपस्थित थे। सर्वप्रथम कार्यक्रम विभाग प्रमुख जयंत कागलकर उन्होंने सभी को शुभकामनाएं देते हुए सुझाव किया कि कार्यशाला का लाभ उठाते हुए कार्यालयीन कामकाज में इसका प्रयोग करें। केंद्र प्रमुख एस॰एम॰ बोदेले ने कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्‌वारा अन्य केंद्र सरकार में ऐसी कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिसमें हमारे कार्यालय के कर्मचारी भी उपस्थित रहते हैं। इस कार्यशाला का पूरा-पूरा लाभ उठाने का प्रतिभागियों को उन्होंने आह्‌वान किया साथ ही अपनी शुभकामनाएं भी दी। हिंदी

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

कार्यशाला का प्रथम सत्र ''राजभाषा हिन्दी संबंधी संवैधानिक प्रावधान एवं ''राजभाषा 1963 अधिनियम तथा राजभाषा नियम 1976'' संबंधी डॉ॰ सोनवणे ने जानकारी दी। हिंदी कार्यशाला के दूसरे सत्र में ''मसौदा लेखन एवं टिप्पणी लेखन'' का अभ्यास करवाया गया। साथ ही पारिभाषित शब्दावली का प्रशासन में उचित प्रयोग किस प्रकार किया जाना चाहिए इसका सोदाहरण विवेचन भी किया गया। दोनो सत्रों का संचालन सहायक निदेशक (राजभाषा प्रभारी) श्री अनिल कुमार एन॰ कदम ने किया। सभी के प्रति प्रभार व्यक्त करते हुए एवं केंद्र प्रमुख के आदेशानुसार कार्यशाला का समापन किया।

(घ) हिंदी पखवाड़ा

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली

नई दिल्ली 14 सितबर, 2015 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में राजभाषा समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के कर-कमलों से राजभाषा हिंदी के प्रयोग में सर्वश्रेष्ठ प्रगति हासिल करने वाले केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, बोर्डों/स्वायत्त निकायों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को राजभाषा शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न विधाओं एवं राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हिंदी में मौलिक प्रस्तुक लेखन तथा हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लेखकों को राजभाषा गौरव पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह, माननीय गृह राज्य मंत्री श्री हरिभाई पार्थीभाई चौघरी, माननीय गृह राज्य मंत्री श्री किरेन रीजीजू एवं कई माननीय सांसद एवं गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने अपने उद्बोधन में हिंदी के महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत एक सौ बाइस भाषाओं और सोलह सौ बोलियों वाला एक विशाल देश है। उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि हमारा लोकतंत्र तभी फल-फूल सकता है तब हम अपनी बात जनता तक उसकी भाषा में पहुंचाएं। भारत की सभी भाषाएं इसके लिए सक्षम हैं। इन सभी भाषाओं के बीच हिंदी एक संपर्क भाषा हैं यह प्रयास होना चाहिए कि हिंदी का प्रयोग ज्ञान-विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में भी बढ़े ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनता सहित सभी की भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इसके लिए यह भी जरुरी है कि तकनीकी ज्ञान के साहित्य का सरल अनुवाद हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हो। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि हमारे कार्यालयों में संचार एवं प्रौद्योगिकी में हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा हैं। उन्होंने आगे कहा कि आज संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्थाओं में भी हिंदी की गूंज सुनाई देने लगी है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सबके प्रयासों से हिंदी को शीघ्र हीं संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा भी प्राप्त हो सकेगा।

गृह राज्य मंत्री श्री किरेन रीजीजू ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी महानुभावों का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी का उत्तरोत्तर विकास इस बात पर निर्भर करता है कि सरकारी कामकाज में उसका कितना प्रयोग किया जाता है। कोई भी भाषा तभी लोकप्रिय बनती है जब जन-मानस पर वह अपना अधिकार जमा सके। यह अधिकार यदि प्रेम और सद्भावना के जरिए जमाया जाए तो ज्यादा प्रभावशाीली और टिकाऊ होता है। निरंतर प्रयोग में जाने से कोई भी भाषा स्वत: सरल और अपनी-सी लगने लगती है।

गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी का 14 सितम्बर, 1949 में राजभाषा का दर्जा दिया गया था किंतु इसके बावजूद आज भी हिंदी को वह सम्मान नहीं दिया गया, जो दिया जाना चाहिए था। उन्होंने कहा कि संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है और सभी भारतीय भाषाएं परस्पर बहनें हैं किंतु हिंदी भारत की संपर्क भाषा है। देश के 75 प्रतिशत लोग या तो हिंदी बोलते हैं या हिंदी समझते हैं। स्वाधीनता आंदोलन के नेताओं का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी को राजभाषा बनाने में हिंदीतर भाषियों की अग्रणी भूमिका रही है। उन्होंने लॉर्ड मैकाले का संदर्भ लेते हुए कहा कि अग्रेजयुक्त शिक्षा से देश को बहुत क्षति हुई है। गृह मंत्रीजी ने कहा कि भारत को महाशक्ति नहीं बल्कि जगत गुरू बनाना है क्योंकि महाशक्ति से भय लगता है, परंतु गुरू के समीप खड़े होने से सुखद अनुभूति होती है। उन्होंने कहा कि सभी उपस्थिति अधिकारी/कर्मचारी यह

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

संकल्प लें कि वे कम-से-कम अपने हस्ताक्षर हिंदी में करेंगे। गृह मंत्री जी ने इस बात पर बल दिया कि कंप्यूटर, मोबाइल आदि में अधिक से अधिक हिंदी का उपयोग किया जाना चाहिए, इससे हिंदी आगे बढ़ेगी

सचिव (राजभाषा विभाग) श्री गिरीश शंकर ने माननीय राष्ट्रपति, गृह मंत्री, अन्य मंत्री सांसदगण, सचिव, पुरस्कार विजेताओं तथा कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति महोदय और गृह मंत्रीजी ने हिंदी दिवस के अवसर पर जो भी कहा है वह हमारे लिए निर्देश है और हम उसका पालन करेंगे।

दूरदर्शन केंद्र, नागपुर

दूरदर्शन केंद्र, नागपुर में 01 से 14 सितम्बर, 2015 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। कार्यक्रम प्रमुख श्री निसार अहमद खान ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों से भारत सरकार की राजभाषा संबंधी नीतियों का गंभीरता से अनुपालन करने की अपील की। आरंभ में श्री पी॰बी॰ गौतम, सहायक निदेशक (रा॰भा॰) ने पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी दी। श्री पी॰एम॰ कोंडे, आहरण एवं संवितरण अधिकारी ने भी इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त किए। 14 सितम्बर को हिंदी दिवस तथा हिंदी पखवाड़ा मनाया गया, जिसकी अध्यक्षता सहायक (अभि॰) एवं कार्यालयाध्यक्ष श्री बी॰बी॰ तुरकर ने की। इस अवसर पर श्री पी॰बी॰ गौतम, सहायक निदेशक (रा॰भा॰) ने माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार द्‌वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भेजे गए संदेश का पढ़कर सुनाया। इस वर्ष के कार्यक्रम की विशेषता यह रही है कि समारोह में उपस्थित समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों ने हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। श्री रविन्द्र मिश्रा, प्रभारी हिंदी अधिकारी ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा श्री अतुल भुसारी, कार्यक्रम निष्पादक ने सभी प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर कार्यक्रम अभियांत्रिकी तथा प्रशासन अनुभाग के अधिकारी/कर्मचारीगण बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य, अहमदाबाद

संस्थान में हिंदी पखवाड़ा 2 सितम्बर 2015 से 14 सितम्बर, 2015 तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगियों का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के हिंदी और हिंदीत्तर भाषी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तत्पश्चात् 14 सितम्बर, 2015 को हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह में एक रोचक व्याख्यान का आयोजन किया गया एवं विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार व प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। पखवाड़े के समापन समारोह के शुभांरभ में श्रीमती (डॉ॰) मृदुला सिन्हा, माननीय राज्यपाल, गोवा द्‌वारा रचित गीत 'हिंदी भारत मां की माथे की बिंदी' सुनाया गया। इसके बाद संस्थान के निदेशक महोदय ने आमंत्रित मुख्य अतिथि प्रो भगवानदास जैन, पूर्व प्रोफेसर एवं लब्धप्रतिष्ठ कवि और गज़लकार, सरदार वल्लभभाई महाविद्‌यालय, अहमदावाद को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया। इसके साथ हिंदी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित हिंदी शब्द से शब्द लेखन प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता, हिंदी श्रुत लेखन प्रतियोगिता तथा हिंदी क्विज प्रतियोगिता में भाग लेते वाले हिंदी भाषी व हिंदीत्तर भाषी प्रतिभागियों को संस्थान की ओर से क्रमशः मुख्य अतिथि प्रो भगवानदास जैन, संस्थान के वैज्ञानिक 'जी' एवं प्रभारी निदेशक डॉ॰ सुनील कुमार, वैज्ञानिक 'ई' डा एस॰एस॰ए॰ जैदी तथा प्रशासनिक अधिकारी श्रीमती एन॰एन॰ अढिया द्‌वारा प्रथम, द्‌वितीय व तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन संस्थान के कनिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री आर॰एम॰ पोरवाल ने किया। अंततः संस्थान के प्रशासनिक अधिकारी श्रीमती एन॰एन॰बढिया ने उपस्थित सभी महानुभावों का आभार व्यक्त कर कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया।

केनरा बैंक अंचल कार्यालय, दिल्ली

15 सितम्बर, 2015 को केनरा बैंक अंचल कार्यालय, दिल्ली द्‌वारा हिंदी दिवस समारोह का उत्साहपूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय श्री ए॰के॰ दास जी द्‌वारा की गई। अध्यक्ष महोदय ने प्रधान कार्यालय द्‌वारा राजभाषा अक्षय योजना के अंतर्गत दिल्ली अंजल को प्रथम पुरस्कार प्राप्त होने पर हार्दिक बधाई दी। उन्हांने सभी स्टाफ सदस्यों को दैनंदिन कार्यों में हिंदी का और अधिक प्रयोग करने पर बल दिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सुप्रसिद्‌ध हिंदी कवि

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

श्री गजेंद्र सोलंकी जी को आमंत्रित किया गया। स्वागत संबोधन उप महाप्रबंधक श्री एस॰पी॰ भट्टाचार्य जी ने दिया। उसके उपरांत मण्डल प्रबंधक श्री जगदीश जगेटिया द्वारा माननीय गृह मंत्री व श्रीमती वन्दना देवी, राजभाषा अधिकारी द्वारा वित्त मंत्री का संदेश पढ़ा गया। तत्पश्चात श्रीमती सरिता चौधरी, राजभाषा अधिकारी द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में अंचल की उपलब्धियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री गजेन्द्र सोलंकी ने कविताओं व हिंदी वंदना के माध्यम से सबका मन मोह लिया। समारोह के रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम में समस्त कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। समारोह के अंतिम चरण में राजभाषा पुरस्कार, अक्षय पुरस्कार एवं हिंदी पखवाड़ा में आयोजित टिप्पण लेखन, आशुचित्र लेखन, हास्य/व्यंग्य कविता वाचन, वाक्य-विन्यास, 3 मिनट अंग्रेजी के शब्द का प्रयोग किए बिना हिंदी में बोलना, अत्यांक्षरी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। मण्डल प्रबंधक श्री इंद्रलाल जैन जी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया तथा समारोह का समापन 'राष्ट्रीय गान' क साथ हुआ।

केनरा बैंक, बेंगलूर

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, बेंगलूर मेट्रो में दिनांक 15 सितम्बर, 2015 को हिंदी दिवस धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। श्री उमेश जोशी, इकाई प्रमुख, राजस्थान पत्रिका, बेंगलूर ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। श्री रवीन्द्र भंडारी, महा प्रबंधक ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री जयराम रेड्डी, उप महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, बेंगलूर मेट्रो भी मंच पर उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री गिरीश राय, परामर्शदाता, राजस्थान पत्रिका भी उपस्थित थे। मुख्य अतिथि श्री उमेश जोशी ने अपने संबोधन में केनरा बैंक में राजभाषा हिंदी का बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासों और हासिल की गई उपलब्धियों की सराहना की। उन्होंने अपने भाषण में राजभाषा हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री रविन्द्र भंडारी, महा प्रबंधक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि जहां हिंदी भाषा से जोड़ने का साधन है वही उसे देश को एकता के सूत्र में बांधने की भी शक्ति है। उन्होंने वर्ष 2014-15 के लिए 'राजभाषा अक्षय योजना' और 'राजभाषा पुरस्कार योजना' व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं और इन प्रतियोगिताओं में उत्साह के साथ भाग लेने वाले कर्मचारियों को भी बधाई दी।

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान में 01 से 15 सितंबर, 2015 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ॰ दिनेश पॉल ने हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन किया। अपर निदेशक डॉ॰ अशोक कुमार भी इस अवसर पर उपस्थिति थे। इस दौरान एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया, जिसका उद्देश्य संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा नीति तथा इससे संबंधित नियमों की जानकारी देना तथा हिंदी में कामकाज करने में उनकी कठिनाइयों को दूर करना था। इस पखवाड़े का समापन समारोह संस्थान के निदेशक डॉ॰ दिनेश पॉल की अध्यक्षता में 15 सितम्बर, 2015 का आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री एस॰के॰ श्रीवास्तव, अपर निदेशक (टीसी), डॉ॰ अशोक कुमार, अपर निदेशक (एमसी) तथा सभी संयुक्त निदेशक उपस्थित थे। समापन समारोह के इस अवसर पर प्रश्नोत्तरी अर्थात क्विज प्रतियोगिता भी रखी गई, जिसका संचालन डॉ॰ अशोक कुमार, अपर निदेशक ने किया। प्रश्नोत्तरी में सामान्य ज्ञान के कुछ प्रश्न पूछे गए और सही उत्तर देने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। हिंदी पखवाड़े के इस समापन समारोह का सफल संचालन श्रीमती रेखा जुनेजा, हिंदी अधिकारी ने किया।

संसदीय कार्य मंत्रालय, नई दिल्ली

मंत्रालय में 01 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2015 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया । पखवाड़े के दौरान मंत्रालय में प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। हिंदी पखवाड़े के उद्घाटन पर 02 सितम्बर, 2015 को संयुक्त सचिव की ओर से हिंदी से अधिक-से-अधिक कार्य करने के लिए संदेश परिचालित किया गयां। मूल रूप से हिंदी में टिप्पण-आलेखन नकद पुरस्कार योजना 2014-15 के लिए प्राप्त विवरणों का मूल्यांकन किया गया। हिंदी में टिप्पण-आलेखन आशु प्रतियोगिता, हिंदी टंकन प्रतियोगिता, एम॰टी॰एस॰ कर्मचारियों के लिए हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

प्रतियोगिता, गैर-हिंदी भाषी कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक 14 सितंबर, 2015 को पखवाड़े का मुख्य समारोह आयोजित किया गया, जिसमें सचिव द्वारा उपरोक्त सभी प्रतियोगिताओं/योजनाओं के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी दिवस के दिन संसदीय कार्य मंत्रालय को वर्ष 2014-15 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों की 300 से कम स्टाफ संख्या वाले मंत्रालय/विभागों की श्रेणी के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया जिसे सचिव, संसदीय कार्य मंत्रालय ने माननीय राष्ट्रपति से ग्रहण किया।

केंद्रीय न्यायालयिक विज्ञान प्रयोगशाला, चंडीगढ़

केंद्रीय न्यायालयिक विज्ञान प्रयोगशाला, चंडीगढ़ में राजभाषा विभाग, भारत सरकार के निर्देशानुसार एवं श्रीमती आशा धीर, निदेशक व अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति के मार्गदर्शन में 01.9.2015 से 14.09.2015 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन राजभाषा के व्यापक प्रसार-प्रचार करने के संकल्प को दोहराते हुए तथा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी भाषा में और अधिक दक्षता हासिल करने के उद्देश्य से किया गया। हिंदी दिवस 14 सितम्बर, 2015 की हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह के दिन 'आत्मबोध' नामक एक दिवसीय कार्यशाला का भी आयोजन किया गया था। कार्यशाला के पश्चात् प्रयोगशाला चंडीगढ़ में हिंदी दिवस तथा पुरस्कार वितरण समारोह का आरंभ किया गया। हिंदी दिवस के अवसर पर श्रीमती आशा धीर, निदेशक महोदया द्वारा समारोह के मुख्य अतिथि श्री बी॰एस॰ शर्मा, प्रधानाचार्य को समृति चिह्न भेंट किया गया। कार्यक्रम संचालन डॉ॰ विमुक्त चौहान द्वारा किया गया। राजभाषा अधिकारी ने सभी का अभार व्यक्त किया और धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस हिंदी पखवाड़े के समापन की घोषणा की गई।

कर्मचारी राज्य बीमा अस्पताल, नोएडा

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी निगम के कर्मचारी राज्य बीमा अस्पताल, नोएडा तथा इसके अधीनस्थ क॰रा॰बीमा औषधालयों में 01 सितम्बर, 2015 से 14 सितम्बर, 2015 तक राजभाषा पखवाड़े का आयोजन किया। पखवाड़े के संदर्भ में गृह मंत्री तथा निगम के महानिदेशक महोदय की ओर से प्राप्त अपील सभी निगम कार्मिकों को परिचालित किया गया। अस्पताल कार्मिकों के मन में हिंदी के प्रयोग, प्रचार व प्रसार के प्रति अभिरूचि पैदा करने के लिए इस दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में पर्याप्त संख्या में हिंदी/हिंदीर भाषी अधिकारियों, कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

पखवाड़े की समाप्ति के अवसर पर 14 सितम्बर, 2015 की अपराहन में हिंदी दिवस समारोह की अध्यक्षता श्री अशोक चन्द्रा, निदेशक (प्रशासन) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ॰ परमानंद, चिकित्सा अधीक्षक (सेवानिवृत्त) का॰रा॰ बीमा अस्पताल, झिलमिल उपस्थित रहे। डॉ॰ संजीव कोचर, ने हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के द्वारा हिंदी सीखने व प्रतियोगिताओं में भाग लेने की सराहना की तथा आशा व्यक्त किया कि भविष्य में और भी अच्छे परिणाम सामने आएगें। डॉ. राजीव गर्ग, ने कहा कि सरकारी कामकाज सरल, सहज तथा आम बोल-चाल की भाषा में निपटाया जाना चाहिए।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, देहरादून

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, देहरादून कार्यालय में 01 सितम्बर. 2015 से 14 सितम्बर, 2015 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। कार्यालय में अधिकतम कार्य हिंदी में करने का प्रोत्साहन दिया गया, सभी कर्मचारियों ने अधिकतक कार्य हिंदी में निपटाया।

पखवाड़े के दौरान 'हिंदी वाक्', 'हिंदी निबंध', 'हिदी टिप्पण-आलेख' तथा 'राजभाषा ज्ञान' प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम श्री अमरजीत सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. नरेश कुमार अरोड़ा, वरिष्ठ राज्य चिकित्सा आयुक्त एवं श्री प्रियरंजन सिन्हा (प्रशा.) एवं राजभाषा प्रभारी एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री कुशल कोठियाल, स्थानीय संपादक, दैनिक जागरण को मंच पर आमंत्रित किया गया। समारोह में 01 सितम्बर. 2015 से 14 सितम्बर, 2015 के दौरान मनाएं गए राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

हिंदी प्रतियोगिताओं विजेताओं कों नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र मंचासीन अधिकारियों ने अपने कर कमलों से भेट किए, डॉ. दीपशिखा शर्मा, चिकित्सा निर्देशी, डॉ. तनूजा नबियाल, चिकित्सा सतर्कता अधिकारी, श्री अनुज कुमार ऋषि, उप निदेशक एवं श्री शैलेन्द्र सिंह रावत, सहायक निदेशक ने प्रतियोगिताओं के अन्य प्रतिभागियों को प्रशस्ति-पत्र भेट किए। इस अवसर पर कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका ''गंगोत्री'' के अंक-06, वर्ष 2015-16 का भी विमोचन मंचासीन अधिकारियों द्वारा किया गया।

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, गुड़गांव

16 सितम्बर, 2015 को अंचल कार्यालय, गुड़गांव में सम्मेलन कक्ष में 'हिंदी दिवस समारोह' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लेखिका व कवयित्री श्रीमती मनीषा जैन मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थी तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अशोक अग्रवाल, उप महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख द्वारा की गई। बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में विस्तार से वर्णन करते हुए कहा कि केनरा बैंक अपने सभी ग्राहकों को हिंदी भाषा में सभी प्रकार के फार्म उपलब्ध करवा रहा है। सीबीएस केद्व माध्यम से पासबुक, पासबुक, पासशीट, डिमांड ट्राफ्ट आदि भी हिंदी में प्रिंट कर प्रदान किए जा रहे हैं तथा एटीएम में भी हिंदी भाषा का चयन कर नकदी निकाली जा सकती है व स्लिप भी हिंदी में प्राप्त की जा सकती है, उन्होनें यह आशा जताई कि गुड़गांव अंचल इसी प्रकार राजभाषा के क्षेत्र में काम करता रहेगा। श्री श्याम सुन्दर गुप्ता, मण्डल प्रबंधक व श्री सुधीर कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक द्वारा वित्त मंत्री व गृह मंत्री के संदेशों का वाचन किया गया। कर्मचारियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया तथा 'हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता को पुरस्कार प्रदान किए गए तथा राजभाषा में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाली शाखाओं, अनुभागों तथा कर्मचारियों का भी पूरस्कृत किया गया।'कार्यक्रम के अंत में श्रीमती भवानी शंकरी, मण्डल प्रबंधक द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। मंच का सफल संचालन सुश्री मेघा कुमार, अधिकारी द्वारा किया गया।

केनरा बैंक अंचल कार्यालय, मेरठ

केनरा बैंक अंचल कार्यालय मेरठ में 19 सितम्बर, 2015 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता केनरा बैंक अंचल कार्यालय के प्रमुख उप महाप्रबंधक श्री जगजीत सिंह जी द्वारा की गई। मुख्य अतिथ के रूप में हिन्दुस्तान समाचारपत्र के संपादक श्री नवनीत गुप्ता जी को आमंत्रित किया गया। साथ में अंचल के सहायक महाप्रबंधक श्री एम नवनीत गुप्ता जी को आमंत्रित किया गया अंचल के सहायक महाप्रबंधक श्री एम के श्रीनिवास पै व अन्य कार्यपालक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ राजभाषा अधिकारी मयंक पाठक के स्वागत संबोधन के साथ हुआ। भारत के माननीय गृहमंत्री एवं वित्तमंत्री का संदेश वाचन हुआ। तत्पश्चात विविध विधाओं से सुसज्जित रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरूआत हुई। समारोह के अंतिम चरण में राजभाषा पुरस्कार, अक्षय पुरस्कार एवं हिंदी माह में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने उद्वोधन में मातृभाषा हिंदी को मां का दर्जा देते हुए इसे सहज रूप से अपनाने के लिए कहा, और केनरा बैंक द्वारा हिंदी के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। कार्यक्रम का समापन वरिष्ठ प्रबंधक श्री आर॰के॰टंडन के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

मध्य रेल मुख्यालय, मुम्बई

मध्य रेल मुख्यालय में 14 सितम्बर, 2015 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में अपर महाप्रबंधक श्री आर॰डी॰ त्रिपाठी ने माननीय रेल मंत्री तथा मुख्य राजभाषा अधिकारी द्वारा माननीय गृहमंत्री के हिंदी दिवस संदेश का वाचन किया। तत्पश्चात् उप महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा महाप्रबंधक श्री एस॰के॰ सूद के हिंदी दिवस संदेश का वाचन किया गया। वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी (मुख्यालय) श्री राम प्रसाद शुक्ल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से राजभाषा पखवाड़े के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लेने तथा अपने अधीनस्थ अधिकारियों तथा कर्मचारियों को भी इन

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने का आग्रह किया।

आकाशवाणी, सांगली

''कार्यालयीन स्तर पर हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन सांगली-आकाशवाणी में जिस उत्साह के साथ किया जाता है वह काबिले तारीफ है।'' इस तरह का प्रतिपादन डॉ॰ गजानन चव्हाण, हिंदी विभाग, श्रीमती गंगाबाई खिवराज घाडावत कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपुर ने किया। आकाशवाणी, सांगली कार्यालय में 'हिंदी दिवस समारोह' के प्रधान अतिथि के रूप में बाल रहे थे। सांगली-आकाशवाणी कार्यालय में दिनांक 01 सितम्बर, से 14 सितम्बर, 2015 तक 'हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया था। उद्घाटन समारोह की प्रधान अतिथि थी-डॉ॰ शोभा पवार, हिंदी विभाग प्रमुख, चंपाबेन शाह महिला महाविद्यालय, सांगली कार्यालय द्वारा आयोजित कार्यालयों की भूरी-भूरी प्रशंसा की और हरिशंकर परसाई की 'भोलाराम का जीव' यह कथा प्रस्तुत की।

केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय, बेंगलूर

01 सितम्बर, 2015 को केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय, बेंगलूर में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ माननीय कार्यपालन निदेशक श्री प्रद्युमन सिंह रावत एवं कार्यपालक निदेशक श्री हरिदीश कुमार बी॰ के करकमलों से संपन्न हुआ। इसी दौरान केनरा बैंक का कार्यपालक निदेशकश्री हरिदीश कुमार बी॰ ने कहा कि राजभाषा अनुभाग अनोखे ढ़ंग से इस पखवाड़े का आयोजन कर रहा है। प्रधान कार्यालय में उत्सव का माहौल दिखाई दे रहा है। कार्यक्रम में उपस्थित सभी कर्मचारियों का स्वागत डॉ॰ सोहन लाल, सहायक महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग ने किया। इस अवसर पर प्रधान कार्यालय के कर्मचारियों के लिए 'सरल हिंदी भाग्यशाली विजेता' नामक दैनिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी चलाई गई।

दूरदर्शन केंद्र, हैदराबाद

हर साल की तरह वर्ष 2015 के लिए हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हैदराबाद के दूरदर्शन केंद्र में सितंबर माह के 7 से 11 तक विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें दूरदर्शन के कर्मचारियों ने उत्साह के साथ हिस्सा लिया। हिंदी शब्द ज्ञान, हिंदी श्रुतलेख, सुलेख, निबंध एवं अंत्याक्षरी प्रतियोगिताओं का आयोजन सुचारू रूप से संपन्न हुआ। दिनांक 14 सितम्बर, 2015 को हैदराबाद दूरदर्शन केंद्र के कार्यालय प्रांगण में हिंदी दिवस का आयोजन सुचारू रूप से संपन्न हुआ। दूरदर्शन केंद्र के राजभाषा विभाग के प्रभारी सहायक निदेशक श्री के॰ सुधाकर राव ने अतिथियों का स्वागत किया। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उस्मानिया विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्षा डॉ॰ शीला मिश्रा ने भाग लिया। अपने भाषण में मुख्य अतिथि महोदया ने कहा कि हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। दूरदर्शन केंद्र के उप-महानिदेशक (अभियांत्रिकी) डॉ॰ डी रंगनाधम् ने कहा कि राजभाषा के कार्यान्वयन कार्य को शत-प्रतिशत करने की दिशा में दूरदर्शन अग्रसर हो रहा है। कार्यक्रम के अन्त में कार्यालय के कर्मचारी श्रीमती के॰ भारती ने आभार प्रकट किया।

मुख्य महाप्रबंधक दूरसंचार, हुबली

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी धारवाड़ दूरसंचार जिला, बी॰एस॰एन॰एल॰, हुबली में 01 सितम्बर, 2015 से 14 सितम्बर, 2015 तक हिंदी व पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के दौरान इस एस॰एस॰ए॰ के कर्मचारी-वर्ग के लिए हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। पखवाड़े के समापन समारोह 14 सितम्बर, 2015 को इस कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में श्री वी॰जी॰ पुरोहित, उप महाप्रबंधक (प्रशासन) की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में श्री विवेक जायसवाल, महाप्रबंधक दूरसंचार पधारे। कार्यक्रम के दौरान श्री विवेक जायसवाल, महाप्रबंधक के करकमलों से हुबली एस॰एस॰ए॰ की तिमाही गृहपालिका 'शाल्मला' के द्वितीय अंक का विमोचन किया गया है। इसे कर्नाटक परिमंडल के इंट्रॉनेट www.Karnataka.bsnl.co.in में अपलोड किया गया है। मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में धारवाड़ दूरसंचार जिले में हो रहे हिंदी कार्यान्व्यन के बारे में संतोष व्यक्त किया। राजभाषा हिंदी को अपनाने और इसका अधिक प्रयोग करने हेतु अमूल्य मार्गदर्शन

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

दिया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार किया गया।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नागपुर

उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नागपुर में दिनांक 01 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2015 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान निबंध, टिप्पण/आलेखक और राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता कार्यालय की कार्यभारी अधिकारी – सहायक निदेशक श्रीमती निर्मला जी मेश्राम के द्वारा की गई। समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में नागपुर के वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार डॉ॰ राजेन्द्र पटोरिया उपस्थित रहे। हिंदी पखवाड़े का आयोजन 01 से 15 सितम्बर तक किया गया था। इस अवधि में विविध प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी। मंचासीन अधिकारी व अतिथियों ने प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार दिए। कार्यालय प्रमुख ने वर्ष के दौरान सर्वाधिक काम हिंदी में करने के लिए स्थापना अनुभाग को चल राजभाषा शील्ड प्रदान की। अपने व्यक्तव्य में मुख्य अतिथि डॉ॰ पटोरिया ने कहा कि आज हिंदी सौ से अधिक देशों में बोली जाती है। हिंदी के इतिहास और विकास का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि आम जनता की यह भाषा सबकों जोड़ने वाली है। उन्होंने 10वें हिंदी सम्मेलन संबंधी अपने अनुभव भी कर्मचारियों से बांटे। पटोरिया ने दीपज्योति के विशेषांक 'महाराष्ट्र माझा' के सुन्दर संयोजन और प्रकाशन की प्रशंसाा की। हिंदी दिवस समारोह एवं पखवाड़े के दौरान सहयोगी व्यक्तियों सहित मुख्य अतिथि, विशेष अतिथियों एवं उपस्थित अधिकारी व कर्मचारीगणों को अधीक्षक श्री एच॰एस॰ बरडे ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

केनरा बैंक, नागपुर

दिनांक 01 सितम्बर, 2015 को सहायक महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री एस एन साहू द्वारा ''हिंदी पखवाड़ा'' का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर अंचल के समस्त स्टाफ कर्मियों को संबोधित करते हुए श्री साहू जी ने कहा कि राजभाषा हिंदी में काम करना संवैधानिक अपेक्षा ही नहीं बल्कि यह हमारी व्यावसायिक आवश्यकता भी है। अंचल में राजभाषा के प्रयवेक्षी कार्यपालक श्री बीरेन्द्र सहाय, मंडल प्रबंधन ने अपने व्यक्तव्य में बैंकिग के सामान्य कामकाज को हिंदी में ही करने पर विशेष बल दिया तथा सभी स्टाफ कर्मियों को हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों/प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर प्रतिभाग करने के लिए प्रोत्साहित किया। 03 सितम्बर, 2015 को कार्यकारी अंचल प्रमुख व सहायक महाप्रबंधक श्री बी॰के॰ रथ जी के कुशल मार्गदर्शन में ''विभिन्न सामाजिक योजनाओं के सफल कार्यान्वयन में हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं की महत्वपूर्ण भूमिका'' विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 03 सितम्बर, 2015 को अंचल कार्यालय कर्मियों के लिए 'आशुभाषण प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में समस्त अंचल कर्मियों ने उत्साह के साथ इसमें प्रतिभाग कर इसे सफल बनाया। दिनांक 04 सितम्बर, 2015 को अंचल की स्थानीय शाखाओं के कर्मियों के लिए एक दिवसीय 'हिंदी कार्यशाला' का आयोजन किया गया। इस कार्याशाला में कुल 06 अधिकारियों तथा 17 कामगारों ने प्रतिभाग किया। 05 सितम्बर, 2015 को अंचल की शाखाओं में कर्मियों के लिए एक दिवसीय 'यनिकोड प्रशिक्षण' का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 06 अधिकारियों तथा 16 कामगारों ने प्रतिभाग किया।

पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल पर, राजभाषा विभाग द्वारा 7 सितम्बर, 2015 से 14 सितम्बर, 2015 तक राजभाषा सप्ताह आयोजित किया गया। इस दौरान दिनांक 14 सितम्बर, 2015 को हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक महोदय द्वारा जारी संदेश का विमोचन अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हरीश गुप्ता ने किया। राजभाषा सप्ताह के दौरान अधिकारियों के लिए राजभाषा ज्ञान व सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, जिनमें मंडल के अनेक अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कर्मचारियों के लिए हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, हिंदी निबंध, हिंदी गीत प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी, जिनमें उनके कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। 14 सितम्बर, 2015 को 16:00 बजे अपर मंडल रेल प्रबंधक महोदया की अध्यक्षता में समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। अंत में राजभाषा अधिकारी

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

श्री रमेश कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव कर कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, रांची

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, रांची में 01 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2015 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक ने मंगलदीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ॰ आलोक सहाय, निदेशक ने राजभाषा हिंदी के महत्व को रेखांकित करते हुए संस्थान में हो रहे राजभाषा कार्यों में लगातार वृद्धि की प्रशंसाा की एवं उपस्थित वैज्ञानिकों/अधिकारियों /कर्मचारियों से सरकारी कामकाज में पूर्णत: हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करने का अनुरोध किया। संस्थान के सभागार में आयोजित हिंदी दिवस के मुख्य कार्यक्रम के अवसर पर संस्थान के श्री सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय ने माननीय गृह मंत्री, श्री ए॰बी॰ भट्टाचार्य ने अध्यक्ष, केंद्रीय रेशम बोर्ड एवं श्री धीरेश ठाकुर ने सदस्य सचिव, केंद्रीय रेशम बोर्ड से प्राप्त संदेशों का वाचन किया। पीजीडीएस के छात्र/छात्राओं ने एकल एवं शास्त्रीय गीत प्रस्तुत किया।

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, रांची में 04 सितम्बर, 2015 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ॰ आलोक सहाय ने उपस्थित कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि संस्थान के कामकाज में राजभाषा हिंदी का बखूबी प्रयोग किया जा रहा है परन्तु कर्मचारियों के कामकाज में और अधिक निखार लाने के लिए नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना आवश्यक है ताकि कर्मचारियों की झिझक दूर हो सके। इस कार्यक्रम में संस्थान के उप निदेशक (प्रशा॰ व लेखा) श्री के॰पी॰ राय सहित समस्त प्रशासनिक कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम में स्वागत एवं संचालन का कार्य श्री ललन कुमार चौबे द्वारा किया गया।

भारतीय खान ब्यूरो, रांची

रांची क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 01सितम्बर से 14 सितम्बर, 2015 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन श्री आर॰ पुरोहित, क्षेत्रीय खान नियंत्रक के दिशानिर्देश में किया गया। क्षेत्रीय खान नियंत्रक श्री आर॰ पुरोहित ने अपने उद्घाटन भाषण में हिंदी को एकता तथा प्यार की भाषा बताई। श्री जी॰सी॰ सेठी, उप खान नियंत्रक सह हिंदी संपर्क अधिकारी द्वारा हिंदी भाषा को देश की सबसे सबल तथा सरल भाषा बताया। पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिनमें हिंदी निबंध वाद-विवाद श्रुतुलेख, टिप्पण-पारूपण, कविता पाठ आदि प्रमुख है। 14 सितम्बर, 2015 को हिंदी दिवस समारोह में क्षेत्रीय खान नियंत्रक श्री आर॰ पुरोहित द्वारा माननीय केंद्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी का हिंदी दिवस संदेश पढ़कर सुनाया गया एवं राजभाषा तथा हिंदी माध्यम से कार्य में बाने वाली कठिनाई को दूर करने बाबत विषय पर विचार-विमर्श किया गया। अध यक्षीय संबोधन में क्षेत्रीय खान नियंत्रक महोदय ने बताया कि हिंदी पखवाड़ा के दौरान सभी कार्मिकों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जाना अच्छी परंपरा है ताकि सभी कार्मिक उत्साहपूर्वक कार्य करें। उन्होंने हिंदी पखवाड़ा के सफल क्रियान्वयन के लिए कार्मिकों को बधाई दी। समारोह में अधिकांश अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित थे। समापन सहारोह का संचालन श्री बिक्रम कुमार सिंह तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री बिनोद कुमार सिंह, सहायक खनन भूविज्ञानी द्वारा किया गया।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, नगड़ी, रांची

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, हेहल, रांची में हिंदी दिवस सह पखवाड़ा का आयोजन दिनांक 01 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2015 तक किया गया। पखवाड़े का उद्धाटन द्वीप प्रज्जलित करके केंद्र के वैज्ञानिक-डी (प्रभारी) डॉ॰ मो॰ मजहर आलम ने किया। कार्यक्रम में क्षे॰रे॰उ॰अ॰के॰, रांची के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी ने सक्रिय रूप से भाग लिया। हिंदी दिवस सह पखवाड़े के दौरान केंद्र में दिनांक 8 सितम्बर, 2015 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें श्री ललन कुमार चौबे, हिंदी अनुवादक (रा॰भा॰), केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, रांची ने तकनीकी कार्य को हिंदी में सरल हिंदी का प्रयोग कैसे किया/लिखा जाए। इसके संबंध में विस्तृत रूप से बतलाया। उन्होंने वार्षिक कार्यक्रम 2015-16

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

के प्रमुख कार्यान्वयन बिंदुओं पर चर्चा किया। उक्त कार्यशाला में इस केंद्र की अधीनस्थ इकाईयों गुमला एवं भण्डारा के डॉ॰ रामकुमार, वैज्ञानिक-सी एवं डॉ॰ घनश्याम सिंह, वैज्ञानिक-डी ने भाग लिया। पखवाड़े के दौरान दिनांक 10 सितंबर, 2015 को शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 15 सितम्बर, 2015 को किया गया। इस अवसर पर डॉ॰ मो॰ मजहर आलम, वैज्ञानिक-डी (प्रभारी) ने अनुसंधान/तकनीकी एवं हिंदी में प्रकाशित पुस्तक रेशमवाणी, रेशमभारती में तकनीकी विषयों पर लेख हिंदी में हाने पर बल दिए एवं अन्य कार्यों में भी अधिक-से-अधिक लक्ष्य प्राप्ति का आह्वान किया। कार्यशाला एवं पखवाड़े का सफल संचालन श्री डी॰के॰ सिन्हा, तकनीकी सहायक के द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री अशेश्वर मिश्रा, सहायक ने किया।

केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय, बेंगलूर

01 सितम्बर, 2015 को केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय, बेंगलूर में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ कार्यापालक निदेशक श्री प्रद्युमन सिंह रावत एवं कार्यपालक निदेशक श्री हरिदीश कुमार बी॰के॰ के करकमलों से संपन्न हुआ। अपने उद्वोधन में श्री प्रद्युमन सिंह रावत, कार्यपालक निदेशक ने बताया कि हिंदी हमारी राजभाषा होने के नाते हिंदी में काम करना तथा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना हमारा कर्तव्य बनता है। इस अवसर पर प्रधान कार्यालय के कर्मचारियों के लिए 'सरल हिंदी भाग्यशाली विजेता' दैनिक प्रश्नोतरी प्रतियोगिता भी चलाई गई। पखवाड़े के प्रत्येक दिन विभिन्न विभागों के महा प्रबंधक व स्टाफ सदस्यों ने इस कार्यक्रम को आयोजित किया। यह नवोन्मेषी कार्यक्रम एक पर्व के रूप में मनाया गया, जिसका उद्देश्य समरसता के साथ हिंदी का प्रचार-प्रसार करना था।

खादी और ग्रामोद्योग आयुक्त कार्यालय, राज्य कार्यालय, हैदराबाद

समारोह का उद्घाटन 14 सितम्बर, 2014 को राज्य निदेशक श्री आर के चौधरी के कर-कमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में श्री ओ आर वी प्रसाद, आर्थिक अधिकारी के साथ-साथ अन्य अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे। अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ॰ एम॰ए॰ खुद्दुस ने श्री राजनाथ सिंह, माननीय गृह मंत्री भारत सरकार का हिंदी दिवस के अवसर पर दिया गया संदेश सभी को पढ़कर सुनाया। आगे उन्होंने कहा कि राजभाषा का कार्यान्वयन किसी एक दिन में समाप्त होने वाला कार्य नहीं है, यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इसलिए कार्यालय में उपस्थिति सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को आवश्यक रूप में हिंदी का कार्यसाधन ज्ञान रहना चाहिए। राजभाषा के प्रयोग पर जोर देते हुए सभी अनुभागाध्यक्षों से आग्रह किया कि वे अपने अनुभाग में अधिक-से-अधिक कार्य हिंदी में करने का प्रयास करें। कार्यक्रम का संचालन कनिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री के॰ उदय किरण ने किया। 'हिंदी सप्ताह' का समापन समारोह 18 सितम्बर, 2015 को सम्पन्न हुआ। राज्य निदेशक श्री आर॰के॰ चौधरी जी ने समापन समारोह में उपस्थित सभी कर्मचारियों को 'हिंदी सप्ताह' सम्पन्न बनाने के लिए बधाई दी।

बैंक ऑफ इंडिया

'हिदी माह' के दौरान ही 5 अगस्त, 2015 को वरिष्ठ कार्यपालकों (सहायक महाप्रबंधकों/मुख्यबंधकों) हेतु विषय विशेष 'राजभाषा कार्यान्वयन: विविध आयाम एवं कारोबार विकास में भाषा की भूमिका' राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उक्त संगोष्ठी में सुश्री पूनम जुनेजा, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग मुख्य अतिथि के रूप में एवं श्री हरिन्द्र कुमार, निदेशक (कार्यान्वयन/तकनीकी) विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री दिनेश कुमार गर्ग, महाप्रबंधक, नेशनल बैंकिंग समूह (उत्तर-1), श्री अश्विनी कुमार पुन्न, आंचलिक प्रबंधक, नई दिल्ली एवं आंचलिक प्रबंधक, गाजियाबाद अंचल उपस्थित थे। प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग के प्रमुख श्री जे॰पी॰ मूण, सहायक महाप्रबंधक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इसी अवसर पर 'वरिष्ठ कार्यपालकों के द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली हिंदी टिप्पणियां' नामक पुस्तिका का विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम के समाचार को दैनिक समाचार पत्रों में भी प्रकाशित किया।

दिल्ली स्थित शाखाओं में 'हिंदी दिवस के अवसर पर सभाएं/गोष्ठयां/प्रतियोगिताएं आयोजित की गई तथा माननीय केंद्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह,माननीय केंद्रीय वित्त मंत्री श्री अरुण जेतली, भारतीय रिर्जव बैंक के गवर्नर, माननीय मंत्रीहमंडल सचिव, भारत सरकार, बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, महाप्रबंधक, नेशनल बैंबिंग समूह (उत्तर-1) एवं आंचलिक प्रबंधक श्री अश्विनी कुमार पन्न

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

के 'हिन्दी संदेश' पढ़े गए और स्टाफ सदस्यों द्वारा हिंदी में कार्य करने का 'संकल्प' लिया गया। अंचल स्तर से भी सभी शाखाओं ने अपने-अपने स्तर पर हिंदी माह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा हिंदी वाक्य निर्माण प्रतियोगिता, हिंदी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता, राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी काव्य वाचन एवं हिंदी समाचार वाचन प्रतियोगिता इत्यादि का आयोजन किया।

फिल्म प्रभाग

फिल्म प्रभाग, नई दिल्ली कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 14 सिंतबर 2015 से 28 सिंतबर, 2015 तक किया गया। इस अवधि में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कामकाज करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अनेक हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। श्री राजीव कुमार, उप महानिदेशक (प्राभारी) की अध्यक्षता में पखवाड़ा के मुख्य समारोह का आयोजन 28 सिंतबर, 2015 तक किया गया, जिसके मुख्य अतिति श्री राजेन्द्र भट्ट थे जोकि हिंदी के प्रसिद्ध लेखक, संपादक हैं तथा वर्तमान में केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड नई दिल्ली में क्षेत्रीय अधिकारी है। 14 सिंतबर, 2015 को हिंदी दिवस मनाया गया, जिसमें कर्मचारियों द्वारा कविता पाठ किया गया। इसी के साथ फिल्म प्रभाग द्वारा निर्मित 'हमारी भाषा', 'हिंदी की विकास यात्रा', 'हिंदी की वाणी', तथा 'भारत की वाणी' फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। 22 सितम्बर, 2015 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में वक्तव्य श्री अरूण कुमार विद्यार्थी, सहायक निदेशक, (रा॰भा॰), डी॰ए॰वी॰पी॰ ने दिया, जिसमें उन्होंने राजभाषा नीति की जानकारी दी तथा कार्यालय में राजभाषा के प्रयोग के सुगम व सरल तरीके समझाए। मुख्य अतिथि महोदय ने सभी विजेताओं को अपने कर कमलों से पुरस्कार वितरण किया तथा सभी को बधाई दी। उन्होंने अपने संक्षिप्त भाषण में कर्मचारियों को अपना अधिकाधिक सरकारी कार्य राजभाषा हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि अपनी भाषा को बढ़ावा देना चाहिए लेकिन साथ-साथ अन्य भाषाओं का भी सम्मान करना चाहिए। उन्होंने अपने आगे भाषण में कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'प्रयास' का उल्लेख करते हुए बताया कि यह पत्रिका कर्मचारियों की हिंदी के प्रति रूचि दर्शाती है तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। श्री राजीव कुमार, उप महानिदेशक (प्रभारी) ने मुख्य अतिथि महोदय का धन्यवाद किया तथा अपने संक्षिप्त अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हमारे कार्यालय में काफी अधिक कार्य राजभाषा हिंदी में किया जाता है, तथा भविष्य में है इसे और अधिक बढ़ाने का प्रयास करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि हमें सरल-व-सहज हिंदी में कार्य करना चाहिए। हमें अपनी भाषा पर गर्व है लेकिन भाषायी कट्टरता से बचना चाहिए।

यूको बैंक

भारत सरकार के निदेशानुसार सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति जागरूकता तथा उसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से 14 सितम्बर, 2015 को अंचल कार्यालय, हावड़ा में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत राजभाषा अधिकारी सुश्री पूनम कुमारी प्रसाद ने अपने स्वागत भाषण में किया। इसके उपरांत उपस्थित सभी स्टाफ सदस्यों द्वारा कोरपोरेट प्रार्थना गीत गाई गई। तत्पश्चात् श्री गोकुल रोंग ने अंचल प्रबंधक श्री रघुनाथ दास को, श्रीमती प्रिया ने उप अंचल प्रमुख-1 श्री एम नारायण स्वामी को तथा श्रीमती तेजल सदानंद ने मुख्य प्रबंधक श्री बलराम बसाक को गुलदस्ता प्रदान कर उनका स्वागत किया। श्री एम नारायण स्वामी द्वारा वित्त मंत्री के संदेश का वाचन तथा अंचल प्रबंधक श्री रघुनाथ दाश द्वारा रिजर्व बैंक के गवर्नर के संदेश का वाचन किया गया। तत्पश्चात् श्रीमती प्रिया ने हिंदी में एक गीत प्रस्तुत किया। इसके उपरांत अंचल प्रबंधक श्री रघुनाथ दाश जी ने हिंदी की महत्ता पर अपने विचार रखे तथा सभी स्टाफ सदस्यों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम के अंतिम चरण में राजभाषा अधिकारी ने अपने समापन भाषण में सभी स्टाफ सदस्यों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित किया तथा कार्यक्रम में सक्रिय सहभागिता प्रदान हेतु सभी स्टाफ सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

भारत संचार निगम लिमिटेड, सेलम

सेलम दूरसंचार जिला में 01 सितम्बर, 2015 से शुरू होकर दो सप्ताह के लिए हिंदी पखवाड़ा समारोह धूमधाम से मनाया गया। महाप्रबंधक का कार्यालय, सेलम और नामक्कल

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

में विभिन्न प्रतियोगिताएं चलाई गई। महाप्रबंधक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी में बात करने पर बल दिया और सेलम एसएसए द्वारा हिंदी कार्यान्वयन कार्यों में आगे की जाने वाली प्रगति पर जोर दिया। श्रीमती आर॰ उषा, उप महाप्रबंधक (मा॰सं॰क्षे॰प्रशा॰) श्री पी॰ मणि, उप महाप्रबंधक (वित्त क्षे॰ लेखा॰), श्री वी॰ सेल्वम, उप महाप्रबंधक (सीएफए॰) और श्रीमती टी॰वी॰एस॰ आशा, उप महाप्रबंधक (दू॰रा॰ले॰) ने प्रतिभागी एवं पुरस्कार विजेताओं को उनकी उत्साहपूर्ण प्रतिभागिता के लिए बधाई दी। सेलम एस॰एस॰ए॰ के अधिकारी एवं कर्मचारी अधिक संख्या में समारोह में भाग लिए डॉ॰ श्री एन॰ चंद्रशेखर, राजभाषा अधिकारी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समारोह समाप्त हुआ। ❑

पं॰सं॰ 3246/77
आई एस एम एन 0970-9398

प्रपत्र-4 (देखिए नियम-8)
प्रेस तथा पुस्तक पंजीकरण अधिनियम
समाचारपत्रों का पंजीकरण (केंद्रीय) नियम
राजभाषा भारती के स्वामित्व तथा विवरणों की सूचना

1. प्रकाशन स्थान	:	*नई दिल्ली*
2. प्रकाशन अवधि	:	त्रैमासिक
3. मुद्रक का नाम	:	*प्रबंधक भारत सरकार मुद्रणालय, नई दिल्ली*
4. क्या भारत का नागरिक है?	:	*भारतीय नागरिक*
5. प्रकाशक का नाम व पता	:	**डॉ॰ धनेश द्विवेदी**, *उप संपादक* *राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार* *एन॰डी॰सी॰सी॰-2, भवन चौथा तल, बी विंग,* *नई दिल्ली*-110001 *दूरभाष:* 011.23438137
6. संपानक (पदेन) का नाम व पता	:	**डॉ॰ श्रीप्रकाश शुक्ल** *संयुक्त निदेशक (नीति/पत्रिका),* *राजभाषा विभाग, गृह मंत्रलय* *एन॰डी॰सी॰सी॰-2, भवन चौथा तल, बी विंग,* *नई दिल्ली*-110001
7. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथ जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	*लागू नहीं*

मैं, डॉ॰ धनेश द्विवेदी, घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह॰/-
प्रकाशक का हस्ताक्षर

\\192.168.3.1\E\2533HA-4

नराकास (बैंक) बेंगलूरु द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह की एक झलक

दिनांक 14.09.2015 को **हिंदी दिवस** के अवसर पर श्री दिनेश कुमार गर्ग, महाप्रबंधक, नेशनल बैंकिंग समूह (उत्तर-I) दिनांक 20.12.2014 को शाखाओं में कार्यरत अधिकारियों हेतु आयोजित की गई एकदिवसीय **हिंदी कार्यशाला** में उपस्थित प्रतिभागियों हेतु आयोजित की गई **हिंदी वाक्य निर्माण प्रतियोगिता** के प्रतिभागी सुश्री प्रतिमा राना, आसफअली रोड़ शाखा को पुरस्कृत करते हुए। उनके दायीं ओर खड़े हैं श्री पी॰जे॰एस॰ वालिया, उप आंचलिक प्रबंधक, नई दिल्ली अंचल।

भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण, जयपुर द्वारा आयोजित 'राजभाषा कार्यशाला' का दृश्य

नराकास (बैंक) बेंगलूरु द्वारा आयोजित 'अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम' में प्रतिभागीगण

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, हावड़ा द्वारा आयोजित हिंदी दिवस समारोह की एक झलक

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, नागपुर द्वारा आयोजित हिंदी दिवस समारोह की एक झलक

मध्य रेल पुणे मंडल द्वारा आयोजित 'अधिकारियों की हिंदी डिक्टेशन कार्यशाला' अवसर पर, बीच में श्री मिलिन्द देऊस्कर, अपर मंडल रेल प्रबंधक, पुणे, दाईं ओर डॉ॰ श्रीमती विभावरी गोरे, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी तथा बाईं ओर डॉ॰ पुलकेश कुमार सहायक कार्मिक अधिकारी, पुणे

पश्चिम रेलवे मुंबई द्वारा आयोजित राजभाषा पखवाड़ा में बाएं से श्री एस॰ के॰ कुलश्रेष्ठ, मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्री आर॰ डी॰ त्रिपाठी, अपर महाप्रबंधक, श्री विपिन पवार, उप-महाप्रबंधक (राजभाषा) तथा श्री राम प्रसाद शुक्ल, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी (मुख्यालय)

प्रतिनिधि बैठकें

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय मेरठ

अंचल कार्यालय मेरठ में दिनांक 18 अगस्त, 2015 को हिंदी प्रतिलिपि बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में अंचल की 25 शाखाओं/कार्यालयों के प्रतिनिधिओं ने भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता मेरठ अंचल कार्यालय के सहायक महाप्रबंधक श्री एम॰के॰ श्रीलिवास पै द्वारा की गई साथ में अंचल कार्यालय के सहायक महाप्रबंधक मेजर ए॰के॰ घई, मंडल प्रबंधक श्री के॰एन॰ कुलकर्णि एवं मानव संसाधन प्रबंधन अनुभाग के वरिष्ठ प्रबंधक श्री आर॰के॰ टंडन भी उपस्थित रहे। संकाय सदस्य के रूप में इंडियन ओवरसीज बैंक के श्री प्रमोद कुमार सक्सेना, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) व मेरठ बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (सिंडिकेट बैंक) की सदस्य सचिव सुश्री निशा शर्मा, अधिकारी (राजभाषा) को आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर मेरठ अंचल की त्रैमासिक समाचार पत्रिका 'मेरठ उद्बोधन' के समय अंक का विमोचन किया गया। बैठक में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार व क्रियान्वयन संबंधी सभी बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा की गई साथ ही हिंदी यूनीकोड का प्रशिक्षण भी दिया गया। बैठक का समापन मानव संसाधन प्रबंधन अनुभाग के वरिष्ठ प्रबंधक श्री आर॰के॰ टंडन के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर

सहायक महाप्रबंधक व राजभाषा कक्ष के पर्यवेक्षी कार्यपालक, श्री एस॰बी॰वी॰एन॰ राव, के कुशल नेतृत्व में दिनांक 11 अगस्त, 2015 को राजभाषा प्रतिनिधियों की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में मानव संसाधन प्रबंधन अनुभाग के वरिष्ठ प्रबंधक, श्री पी के रथ जी भी उपस्थित रहे। माननीय अध्यक्ष महोदय ने बैंकिंग व्यापार को बढ़ावा देने में हिंदी भाषा के प्रयोग पर बल दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि ''हमारी मातृभाषा हमारी मॉ हैं, जिसका हमें सम्मान करना चाहिए, हिंदी हमारी जीवन संगनी है जो जीवन भी हमारे साथ चलेगी हमारा साथ देगी और अंग्रेजी हमारी गुलाम है जिससे हम अपना काम निकालते हैं।'' मानव संसाधन अनुभाग के वरिष्ठ प्रबंधक, श्री पी के रथ ने हिंदी प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि अपने-अपने कार्यालयों में कुछ-न-कुछ काम हिंदी में करें। शाखा के दो तीन फाइलें हिंदी में तैयार करें। इस बैठक में शाखाओं की तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की गई एवं प्रत्येक मद को सही प्रकार से भरने एवं सही रिपोर्ट प्रस्तुत करने से संबंधित जानकारी दी गई। भारत सरकारी और केनरा बैंक द्वारा चलाई जा रही विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी दी गई। सभी प्रतिनिधियों को स्क्रिप्ट मैजिक/ यूनिकोड/द्विभाषी ई मेल सिग्रेचर की जानकारी दी गई। सभी प्रतिनिधियों का फीडबैक काफी अच्छा रहा। कार्यक्रम का संचालन श्री शकील अहमद, परि॰ राजभाषा अधिकारी द्वारा सफलतापूर्वक किया गया। ❑

संविधान परिषद में राष्ट्रभाषा की समस्या को लेकर प्राय: तीन वर्षों तक विचार विमर्श चलता रहा, अंत में 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा का स्थान देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया-संघ के कामकाज के लिए हिंदी देश की सामान्य भाषा हो। इसकी लिपि देवनागरी हो और वे अंक काम में लाएं, जिन्हें भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप कहा जाता है। संविधान-सभा ने हिंदी के राजकाज-स्वरूप के बारे में जो निर्णय लिए उन्हें संविधान के विभिन्न उपबंधों, अनुच्छेदों तथा अष्टम अनुसूची में प्रस्तुत किया गया है।

—राजभाषा नीति

\\192.168.3.1\E\2533HA-5

संगोष्ठी/सम्मेलन

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय मेरठ

अंचल कार्यालय मेरठ में बुधवार दिनांक 24 जून, 2015 को अंचल के सम्मेलन कक्ष में राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता मेरठ अंचल प्रमुख उप महाप्रबंधक श्री जगजीन सिंह द्वारा की गई। साथ ही अंचल कार्यालय के सहायक महाप्रबंधक महा प्रबंधक श्री एम के श्री निवासस पै॰ समस्त मंडल प्रबंधक एवं सभी अनुभागों के प्रभारी व अधिकारियों ने शिरकत की। संगोष्ठी में प्रतिपादित विषयों 'बैंक में राजभाषा हिंदी और ग्राहक – एक सह संबंध तथा बैंकिंग तथा बैंकिंग व्यवसाय में खुदरा ऋण – चुनौतियां एवं अवसर' पर प्रतिभागियों ने अपने विचार व्यक्त किए।

केनरा बैंक, दिल्ली

केनरा बैंक दिल्ली अंचल कार्यालय ने श्री ए॰के॰ दास अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में दिनांक 29 जून, 2015 को ''सर्वोत्कृष्ठ भारतीयता, प्रभावी ग्राहक सेवा लाभप्रदता एवं भारतीय भाषाओं का प्रयोग'' और ''वैश्वीकरण और राजभाषा हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं का भविष्य '' विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें डॉ॰ वेद प्रकाश दुबे, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग भारत सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर उप महाप्रबंधक, हरिमोहन गौतम, अन्य कार्यपालकगण व अनुभाग प्रमुख भी उपस्थित रहे। अंचल प्रमुख श्री ए॰के॰ दास जी ने मुख्य अतिथि तथा अन्य अधिकारियों का स्वागत किया। आनन्द कुमार श्रीवास्तव, वरिष्ठ प्रबंधक ने ''सर्वोत्कृष्ट भारतीयता, प्रभावी ग्राहक सेवा लाभप्रदता एवं भारतीय भाषाओं का प्रयोग'' विषय पर पर्चा प्रस्तुत किया तथा श्रीमती अनीता रेलन, अधिकारी ने ''वैश्वीकरण और राजभाषा हिंदी वे क्षेत्रीय भाषाओं का भविष्य'' विषय पर पर्चा प्रस्तुत किया। डॉ वेद प्रकाश दुबे जी ने प्रस्तुतीकरण की सराहना की। कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि ने अंचल कार्यालय द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका 'दिल्ली दर्पण' के अंक–2 का विमोचन किया।

केनरा बैंक अंचल कार्यालय, बेंगलूर

अंचल कार्यालय, बेंगलूर मेट्रो के मार्गदर्शन में खुदरा आस्ति केंद्र, राजाजीनगर, बेंगलूर में दिनांक 7 अगस्त, 2015 को बैंकिंग कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग'' तथा ''शाखा प्रबंधक की भूमिका'' विषयों पर हिंदी में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता श्री टी॰पी॰ सत्यप्रकाश, सहायक महा प्रबंधक, खुदरा आस्ति केंद्र, राजाजीनगर प्रथम ब्लॉक, बेंगलूर ने की। इस अवसर पर श्री ओमप्रकाश एन॰एस॰ वरिष्ठ प्रबंधक, अंचल कार्यालय, बेंगलूर ने की। इस अवसर पर श्री ओमप्रकाश एन॰एस॰ वरिष्ठ प्रबंधक, अंचल कार्यालय, बेंगलूर मेट्रों उपस्थित थे। सुश्री सुनीता मुंडा, अधिकारी, राजाजीनगर प्रथम ब्लॉक शाखा ने ''शाखा प्रबंधक की भूमिका'' विषय पर पर्चा प्रस्तुत किया। श्री ओम प्रकाश एन॰एस॰, वरिष्ठ प्रबंधक ने बैंकिंग कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग'' विषय पर प्रस्तुति देते हुए कार्यालय व शाखा स्तर पर राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में अनुसरण की जा सकने वाली प्रमुख बातों को रेखांकित किया और सारांशीकरण प्रस्तुत किया।

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर में श्री एस॰बी॰वी॰एन॰ राव, सहायक महाप्रबंधक व राजभाषा अनुभाग के पर्यवेक्षी कार्यपालक की अध्यक्षता में दिनांक 14 अगस्त, 2015 को 'विश्व परिदृष्य में हिंदी' विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में श्री अशोक कुमार नायक, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय रिर्जव बैंक, भुवनेश्वर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

श्री शकील अहमद, परि॰ राजभाषा अधिकारी तथा श्री अशोक कुमार नायक, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय रिर्जव बैंक, भुवनेश्वर ने 'विश्व परिदृष्य में हिंदी' विषय पर अपना-अपना पर्चा प्रस्तुत किया। संबंधी विषय पर खुला सत्र भी रखा गया, जिसमें प्रतिभागियों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों का फिडबैक काफी अच्छा रहा। श्री श्री एस॰बी॰वी॰एन॰ राव, सहायक महाप्रबंधक ने अपने मुख्य भाषण में विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी भाषा की मौजूदगी पर प्रकाश डाला तथा 'ग' क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन में केनरा बैंक की उपलब्धियों की भी चर्चा की। ❑

भारत के संविधान अनुच्छेद 344 और 351 में अष्टम अनुसूची में वर्ष 2007 तक हिंदी सहित 22 भारतीय भाषाएं सम्मिलित हैं जो अपने-अपने प्रदेशों में राजकार्य के लिए उपयोग में लायी जा सकती है। (1) असमिया (असम) (2) उड़िया (उड़ीसा) (3) उर्दू (4) कन्नड (कर्नाटक) (5) कश्मीरी (कश्मीर) (6) गुजराती (गुजरात) (7) तमिल (तमिलनाडु) (8) तेलुगु (आंध्र प्रदेश) (9) पंजाबी (पंजाब) (10) बंग्ला (पश्चिम बंगाल) (11) मराठी (महाराष्ट्र) (12) मलयालम (केरल) (13) संस्कृत (14) सिंधी (15) हिंदी (16) नेपाली (नेपाल) (17) कोंकणी (दक्षिणी, महाराष्ट्र और उत्तरी कर्नाटक) (18) मणिपुरी (मणिपुर) (19) मैथिली (पूर्वी उत्तर प्रदेश) (20) संथाली (छोटा नागपूर) (21) बोडो (पूर्वोत्तर क्षेत्र) (22) डोगरी (जम्मू कश्मीर)।

—राजभाषा नीति

संविधान का अनुच्छेद 351 के अंतर्गत संघीय शासन को हिंदी के प्रचार एवं प्रसार हेतु विशेष निर्देश दिए गए हैं। इसमें है हिंदीतर भाषी कर्मचारियों को हिंदी शिक्षा की व्यवस्था, रुचि उत्पन्न करने प्रोत्साहन पुरस्कार, हिंदी निदेशालय की स्थापना। निदेशालय के कार्य हैं, हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली, मानक ग्रन्थों का हिंदी में अनुवाद, हिंदीतर भाषी हिंदी लेखकों के पुस्तकों के प्रकाशन की व्यवस्था, गृह मंत्रालय, रेल मंत्रालय, संचार मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय, न्याय मंत्रालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना।

—राजभाषा नीति

\\192.168.3.1\E\2533HA-5

प्रतियोगिताएं / पुरस्कार

नराकास (बैंक), बेंगलूर

हिंदीतर भाषा-भाषी छात्रों में हिंदी के प्रति रूचि बढ़ाने एवं हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), बेंगलूर प्रतियोगिताएं आयोजित करता है। इसी सिलसिले में दिनांक 30 जुलाई 2015 को पिजसर बैंक, बेंगलूर उत्तर एवं दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा संयुक्त रूप से अपने परिसर में नराकास (बैंक), बेंगजी के तत्वाधान में बेंगलूर नगर स्थित 20 विद्यालयों के नौवीं एवं दसवीं कक्षा के छात्रों के लिए 'हिंदी निबंध प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया जिसमें 39 छात्रों ने भाग लिया। विजया बैंक के उपमहा प्रबंधक श्री चन्द्रशेखर बी॰वाई तथा सहायक महा प्रबंधक श्री जी॰एम॰वी॰एस॰ मूर्ति ने इस कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), बेंगलूर के प्रतिनिधि के रूप में श्री अनिल कुमार केशरी, अधिकारी, केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में विजय बैंक के वरिष्ठ प्रबंधक श्री अनवर बाशा एवं श्रीमती के॰वी॰ लक्ष्मी देवी तथा विभिन्न विद्यालयों के शिक्षकगण भी उपस्थित थे।

दिनांक 28 मई, 2015 को सिंडिकेट बैंक, बेंगलूर क्षेत्रीय कार्यालय के सभागार में नराकास (बैंक) बेंगलूर के सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 'अंतर बैंक बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न बैंकों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। सिंडिकेट बैंक, बेंगलूर क्षेत्रीय कार्यालय के सहायक महा प्रबंधक श्री प्रवीण कुमार व श्री एम॰ केमपराजू एवं नराकास (बैंक), बेंगलूर के सदस्य सचिव व सहायक महाप्रबंधक, केनरा बैंक डॉ॰ सोहन लाल ने इस कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। कार्यक्रम की समाप्ति सिंडिकेट बैंक, बेंगलूर क्षेत्रीय कार्यालय की वरिष्ठ प्रबंधक श्रीमती निशांत के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुई। ❑

संविधान का अनुच्छेद 344 तथा 351 के अंतर्गत हिंदी के निरंतर प्रचार तथा प्रसार के लिए विशेष व्यवस्था की गई है। राष्ट्रपति एक आदेश के द्वारा एक राजभाषा आयोग की नियुक्ति करेंगे। इसमें अध्यक्ष के साथ सदस्य होंगे। यह आयोग राष्ट्रपति को प्रतिवेदन के साथ अनुशंसाएं पेश करेगा। संघ के राज्यकार्य में हिंदी की प्रगति, अँग्रेजी के प्रयोग पर रोक के उपाय, न्यायालय तथा विधान सभाओं में भाषा का स्वरूप, राज्य कार्यों में अंकों का स्वरूप पत्र-व्यवहार की भाषा समस्या इसके विषय हैं। इसके कार्य हैं प्रामाणिक विधि शब्दावली का निर्माण, केंद्रीय विधियों के प्रादेशिक भाषाओं, से अनुवाद तथा राज्य विधियों के हिंदी अनुवाद की व्यवस्था।

—राजभाषा नीति

प्रशिक्षण

केनरा (बैंक), बेंगलूर

दिनांक 08 जून, 2015 से दिनांक 12 जून 2015 तक केनरा बैंक कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय, बेंगलूर में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), बेंगलूर के तत्वाधान में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरों, बेंगलूर द्वारा नराकास (बैंक), बेंगलूर के सभी सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री ईश्वर चन्द्र मिश्र, सहायक निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरों बेंगलूर, राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, भारत सरकार एवं नराकास (बैंक), बेंगलूर की सदस्य-सचिव व केनरा बैंक की सहायक महा प्रबंधक डॉ॰ सोहन लाल द्वारा किया गया। विभिन्न बैंकों/वित्तीय संस्थाओं के 17 कर्मचारियों/अधिकारियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

दिनांक 08 अगस्त, 2015 को केनरा बैंक, कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय, बेंगलूर में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), बेंगलूर के तत्वाधान में केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय, बेंगलूर द्वारा नराकास (बैंक), बेंगलूर के सभी सदस्य कार्यालयों के अधिकारी/कर्मचारियों के लिए यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन नराकास (बैंक), बेंगलूर की सदस्य-सचिव व केनरा बैंक की सहायक महा प्रबंधक डॉ॰ सोहन लाल द्वारा किया गया। डॉ॰ साहिन लाल ने यूनिकोड की आवश्यकता व उपयोगिता एवं महत्व पर प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र में केनरा बैंक, कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय, बेंगलूर के वरिष्ठ प्रबंधक श्री एच॰ के॰ गंगाधर भी उपस्थित थे। श्री जी॰ अशोक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक, केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, बेंगलूर ग्रामीण एवं श्री अनिल कुमार केशरी, अधिकारी, केनरा बैंक, राजभाषा अनुभाग, प्रधान कार्यालय ने विभिन्न सत्र चलाए। सदस्य-सचिव व केनरा बैंक की सहायक महा प्रबंधक डॉ॰ सोहन लाल द्वारा किया गया। विभिन्न बैंकों/वित्तीय संस्थाओं के 17 कर्मचारियों/अधिकारियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। ❑

भारतीय संविधान भाग 2, अनुच्छेद 346 के अनुसार राज्यों के आपसी तथा संघ के साथ पत्राचार की भाषा 'तत्समय प्राधिकृत भाषा' होगी। अर्थात जो भाषा संघ के सरकारी कामकाज के प्रयोग के लिए इस समय प्राधिकृत है, वही संघ और राज्यों के बीच पत्राचार के लिए प्रयुक्त की जाएगी।

—राजभाषा नीति

भारतीय संविधान भाग 2, अनुच्छेद 347 के अनुसार यदि किसी राज्य के जनसमुदाय का पर्याप्त समुदाय चाहता है कि उसकी किसी भी भाषा को मान्यता दी जाए तो ऐसा करने के लिए राष्ट्रपति संबन्धित राज्य को निर्देश दे सकता है।

—राजभाषा नीति

\\192.168.3.1\E\2533HA-5

पाठकों के पत्र

राजभाषा भारती पत्रिका अंक 142वां प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण जन–जन की भाषा है हिंदी के साथ अपनी सुंदरता को निखारती है, साथ ही पश्च पृष्ठ में अंकित गीत नया गाता हूं मानों संपूर्ण विश्व मे हिंदी का परचम लहराने एवं औरों को प्रेरित करने में अपनी समर्पित भावना को प्रदर्शित करती है। वर्ष 2015 में हुए राजभाषा सम्मेलनों के छायाचित्र अपनी गतिविधियों को बखान कर रहे हैं।

–एस॰के॰ गुप्ता,

पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया लि॰, नागपुर–26

राजभाषा भारती पत्रिका अंक 142वां प्राप्त हुआ। पत्रिका में प्रकाशित लेख खासकर संस्कृति की वाहक–भाषा और बोलियां, कैसे हो स्वच्छ भारत, प्रधानमंत्री जन–धन योजना, हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता, लोकतंत्र के अनाम प्रहरी एवं देशभर के कोने–कोने से संकलित राजभाषा की गतिविधियों की रिपोर्टें काफी महत्वपूर्ण एवं रोचक हैं। उत्कृष्ट संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

–रबीन्द्र नाथ चान्द,

कार्यालय महालेखाकार, भुवनेश्वर

राजभाषा भारती पत्रिका अंक 142वां प्राप्त हुआ। एतर्थ हार्दिक आभार। पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक लेख ज्ञानवर्धक, प्रेरणाप्रद एवं प्रशंसनीय हैं। डॉ रामगोपाल शर्मा दिनेश का लेख राष्ट्रीय एकता और हिंदी पठनीय है। डॉ दुर्गादत्त का आलेख ऊर्जा संरक्षण के विभिन्न सोपान तथा शोभना जैन द्वारा रचित एक प्रवासी भारतीय लेख प्रशंसनीय हैं। सत्याग्राही से महात्मा बनने की यात्रा आदि लेख भी विशेषरूप से सूचनाप्रद, रोचक एवं मर्मस्पर्शी लगे।

–पी ए जोंस,

मंगलूर रिफाइनरी एंड पेट्रोकेमिकल्स लि॰, मंगलूर–575030

आप द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका राजभाषा भारती का 142वां अंक सधन्यवाद प्राप्त हुआ। पत्रिका में एक प्रवासी भारतीय के सत्याग्राही महात्मा बनने की यात्रा संबंधी लेख पठनीय है। राजभाषा के अतिरिक्त, हिंदी में लिखे गए अन्य विषयों पर लेख सारगर्भित हैं। संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

–डॉ रजनीकांत पाण्डेय,

एसजेवीएन लि॰, न्यू शिमला, हिमाचल प्रदेश–171009

राजभाषा भारती पत्रिका का अंक प्राप्त कर हमें अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। पत्रिका का हर भाग गहराई से अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि आपने पत्रिका के छापने में तन–मन–धन से प्रयास किया है। हमें आशा है कि आपका अनुकरण कर अन्य कार्यालय भी इसी प्रकार पत्रिका छापने का कार्य प्रारंभ कर देंगे, जिससे कि पत्रिका के माध्यम से हम न केवल एक दूसरे को जानने समझने का शुभ अवसर प्राप्त कर पाएंगे बल्कि राजभाषा हिंदी के लागू करने का स्वप्न साकार करने में हमें पूर्णत: सफलता प्राप्त होगी।

–सी॰एल॰याद,

कार्यालय महाप्रबंधक दूरसंचार जिला जामनगर

आपके विभाग की त्रैमासिक पत्रिका राजभाषा भारती अंक 142 हिंदी दिवस विशेषांक की एक प्रति प्राप्त हुई। विभिन्न विषय पर लिखे गए भाषण/लेख स्पृहनीय हैं जैसे ऊर्जा संरक्षण के विभिन्न सोपान, हिंदी अनुवाद की दशा और दिशा तथा भाषा सीखने में आनंद विनोबा भावेजी के भाषा विषयी विचार आदि।

–ए॰के॰ सिंह,

पोत परिवहन विभाग, बेलाई, मुम्बई–400 001

राजभाषा भारती अंक 142वां प्राप्त हुआ। मैं इसकी अभिस्वीकृति के साथ आपका धन्यवाद करता हूं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं हिंदी की सार्थकता को सिद्ध करती हैं। राजभाषा सम्मेलनों के छायाचित्र आकर्षक हैं तथा राजभाषा संबंधी गतिविधियां विभिन्न शहरों में राजभाषा कार्यान्वयन से

अवगत कराती हैं पत्रिका में रोचक व ज्ञानवर्धक सामग्री जुटाने के लिए संपाकद मंडल बधाई का पात्र हैं।

–बाई॰ नागेश्वरराव,
विजया बैंक, बैंगलूर–560 001

राजभाषा भारती पत्रिका के 142वां प्राप्त हुआ। तद्हेतु धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं अति रोचक, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। संपादन और कलेवर की दृष्टि से पत्रिका सुरूचिपूर्ण एवं सुंदर बन गई है। प्रदीप कुमार का लेख देश–विदेश में हिंदी का भविष्य, मेजर गौरव का लेख इंटरनेट और हिंदी तथा डॉ॰ वासुदेच शेष का लेख हिंदी अनुवाद की दशा और दिशा विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

–बी॰ बशुमदादी,
मैदामगांव, गुवाहाटी–422 002

राजभाषा भारती पत्रिका के 142वां प्राप्त हुआ। पत्रिका में प्रकाशित लेख रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक हैं। गृह पत्रिका न केवल कार्यालय की गतिविधियों को सबके सम्मुख लाती हैं, बल्कि हमारे कर्मियों के भीतर छिपी प्रतिभाओं को भी मुख करती है। इस तथ्य के मद्देनजर पत्रिका खरी उतरती है। एक उत्कृष्ट अंक के सफल प्रकाशन हेतु बधाई स्वीकार करें।

–एम॰सी॰ तिवारी,
संचार भवन, नाशिक–422 002

राजभाषा भारती पत्रिका के 142वें की प्रति प्राप्त हुई। इसक अंक को भी पूर्व अंकों के समान एक बैठक में अद्योपांत मेरे द्वारा पढ़ा गया और बहुत ज्ञानवर्द्धक हुआ। गागर में सागर की चरितार्थ करते राजभाषा भारती के सभी अंक भारत के शिखर पर विविध भारतीय भाषाओं रूप में विराजित गंगोत्री से पावन गंगा को हिंदुस्तान के जनमन में लहराकर यह पत्रिका नि:संदेह राजभाषा को गौरवान्वित कर ज्ञान का प्रकाश फैला रही है।

–ओम प्रकाश वर्मा,
नर्मदा नियंत्र्ा प्राधिकरण, विजय नगर, इन्दौर–452010

राजभाषा भारती पत्रिका 142वां अंक प्राप्त हुआ। उपयोगी तथा ज्ञानवर्द्धक पत्रिका के संपादन व प्रकाशन के लिए आपको हार्दिक बधाई। देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार–प्रसार से हिंदी भाषा को और अधिक बल मिलेगा। राजभाषा के नाम को सार्थक करती इस पत्रिका के संपादक, सहायक संपादक एवं प्रकाशन से जुड़ी हुई पूरी टीम अभिनन्दन व साधुवाद की पात्र हैं।

–प्रभु प्रसाद,
कोलकाता–700097

राजभाषा भारती पत्रिका 142वें अंक का अवलोकन कर सुखद अनुभूति हुई। लेखों का चयन उपयुक्त व सामयिक है, जो पत्रिका के स्तर को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। बैक कवर पर पूर्व प्रधानमंत्री की कविता निस्संदेह प्ररणादायक है।

–बी॰डी॰सिंह,
वायुसेना मुख्यालय, आर के पुरम, नई दिल्ली

हमेशा की तरह राजभाषा भारती से देश भर में राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े कार्यक्रम एवं अन्य घटनाओं का अद्यतन समाचार प्राप्त हुआ। इस अंक के सारे लेख अच्छे रहे और अंतिम पन्ने पर श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की कविता अच्छा रहा। आगे भी और ऐसी कृतियां छापते रहें।

–वि॰ तिलक,
भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलूर–12

राजभाषा भारती की 142वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। यह पत्रिका राजभाषा के बहुतआयामी विकास से जुड़े मुद्दों पर जरूरी दिशा–निर्देश प्रदान करती है। आपके मेलिंग सूची में हमारी उपस्थिति नई है ओर इसके लिए हम आभार प्रकट करते हैं। राजभाषा भारती का ये अंक बेहद प्रेरणादायी है।

–पंक के पी श्रेयस्कर,
आचार्य जे सी बोस रोड, रोज विला, गिरिडीह

❑

\\192.168.3.1\E\2533HA-5

'हिंदी दिवस समारोह 2015' में माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह अपना मार्गदर्शन देते हुए।

'हिंदी दिवस समारोह 2015' में माननीय गृह राज्य मंत्री श्री किरेन रीजीजू अपना भाषण देते हुए।

आई एस एम एन 0970-9398

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH
गृह मंत्री, भारत
HOME MINISTER, INDIA

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियों।

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सब को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भाषा किसी भी देश के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं दार्शनिक पहलुओं को जानने समझने का सशक्त एवं प्रभावी माध्यम होती है। कोई भी देश अपनी भाषा के बिना सामाजिक, पारंपरिक एवं साहित्यिक धरोहर को सहेज कर नहीं रख सकता। भाषा देश की सभ्यता एवं संस्कृति की संवाहक होती है। यह निर्विवाद सत्य है कि हमारे देश में जिस दिन शत-प्रतिशत सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में होने लगेगा उसी दिन हमारी ''विविधता में एकता'' स्थापित होने का कार्य स्वत: ही सिद्ध हो जाएगा।

भारत में हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय जनमानस की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य है। हिंदी ने अपनी मौलिकता, सरलता एवं सुबोधता के बल पर ही भारतीय संस्कृति और साहित्य को जीवंत बनाए रखा है। हिंदी ने ही संपूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की भावना को आम जनता में निरंतर जागृत बनाए रखा है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि यह भाषा पूर्णत: वैज्ञानिक है तथा इसकी अपनी मानक शब्दावली, व्याकरण और शैली है। राजभाषा हिंदी में समरसता है और इसका शब्दकोश व्यापक एवं समृद्ध है।

जो देश आर्थिक रूप से समृद्ध होते हैं उनकी भाषा के पंख भी बड़े तेज होते हैं और आने वाले दिनों में हिंदी और भारतीय भाषाओं के साथ भी ऐसा होगा। भाषा का आर्थिक स्थिति से सीधा संबंध होता है। दुनिया के सभी लोग उस भाषा को सीखना चाहते हैं जिससे उनको व्यवसाय करने में आसानी होती है। जो देश अपनी भाषा को अपनाता है वह अपने देश को तो महान एवं शक्तिशाली बनाता ही है, साथ ही उस देश के जनमानस को अपनी भाषा के ज्ञान के सागर में डुबकी लगाने का आनंद और अवसर भी मिलता है।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति केवल अपनी भाषा में ही संभव है। अपनी भाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्र प्रेम को भी मज़बूत बनाता है। अपनी भाषा में मौलिक लेखन से अभिव्यक्ति सरल, सहज और स्वाभविक होती है और ऐसा अनुवादित भाषा के माध्यम से संभव नहीं है। राजभाषा हिंदी, सरकार और जनता के बीच महत्वपूर्ण कड़ी है।

उपर्युक्त सभी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को 'हिंदी' को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। परिणामस्वरूप 26 जनवरी, 1950 में लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार यह प्रावधान किया गया है कि संघ सरकार की राजभाषा 'हिंदी' एवं लिपि 'देवनागरी' होगी। संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ सरकार को यह दायित्व सौंपा गया कि वह भारत की सामासिक, सांस्कृतिक तत्वों तथा अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए हिंदी का प्रचार-प्रसार एवं अभिवृद्धि सुनिश्चित करे।

हम सभी के लिए यह हर्ष का विषय है कि केंद्र सरकार के कार्मिकों को अधिक से अधिक कामकाज हिंदी में करने और दक्ष बनाने हेतु भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी शिक्षण योजना एवं केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के अंतर्गत अभ्यास आधारित एवं दैनिक उपयोग के लिए जुलाई, 2015 से एक नया प्रशिक्षण पाठ्यक्रम 'पारंगत' प्रारंभ किया गया है। इस पाठ्यक्रम में सरकारी पत्राचार के विभिन्न रूपों को हिंदी में सहज रूप में तैयार करने के लिए नमूनों के माध्यम से समझाने की व्यवस्था की गई है।

आज के वैश्विक एवं उदारीकृत अर्थव्यवस्था के युग में नई पीढ़ी को अपनी भाषा के साथ जोड़ने के प्रयोजन से यह आवश्यक है कि राजभाषा हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में पर्याप्त साहित्य और वैज्ञानिक तथा रोजमर्रा के जीवन से जुड़ी हुई जानकारी इंटरनेट पर उपलब्ध हो। आज की नई पीढ़ी हर तरह की सूचना एवं जानकारी इंटरनेट से ही खोजती है। दूसरी भाषाओं की अपेक्षा इंटरनेट पर हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में सूचना व साहित्यिक सामग्री बहुत कम मात्रा में उपलब्ध है। इसलिए वर्तमान में यह नितांत आवश्यक हो गया है कि भारत सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/संस्थानों एवं निजी संस्थाओं व व्यक्तियों के द्वारा अधिक से अधिक लाभदायक, सूचनापरक एवं ज्ञान से परिपूर्ण जानकारी हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में इंटरनेट पर उपलब्ध करवाई जाए ताकि राजभाषा हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार हो सके।

मैं केंद्र सरकार के कार्यालयों के प्रमुखों से अपील करता हूं कि वे राजभाषा नीति से संबंधित प्रावधानों का कार्यान्वयन सुनिश्चित कराने की जिम्मेदारी का निर्वहन करें। आइए, हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के अपने संवैधानिक और नैतिक दायित्व को निभाने का संकल्प लें। मैं पुन: हिंदी दिवस के अवसर पर आपको इस दिशा में सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

जय हिंद।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2015

(राजनाथ सिंह)

भारत सरकार, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), एन डी सी सी-II भवन नई दिल्ली-110003 के लिए डॉ. धनेश द्विवेदी उप संपादक द्वारा प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, नासिक, महाराष्ट्र द्वारा मुद्रित।